जगत् गुरु रविदास महाराज जी
की
पावन जीवन कथाएँ

लेखक : संत सुरिन्दर दास बावा जी

प्रकाशक : रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर, जालन्धर

सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा।

ऐसा चाहूं राज मैं जहाँ मिलै सबन को अन्न।
छोट बड़े सभ सम बसै रविदास रहे प्रसन्न।।

जगतगुरू रविदास महाराज जी की

पावन जीवन कथाएँ

निशान साहिब

रविदासीया धर्म

प्रकाशक

रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर, जालन्धर

जगतगुरू रविदास महाराज जी की

पावन जीवन कथाएँ

© सभी अधिकार प्रकाशाधीन हैं।

टीकाकार:

संत सुरिन्दर दास बावा जी

चेयरमैन : रविदासीया धर्म प्रचारक संत समाज सोसाइटी (रजि.)

चेयरमैन : अंतराष्ट्रीय जगतगुरू रविदास साहित्य संस्था (रजि.)

पहली बार 2019 : 5000

मूल्य ₹ 50/-

प्रकाशक

रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर, जालन्धर

TRADE MARKS REGISTRY

REGISTRATION CERTIFICATE

Trade Marks Act 1994 of Great Britain and Northern Ireland

The mark shown below has been registered under No. 2318217 as of the date 09 December 2002.

The mark has been registered in respect of:

Class 35:
Advertising services, provided via the Internet, television and radio; business management, and office functions; public relations services.

Class 41:
Providing educational training, entertainment and cultural activities.

Class 42:
Providing industrial analysis and research services; design and development of computer hardware and software, which includes installation, maintenance and repair of computer software and design, drawing commissioned writing for the compilation of web sites; creating, maintaining and hosting web sites services.

In the name of Sri Guru Ravidass International Organisation for Human Rights

The mark on this certificate was filed in colour and is reproduced here in colour. It has been scanned as accurately as our equipment allows but you should refer to the application form, which is available for public inspection, and any colour standard provided by the applicant to determine the exact colour(s).

Signed this day at my direction

ALISON BRIMELOW, REGISTRAR
DATE 14 November 2003

सतिगुरु रविदास महाराज जी के जीवन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य

प्रकाश दिवस :

माघ सुदी पंद्रास **1433** विक्रमी सम्वत् सन् **1377** ई०

जन्म स्थान :
ग्राम: सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू० पी०)

माता-पिता जी का नाम :
पिता जी- पूजनीय संतोख दास जी,
माता जी- पूजनीय कलसी देवी जी

दादा-दादी जी का नाम :
दादा जी- पूजनीय कालू राम जी,
दादी जी- पूजनीय लखपती जी।

सुपत्नी एवं सपुत्र का नाम :
सुपत्नी पूजनीय लोना देवी जी,
सपुत्र पूजनीय विजय दास जी।

ब्रह्मलीन :
आषाढ़ की संक्रांति **1584** विक्रमी सम्वत्
(**1528** ई०) बाराणसी में।

रविदासीया धर्म के नियम

(1) हमारा रहबर : सतिगुरु रविदास महाराज जी

(2) हमारा धर्म : रविदासीया

(3) हमारी धार्मिक पुस्तक : अमृतवाणी सतिगुरु रविदास महाराज जी

(4) हमारा कौमी निशान साहिब :

(5) हमारा सम्बोधन : जै गुरुदेव

(6) हमारा महान् तीर्थस्थान : श्री गुरु रविदास जन्म अस्थान मन्दिर सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू. पी.)

(7) हमारा उद्देश्य : सतगुरु रविदास जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार। इसके साथ-साथ महाऋषि भगवान वाल्मीकि जी, सतगुरु नामदेव जी, सतगुरु कबीर जी, सतगुरु त्रिलोचन जी, सतगुरु सैन जी तथा सतगुरु सधना जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार करना। सभी धर्मों का सम्मान करना, मानवता के साथ प्रेम करना तथा सदाचारी जीवन व्यतीत करना

जनगणना में अपना रविदासीया धर्म जरूर लिखवाओ जी।

समर्पण

जगतगुरू रविदास महाराज जी के 642 वें आगमन पर्व एवं रविदासीया धर्म के 10 वें स्थापना दिवस को समर्पित

दो शब्द

प्रेम पंथ की पालकी रविदास बैठियो आय।
सांचे सामी मिलन कूं आनंद कह्यो न जाय।।

धन्य धन्य जगतूगुरू रविदास जी महाराज जिन्होंने इस संसार मे सभी प्राणियों को एकता, ममता, भाईचारे, मानव-प्रेम, संतो की संगति करने तथा हरि का सिमरन करने का पावन उपदेश प्रदान किया। जहाँ जगतूगुरु रविदास जी महाराज ने सदियों से पीड़ित समाज में आकर इसे सभी बंधनों से मुक्त किया, वहीं मानव विरोधियों को भी सत्य उपदेश प्रदान किया।

''सतसंगति मिलि रहीए माधउ जैसे मधुप मखीरा"।

इस तरह सतसंगति के उपदेश के द्वारा उन्होंने विश्व भाईचारे का पावन उपदेश दिया और पूरे विश्व को बेगमपुरा वतन बनाने का संकल्प दिया ऐसे महान क्रांतिकारी, जगतूगुरू रविदास जी महाराज का आगमन माघ सुदी पंद्रास 1377 ई° (1433 वि° संवत) में सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी में पिता श्री संतोख दास जी तथा माता श्रीमती कलसी देवी जी के घर में हुआ। समाज में समानता स्थापित करने के लिए गुरू जी ने मकर संक्रांति पर अपना कंधा चीर कर चार युगों के प्रतीक चार जनेऊ दिखाए और सूत के जनेऊ को उतार दिया। बैसाखी के ऐतिहासिक पर्व के अवसर पर आप जी ने गंगा घाट पर शिला को पानी में तैराया तथा राणा संग्राम सिंह (राजा सांगा) एवं रानी झाली के दरबार मे अनेकों रूप धारण कर संगत-पंगत की प्रथा प्रारम्भ की। आप जी ने अपने जीवन का अधिकांश समय देश विदेश में उदासियां करते हुए, सभी जीवों को सत्य मार्ग पर चलने का उपदेश देते हुए व्यतीत किया। असंख्य राजा, महाराजा और सभी वर्गों के लोग आपके पावन चरणों में आकर नतमस्तक हुए। इस प्रकार मानवता का उद्धार करते हुए आषाढ़ की संक्रांति (1528) (1584 विक्रमी) को आप सणदेही बनारस में ज्योति जोति समाए। जगतूगरू रविदास जी महाराज जी को भक्ति का सिरमौर (शिरोमणि) समझते हुए सतगुरू कबीर जी फरमाते हैं।

साधन में रविदास संत है, सुपच ऋषि सो मानिया।
हिंदू तुरक दुई दीन बने है, कछु नहीं पहिचानिया।।

अर्थात् संतजनों में महान् संत सतगुरू रविदास जी हैं, जिन्हे दुनिया एक महान् संत ऋषि मानती है। तात्कालिक समय के हिन्दु व मुस्लिम दोनों ही उनके समक्ष नत्मस्तक हुए और उन्होंने श्री गुरू रविदास जी को प्रभु समझ कर जाना । जगत् गुरू रविदास जी के मानवता के प्रति उपकार को, अपनी वाणी द्वारा संत पीपा जी इस प्रकार उच्चारण करते हैं:।

जे कलि रैदास कबीर ना होते, लोक वेद अरू कलिजुग
मिलि कर भगति रसातल देते।

आर्थात् यदि सतूगरु रविदास जी और सतूगुरु कबीर जी यथा समय अवतरित न होते, तो तत्कालीन उच्च वर्ग , वेद और कल्युगी विचारधारा ने, भक्ति को पाताल में दफन कर देना था।

रविदास चमारू उसतति करे
हरि कीरति निमख इक गायि।।
पतित जाति उतमु भइया
चारि वरन पए पगि आयि।।

सत्गुरू राम दास जी फरमाते हैं कि सत्गुरू रविदास जी ने एक ओंकार परमात्मा की ऐसी भक्ति, आराधना एवं उपमा की, कि वह परमात्मा का ही रूप हो गए। नीच समझे जाने वाली जाति में जन्म लेने के बावजूद भी, उनकी भक्ति और आध्यात्मिकता के कारण, चारों वर्णों के लोग उनके चरणों में नत्मस्तक हुए। सत्गुरू अर्जुन देव महाराज जी, आप जी की उपमा करते हुए फुरमाते हैं:-

ऊच ते ऊच नामदेउ समदरसी
रविदास ठाकुर बणि आई।।

अर्थात् ऊँच से ऊँच समद्रश्ष्टि वाले सतगुरू नामदेव जी हुए हैं और सतगुरू रविदास आप इस संसार में प्रभु बनकर आए। जगत्गरू रविदास जी अपनी अमृतवाणी में उच्चारण करते हैं:

मेरी जाति कुट बांडला ढोर ढोवंता
नितहि बानारसी आस पासा।।
अब बिप्र परधानु तिहि करहि डंडउति
तेरे नाम सरणायि रविदासु दासा।।

अर्थात् मेरा जन्म उन लोगों में हुआ,जो बनारस के आस-पास, प्रतिदिन, मृत्त पशुओं को ढोते हैं। परन्तु मैंने प्रभु के नाम की शरण ली और आज बिप्रों के प्रधान लोग, मुझे दंडवत् नमस्कार करते हैं। जगत्गरू रविदास जी महाराज जी के कल्याणकारी, समाजवादी, क्रांतीकारी और अध्यात्मक उपदेशों को सुनकर राजा नागर मल्ल (हरदेव सिंह), राणा वीर बघेल सिंह, राजा सिकंदर लोधी, महाराणा संग्राम सिंह (राणा सांगा) राजा चन्द्र प्रताप, राजा अलावदी बादशाह, बिजलीखान राणा रतन सिंह, महाराणा कुंभा जी, राणा सांगा, राणी झाली, राजा बैन सिंह, राजा विजयपाल सिंह, महान् संत मीरा बाई जी, बीबी कर्मा बाई जी, राणी रूपमती, बीबी भानमती जी, महान् संत गोरख नाथ जी सहित सभी अन्य राज और सभी वर्गों के लोग उनके चरणों में झुके। मानवता के मसीहा डॉ0 भीम राव अम्बेडकर साहिब जी ने भारतीय संविधान की रचना, गुरू जी के पावन शब्द 'बेग़मपुरा सहर को नाउं के आधार पर की।

रविदास सोइ साधु भलो,जऊ रहइ सदा निरवैर।
सुखदायी समता गहहि सभनह मांगहि खैर।।

ऐसे ही महान् परोपकारी तपस्वी ब्रह्मज्ञानी सत्गरु स्वामी सरवण दास जी ने गांव बल्लां की पावन धरती पर श्वास श्वास प्रभु का सिमरन किया तथा सांसारिक जीवों को प्रभु का सिमरन करवाया। आप सदैव संगत को विद्या ग्रहण करने, माता पिता की सेवा करने, बड़ों का सम्मान करने, छोटों के साथ प्रेम करने, संतों की संगत करने तथा हरि का सिमरन करने का पावन उपदेश दिया करते थे। गांव बल्लां की ही पावन धरती पर

उन्होंने डेरा का निर्माण करवाया तथा दिनांक 2 फरवरी 1964 को इस अस्थान का नामकरण "डेरा रविदासियाँ दा" का नाम देकर रविदासियों की पहचान को आगे बढ़ाया। एक बार श्रद्धालुजनों ने सतगुरु सरवण दास महाराज जी के चरणों में प्रार्थना की कि महाराज जी रविदासिया कौम की गुलामी की जंजीरें कब टूटेंगी? तब सतगुरु सरवण दास जी ने फरमाया कि जब जगत्गुरु रविदास महाराज जी की अमृतवाणी एकत्रित होगी। अपनी दिव्य दृष्टि द्वारा इन्होंने जगत्गुरु रविदास महाराज के पावन जन्म अस्थान की खोज की तथा आषाढ़ की सक्रांति 14 जून सन् 1965 ई° में संत हरी दास जी महाराज के कर कमलों से उसका शिलान्यास रखवाया। संत गरीब दास जी महाराज की निगरानी में इस स्थान पर निर्माण कार्य करवा कर समाज को एक महान् तीर्थ स्थान प्रदान किया तथा उच्चारण किया कि इस पावन तीर्थ स्थान पर समस्त विश्व से संगत आया करेगी। 7 अप्रैल 1990 को इस मंदिर पर 7 फुट स्वर्ण कलश सुशोभित किए गया, जिसका उदघाटन बसपा सुपरीमो बाबू कांशी राम साहिब जी ने किया। संत रामानंद जी ने इस स्थान पर स्वर्ण कलश सुशोभित किए तथा स्वर्ण मंडन का कार्य आरम्भ किया।

24 मई 2009 को मानव विरोधियों ने श्री गुरू रविदास टैम्पल वियाना में हमला किया । इस हमले के कारण 25 मईं को प्रभात समय रविदासिया कौम के लिए संत रामानंद जी शहादत का जाम पीते हुए ब्रह्मलीन हो गए। इस के विरोध में रविदासियाँ कौम ने पूरे विश्व मे अपनी एकता एवं शक्ति को प्रदशित करते हुए रोष प्रकट किया। इसके पश्चात् जगत गुरू रविदास महाराज जी के 633 वे प्रकाश उत्सव के अवसर पर, श्री गुरू रविदास जन्म अस्थान मन्दिर सीरगोवर्धनपुर, वाराणसी से जगत्गुरू रविदास महाराज जी, सत्गुरू सरवण दास जी महाराज जी और संत समाज की कृपा से हजारों की संख्या में विश्व भर मे संत समाज तथा लाखों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में रविदासिया धर्म ऐलान किया गया रविदासिया कौम के 20 करोड़ से भी अधिक लोग इस नईं पहचान को पाकर हर्षित हुए। उस रात सदी के सबसे बड़े चन्द्रमा में जगत् गुरू रविदास महाराज जी ने दर्शन देकर आशीर्वाद दिया। विश्व भर मे अमृतवाणी ग्रन्थ के प्रकाश लाखो की तादाद मे हो चुका है । अमृतवाणी ग्रन्थ की व्याख्या का अनुवाद पंजाबी, हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, इटालाईन्, डच और अनेक भाषाओं मे प्रकाशित हो चुका है एवं सुखसागर गुटके अनेक भाषाओं में लाखों की संख्या में विशवभर में पहुंच चुके हैं। इस पुस्तक को तैयार करने के लिए श्री साधू राम हीर, श्रीमान श्री राम अर्श, श्री कांशी राम कलेर, डा. रमन दादरा (M.A.Ph.D.), प्रो. रीना विरदी, प्रौ. वीना विरदी, प्रो. रमा कुमारी एम.ए., मिस. अंजना, श्री राजेश कैंथ, शिलपा कैंथ एम.ए., के विशेष सहयोग के लिए आभारी हूँ। **जगतगुरू रविदास महाराज जी की पावन जीवन कथाएँ** जगतगुरू रविदास महाराज जी और सत्गुरू सरवण दास जी महाराज की कृपा से संगत की भेंट करता हुआ प्रसन्ता अनुभव कर रहा हूँ।

गुरू चरणों का दास
संत सुरिन्दर दास बावा

रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर का संक्षिप्त इतिहास

रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर गाँव काहनपुर जिला जालन्धर मे जालन्धर से पठानकोट जाने वाले राष्ट्रीय राज मार्ग पर स्थित है। इस अस्थान की उसारी यहां के सरप्रस्त एवं रविदासिया धर्म के अनमोल हीरे श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी ने करबाई जिसका शिलान्यास संत समाज और संगत की उपस्थिती में आदरनीय श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी, श्री 108 संत बीबी कृष्ना देवी जी (गद्दी नशीन) डेरा श्री 108 संत हरिदास महाराज जी बोपाराय कलां वालो ने अपने कर कमलो से 27 मार्च 2014 को रखा, जिसके लिए एक पलाट श्री एम°डी° मंगा सरपंच काहनपुर के परिवार की ओर से दिया गया। इस ओर इलाके की संगत में भारी उत्साह पाया जा रहा था। यही कारण है कि जगत्गुरू रविदास नामलेवा संगत की कारसेवा से वर्षों में होने वाला निर्माण कार्य महीनों में कर लिया। आज इस स्थान पर दूर दूर से संत महापुरुष, समाजिक और धार्मिक सभायें एवं गुरू रविदास महाराज नामलेवा संगत पहुँचती है। एक छोटे से गाँव में निर्मित बुलंदियो को छूता यह अस्थान पूरे विशव में अपनी किरणे बिखेर रहा है। संगत में अधिक प्रचार और प्रसार की ज़रूरतों को देखते हुए यूरोप की संगत की ओर से इस अस्थान के संस्थापक श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी को एक सफारी गाड़ी 01-01-15 को भेंट की गई। दो मंज़िला बढ़े हाल में जगत्गुरू रविदास महाराज जी के नाम से एक संगीत अकैडमी खोली गई है, जिसमें संगीत के धनी अध्यापक हरमोनियम और तबले के साथ संगीत के ज्ञान के बारे में विशेष शिक्षा दे रहे हैं। जिसमें करीब 50 लड़के-लड़कियां इस अकैडमी के लाभ ले रहे है जिसका सारा खर्च श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी और संगत के सहयोग द्वारा किया जा रहा है। प्रचार अस्थान पर दुखी और रोगी व्यक्तियों की मदद दवाईयों के साथ की जाती है। बेरोजगार बच्चों को अलग-अलग कोर्स और कार्यमुखी व्यवसायक सम्बन्धित कोर्सों से जोड़ा जाता है।

गाँव काहनपुर में बाबा पिप्पल दास जी महाराज बालक संत सरवण दास जी को साथ लेकर सबसे पहले आए। जब कुटिया बनाने के लिए नींव खोदनी आरम्भ की वहा से ड़मोही निकली महाराज जी ने कहा किसी का घर उजाड़कर अपना घर कैसे बना सकते है यह बोल कर अगले गाँव चल पढ़े और वचन किए फिर आएगे और अपना अस्थान बनाएगें श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी पिता श्री गुरदास राम जी बीबी गुरवचन कौर सत्गुरू सरवण दास जी महाराज के श्रद्धालू थे। इनके गृह पर सतिगुरू जी कई राते रूके। एक समय 1972 ई. में बीबी गुरवचन कौर बिमार हो गई। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। सत्गुरू जी आप

संगत सहित सिवल हस्पताल जालन्धर जा के बीबी गुरवचन कौर की जान बचाई और वर दिया के इस पुत्र के लिए नहीं रोना। तुम्हारे दो पुत्र और होगे। बीबी जी ने उस समय ही बड़े पुत्र को सतिगुरू सरवण दास जी के चरणों में भेंट किया।

सेवा भावना की गुड़ती आप जी को अपने माता पिता जी से ही प्राप्त हुई थी। आप जी के आदरयोग्य माता पिता सतिगुरू सरवण दास जी महाराज जी के श्रद्धालु थे और सतिगुरू सरवण दास जी का पूरा आर्शीवाद आप जी के पिता श्री गुरदास राम जी को प्राप्त था, जिसकी मिसाल आप जहाँ दी गई है कि जिस वक्त स्वामी सरवण दास जी 11 जून 1972 को ब्रहम्लीन हो गए, अंतिम संस्कार करने की तैयारी मकुम्मल थी। चिता में देसी घी, चंदन की लक्ड़ी, धूप सामग्री आदि पाया जा रहा था। अग्न-भेंट करने के लिए अरदास हो चुकी थी। वहां पर मौजूद व्यक्तियों के मुताबिक ब्रहम्लीन स्वामी सरवण दास जी महाराज के पाँच तत्व शरीर मे से खून की धारायें निकली जो श्री गुरदास राम जी के शरीर पर गिरी। यह एक विचार योग्य बात है कि यह बूंदे श्री गुरदास राम जी के ऊपर ही क्यों गिरी? फिर सतूगुरू सरवण दास जी महाराज के ब्रहमलीन होने के पूरे 9 माह बाद 14 मार्च 1973 श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी का जन्म एक आध्यात्मिक सवाल खड़ा कर देता है। पाँच वर्ष की आयु में श्री 108 संत हरिदास जी महाराज बावा जी को भगवां भेष पहना कर सुच्ची गाँव से डेरा बल्लां ले आए और श्री 108 संत गरीब दास जी महाराज जी ने उच्च शिक्षा दिलवाई।

श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी के द्वारा जगतूगुरू रविदास जी महाराज और सतिगुरू सरवण दास जी महाराज की और संत समाज की कृपा से 30 जनवरी 2010 ई. को रविदासिया कौम को रविदासियां धर्म का ऐलान कर अलग पहचान प्रदान की ।

रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान पर एक लाइब्रेरी 'सतिगुरू सरवण दास जी महाराज' की याद में बनायी गई है ,जिसमें हज़ारों की गिनती में पुस्तकें हैं, जिसमें 'दलित इतिहास' और दलित सम्बन्दी लिखारियों की पुस्तकें रखी गई हैं। महान् गुरू, देशभक्तों, योद्धाओं एवं साहित्कारों से सम्बन्धित साहित्य इस लाइब्रेरी में मौजूद है यहां ही बस नही डॉ° अंबेडकर और अलग-अलग लाइब्रेरीयों द्वारा लिखारीयों को मुफत किताबें बांटी जाती हैं और आने वाले समय में एक मैगज़ीन भी प्रारंभ की जा रही है, जो प्रक्रिया अधीन है। जगतृगुरू रविदास जी महाराज और सतूगुरू सरवण दास जी महाराज जी के मिशन का निरंतर प्रचार होता है।

बावा जी ने 2010, 2011, 2012, 2013 में कई बार यूरोप, आस्टरीया, गरीस, ईटली, फरास, नोरवे, जर्मन, होलैड, सपेन, अमेरीका, कनेड़ा, यू.ए.ई. और यू.के., में प्रचार किया 2014 में ईटली और आस्टरीया 2015 में गरीस,

ईटली, पुरतकाल, आस्टरीया और यू.के., 2016 में अमरीका, कनेड़ा, गरीस, ईटली और आस्टरीया, यू.के, यू.ए.ई. 2017 में आस्टरीया, यू.के., गरीस, ईटली, अमेरीका, कैनेडा और यू.ए.ई मे 2018 में फरास, यू.के., ईटली, गरीस, नोरवे, आस्टरीया, कनेडा, अमेरीका और यू.ए.ई रविदासियां धर्म का प्रचार किया। संत सुरिन्दर दास बावा जी ने 2010 में श्री गुरू रविदास सभा बैरगामो ईटली, 2011 में श्री गुरू रविदास सभा करोपी ऐथन गरीस में, 2012 श्री गुरू रविदास सभा बलैन्सीया, 2012 श्री गुरू रविदास सभा वियाना आस्टरीया, सपेन 2012 श्री गुरू रविदास सभा रोम 2014 गाँव मदारा जिला जालन्धर (पंजाब), 11 सितंबर 2015 श्री गुरु रविदास सुखसागर दरबार मनीदी गरीस, 30 दिसंबर 2015 गाँव अलावलपुर, 11 सितंबर 2016 साउथ हाल लंदन में 21 मई 2017 श्री गुरु रविदास भवन वारी इटली में 28 मई 2017 श्री गुरु रविदास दरबार करोपी, ऐथनस, गरीस, 20 अगस्त 2017 ई0 टोरोंटो कैनेडा में 30 सितम्बर 2017, सुच्ची गांव में 2 सितम्बर 2018 टिंपटन यू.के. में रविदासिया कौम की ओर से गोल्ड मैडलों से सम्मानित किया गया।

भारतीय दलित साहित्य अकैडमी दिल्ली की ओर से 2006 में संत सुरिन्दर दास बावा जी को श्री गुरु रविदास नैशनल अवार्ड के साथ सम्मानित किया गया। बढ़ती हुई संगत और प्रचार प्रसार हितो को ध्यान में रखते हुए यूरोप की संगतो की और से संगत की ओर से पास में कई पलांट इस स्थान को खरीद कर दे दिये। आज यह प्रचार अस्थान एक प्रकाश की किरण बनकर संगतो में उभर रहा है। इस पावन स्थान पर श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी ने स्थाई तौर पर निवास स्थान बनाया हुआ है। यहाँ आप स्वयं नाम जपते, अमृतवाणी पढ़ते सुनते और संगत को ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं। इस पावन स्थान पर रविदासीया धर्म के नियम मुताबिक ही अपने आपको ढालकर चलना पढ़ता है।

इस प्रचार अस्थान पर 'अमृतवाणीं भवन उसारा गया है, जिसमें अमृतवाणी सत्गुरू रविदास महाराज की सशोभित है जिस के सुबह शाम जाप और सत्संग होते है। हर रविवार और स्रंक्रांति पर विशेष दीवान सजाए जाते है। यहाँ पर लोगों की मनोकामनाएं पूरी होती है।

इस पावन अस्थान पर लोगों की अगाध श्रद्धा है। प्रतिदिन सुबह से शाम संगत र्दशनों के लिए आती है। इस दरबार मे लोगों को नाम बाणी के साथ साथ समाजिक कुरीतियों जैसे नशे, दहेज, समागमों में अधिक खर्च, भ्रूणहत्या, निंदिया - चुगली से मुक्त होने के लिए, बच्चों को उच्च शिक्षा, बजुर्गों का आदर करने के लिए विशेष प्रचार किया जाता है। यह प्रचार अस्थान सभी के लिए खुला है। प्रत्येक धनी एवं गरीब के लिए समान है और सभी के आदर हित बनाया गया है।

जहाँ पर कोई भी ऊँच-नीच नहीं है। इस प्रचार अस्थान पर मानवता की भलाई, जगत्गुरू रविदास महाराज जी के बेगमपुरा का संकल्प और डा0 भीम राव अंबेडकर जी के पढ़ो, जुढ़ो, संघर्ष करो के विचार का प्रचार होता है।

इस अस्थान पर 24 जुलाई 2016 दिन रविवार को संत सुरिंदर दास वावा जी, संत सत्यपाल जी चंढीगड़, संत बीबी कृष्णा देवी जी बोपारायकलां, संत हरविंदर दास आदमपुर और संत समाज की उपस्थिति में जगतगुरू रविदास महाराज जी की प्रतिमा 'अमृतवाणी भवन' में स्थापित की गई। इस अवसर पर श्री साधुराम हीर जी (रिटायर चीफ इंजीनियर, नारथ जोन दूरदर्शन) की रविदासिया कौम की बहुमुल्य सेवाओं के लिए गोल्ड मेडल से सम्मान्ति किया गया। इस अस्थान पर रहने और लंगर आदि की सुविधा भी है।

इस प्रचार स्थान पर सत्गुरू सरवण दास जी महाराज का संकल्प साकार होता नजर आ रहा है, जिसके बारे में महाराज जी सोचा करते थे कि जगत्गुरू रविदास जी महाराज का घर घर प्रचार हो। इस महान् कार्य के लिए श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी दिन रात एक करते हु प्रयतनशील है। सत्गुरू इन पर अपनी कृपा दृष्टि बनाई रखे जो कि कौम के कार्यों के लिए डटे रहे।

कांशी राम कलेर
जंडू सिंघा (जालन्धर)

विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	जगत् गुरु रविदास जी महाराज की जय।।	1
2.	जगत् गुरु रविदास जी महाराज का आगमन्	2
3.	जगत् गुरु रविदास महाराज जी का बालपन	4
4.	जगत् गुरु रविदास जी का पारिवारिक जीवन	6
5.	गुरमुखी अक्षरों की रचना करना	8
6.	पीरां दित्ता मरासी की ईर्ष्या	15
7.	बैसाखी के ऐतिहासिक पर्व पर ठाकुर तारने की कथा	16
8.	जगत् गुरु रविदास जी महाराज को पारस भेंट करना	21
9.	प्रभु का संगत की सेवा के लिए मोहरों का वरदान	25
10.	एक धनवान सेठ द्वारा अमृत का तिरस्कार करना	26
11.	एक हिरणी की रक्षा	27
12.	एक शेख द्वारा प्रेम की याचना करना	29
13.	मृत बालक को जीवन दान देना	30
14.	सतिगुरु रविदास महाराज जी और सतिगुरु कबीर महाराज जी की गोष्टी	31
15.	कमाली को ज्ञान की प्राप्ति	32
16.	जगत् गुरु रविदास महाराज जी की शर्ण में कमाली का जाना	33
17.	जगत् गुरु रविदास महाराज जी का जूनागढ़ में....	35
18.	जगत् गुरु रविदास महाराज जी की पंजाब यात्रा	37
19.	सतिगुरु रविदास महाराज जी की संत नरसिंह महिता पर कृपा	39
20.	परमानंद बैरागी को उपदेश	42
21.	रूपवती का प्रसंग	43
22.	कुंभ के शुभ अवसर पर गुरु जी का गंगा जी के लिए भेंट भेजना	45
23.	रानी झाली की कथा	48
24.	जगत् गुरु रविदास जी महाराज और उनकी शिष्य मीरा बाई	52

25. जगत् गुरु रविदास जी महाराज की शिष्या कर्मा बाई 57
26. जगत् गुरु रविदास जी महाराज चरन कुण्ड 59
27. उलटी गंगा का बहना 60
28. सिकंदर लोधी की साखी 60
29. जगत् गुरु रविदास जी महाराज की उदासियां/यात्राएं 62
30. जगत् गुरु रविदास जी महाराज की हिमाचल पर्वत व सिरधार पर्वत यात्रा 69
31. राजा पीपा का जगत् गुरु रविदास जी महाराज का शिष्य बनना 70
32. मकर संक्रांति पर युगों के जनेऊ दिखाना 73
33. मृत गाय को जीवित करना 74
34. केदार पाण्डेय और उसके साथियों द्वारा 76
35. अलावदी बादशाह के साथी गोष्ठी 77
36. श्री गुरु रविदास जी की गुरु कबीर जी और गुरु नानक देव जी से ज्ञान गोष्ठियां 79
37. अयोध्या में जगत् गुरु रविदास महाराज जी 84
38. राजा चन्द्र प्रताप 85
39. बीबी भानवती का शिष्य होना 85
40. मुल्तान में बीबी धर्मो के बेटे को जीवित करना 86
41. बाजीगरों की बाजी 90
42. गोष्ठी गोरख नाथ जी 91
43. जगत् गुरु रविदास जी महाराज की सदना से भेंट 93
44. बाबर पर जगत् गुरु रविदास जी महाराज की शिक्षाओं का प्रभाव 95
45. जगत् गुरु रविदास जी महाराज का सच्च खण्ड पधारना 97
46. संत सुरिन्दर दास बावा जी की प्रकाशित पुस्तक सूची 100

* * *

जगतगुरू रविदास महाराज जी की

पावन जीवन कथाएँ

नाम तेरे की जोति लगाई भइयो उजियारो भवन सगारो

हरि

जगतगुरु रविदास जी महाराज की जय॥

जगत् गुरु रविदास जी महाराज के प्रति सूर्यकान्त त्रिपाठी जी हिन्दी अणिमा नामक ग्रन्थ में लिखते हैं :

सन्त कवि रविदास जी के प्रति
ज्ञान के आकर मुनीश्वर थे परम
धर्म के ध्वज, उनमें अन्यतम,
पूज्य अग्रज भक्त कवियों के प्रखर
कल्पना की किरण नीरज पर सुधर
पड़ी ज्यों अँगड़ाईयां ले कर खड़ी
जाति को देखा सभी ने मींच कर
दृग तुम्हें, श्रद्धा सलिल से सींच कर।
रानियां अवरोध की घेरी हुई।
वाणियां ज्यों बनी जब चेरी हुई।
छुआ, पारस भी नहीं तुमने रहे
कर्म के अभ्यास में अविरत वहे।
ज्ञान गंगा में, समुज्जवल चर्मकार,
चरण छू कर रहा मैं नमस्कार। (1942)

संत पलटूदास जी जगत् गुरु रविदास जी महाराज के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जगत् गुरु रविदास जी ने जहाँ कहीं भी प्रभु को बुलाया उन के प्रेम भाव को देख कर भगवान उस स्थान पर ही प्रकट हो गये। इस पद में जगत् गुरु रविदास जी महाराज के चरित्र का वर्णन किया गया है। आप लिखते हैं :

नहाते त्रिकाल रोज पंडित अचारी बड़े
सदा पट वस्त्र खूब अंगन लगाई है।
पूजा नैवेद आरती करते हम बिधि बिधान
चंदन औ तुलसी भली भांति से चढ़ाई है
हारे हम कुलीन सब कोटि कोटि कै उपाय
कैसे तुम ठाकुर हम अपने हूँ न पाई है।
पलटू दास देखो रीझ मेरे, साहिब की
गयै है वहां जब रविदास जी बुलाई है।

जगत् गुरु रविदास जी महाराज का आगमन्

जब जब इस संसार में मानवता पर ज़ुल्म और अत्याचार होता है तब तब प्रभु स्वंय प्रकट होकर भूली-भटकी मानवता का मार्ग दर्शन करते हैं। इतिहास साक्षी है कि समय-समय पर प्रभु ने स्वंय प्रकट हो कर मानवता का कल्याण किया है। भारत के मध्यकालीन युग में सतिगुरु नामदेव जी महाराज, सतिगुरु कबीर जी महाराज, सतिगुरु सैण जी महाराज, सतिगुरु रविदास जी महाराज, सतिगुरु नानक देव जी महाराज और अनेक महापुरुषों ने संसार में आकर मानवता को भेद-भाव से मुक्त कर प्रभु भक्ति से जुड़ने का पवित्र उपदेश दिया।

भारत के इतिहास में तेरहवीं, चौदहवीं सदी का ऐसा भयानक समय था जब भारत के लोग विदेशी राजाओं के अत्याचारों से दुखी थे और भारतीय समाज भी जाति-भेद के आधार पर बँटा हुआ था। उस समय भारत में मुख्य रूप से दो धर्म थे-इस्लाम और हिन्दू धर्म। ऐसी स्थिति में भारत के मूलनिवासी समाज के मानवीय अधिकारों से वंचित थे। उनको शिक्षा प्रात करने, अच्छे कपड़े पहनने और अच्छे ढंग से जीवन व्यतीत करने का अधिकार नहीं था, यहां तक कि उनकी छाया को भी बुरा माना जाता था। दुखी मानवता की पुकार सुनकर जगत् गुरु रविदास जी महाराज के रूप में मानवता को सच का उपदेश देने के लिए प्रभु ने इस धरती पर अवतार धारण किया। सतिगुरु रविदास जी महाराज के आगमन् के सम्बन्ध में यह दोहा प्रसिद्ध है :

चौदह सौ तैतीस की माघ सुदी पन्दरास।
दुखियों के कल्याण हित प्रकटे श्री रविदास॥ (संत कर्म दास जी)

जगत् गुरु रविदास जी ने भारत के प्रसिद्ध शहर बनारस के नज़दीक माघ सुदी 15 पूणिमा संवत् 1433 (1377 ई.) पिता संतोख के घर और माता कलसी देवी जी की पावन कोख से गाँव सीर गोबर्धनपुर में दुखिओं का कल्याण करने के लिए आगमन हुआ। आपके दादा का नाम श्री मान कालू राम जस्सल था और दादी का नाम श्रीमती लखपती था। गुरु जी का आगमन होना दुनिया के इतिहास में एक आलौकिक कौतुक था, जिसका उद्देश्य जहाँ सदियों से जाति-भेद का शिकार हुई मानवता को मुक्ति प्रदान करना था, वहीं मानवता के विरोधियों को मानवता का पाठ पढ़ा कर समस्त दुनिया को एकता, समानता, आपसी मेल-जोल और प्रभु के नाम का पवित्र उपदेश देना

था। आप जी ने जब आगमन हुआ तो उस समय अदभुत प्रकाश हुआ जिसके साथ सारे ब्रह्मण्ड में रोशनी ही रोशनी फैल गई। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों और तपस्वियों ने इस रोशनी को देख कर शीश झुकाया और अपने मन को सान्तवना देते हुए कहा कि यह पको देख कर शीश झुकाया और अपने मन को सान्तवना देते हुए कहा कि यह परोपकारी, दीन-दयालु प्रभु के जीवों को जुल्म की आग से बचाने के लिए प्रकट हुए हैं।

जगत् गुरु रविदास जी के जन्म समय ऐसा प्रकाश हुआ कि दाई जिसकी आँखों की रोशनी कम थी, ठीक हो गई। उस दाई ने गुरु जी की माता और पिता जी को बधाई देते हुए कहा कि उसके हाथों में अनेक बच्च ों ने जन्म लिया परन्तु आज तक ऐसा बालक नहीं देखा। इस बच्चे के सभी अंग नूर से भरपूर है। यह बालक आप के नाम को दुनिया में रोशन करेगा। आपका आगमन रविवार को हुआ इस लिए बालक का नाम रविदास रखा गया। आप जी ने ज्ञान के प्रकाश से भेद-भाव रूपी अंधकार का नाश किया। आप जी पारिवारिक कार्यों में निपुण थे। आप की अर्धांगिनी का नाम आदर्नीय लोना था जो पति की सेवा करने के साथ साथ प्रभु के नाम सिमरन में जुड़ी रहती थीं। आप के सपुत्र का नाम विजय दास था।

लगभग छः सदियों के व्यतीत होने के बाद डेरा संत सरवण दास जी सच्च खण्ड बल्लां के महापुरुषों ब्रह्मलीन श्री 108 संत सरवण दास जी, ब्रह्मलीन श्री 108 संत हरी दास जी और ब्रह्मलीन श्री 108 संत गरीब दास जी को महान् पुरुषार्थ कर गुरु रविदास जी के जन्म स्थान की खोज कर श्री गुरु रविदास जन्म स्थान पर मन्दिर का निर्माण किरने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह मन्दिर पूरी दुनिया के श्रद्धालुओं के लिए महान् तीर्थ स्थान है। इस महान् स्थान के पास वह इमली का पेड़ भी सुशोभित है, जिसके नीचे बैठकर जगत् गुरु रविदास जी लोगों को सत्य का उपदेश देते थे। श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मन्दिर का नींव पत्थर रखा तो यह इमली का पेड़ सूखा हुआ था। जब ब्रह्मलीन श्री 108 संत ने अपने कर-कमलों द्वारा इस पेड़ को पानी देना शुरु किया तो इमली का यह पेड़ फिर से हरा होना शुरु हो गया, जो आज भी इस महान् स्थान के पास सुशोभित है। यहां संगत् आदरपूर्ण नतमस्तक होती है। संसार के कोने कोने से लोग इस महान् स्थान पर आकर श्रद्धा के फूल भेंट करते हैं और अपना जीवन सफल करते हैं।

***

जगत् गुरु रविदास महाराज जी का बालपन

एक बार जगत् गुरु रविदास जी महाराज की भूआ, जब आप से मिलने के लिए आई तो वे आप जी के लिए एक सुन्दर चमड़े का खरगोश ले आई। उस खिलौने को पकड़कर, चारपाई पर बैठकर, गुरु जी खेल रहे थे। खेलते-खेलते अपने चरण कमलों से, वे उस खरगोश को दूर धकेलने लगे, जैसे उसे दौड़ने का संकेत दे रहे हों। इस दृश्य को देखकर, आप जी को मिलने के लिए रिश्तेदार एवं घरवाले देखकर बहुत प्रसन्न हो रहे थे। जब आप जी ने तीसरी बार पुनः उस चमड़े के बेजान खरगोश को, अपने चरणों से दूर धकेला, तो वह जीवंत हो उठा और वह सचमुच का खरगोश बनकर आगे की ओर भागा। गुरु जी यह दृश्य देखकर बहुत प्रसन्न हुए, परन्तु उनके घरवाले इस दृश्य को देखकर अत्यंत आश्चर्यचक्ति हुए। फिर वह खरोगश उछल-कूद करते हुए गुरू जी के समीप ही बैठ गया। गुरु जी उस खरगोश को देखकर बहुत प्रसन्न हो रहे थे। उन्होंने पुनः उसे अपने चरण कमलों से धकेला, परन्तु फिर वह खरगोश घरवालों के समीप से उछल कूद करते हुए, बाहर की ओर दौड गया। इसी बीच जब आपके फूफा जी बाहर से आए, तो वे सारा वृत्तांत सुनकर आश्चर्यचकित रह गए। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था क्योंकि उन्होंने स्वयं, अपने हाथों से गुरु जी के लिए, वह चमड़े का खिलौना बनाया था। तत्पश्चात् सारे परिवार ने गुरु जी के कोमल चरण कमलों को चूमा तथा उन्हें प्रतीत हुआ कि हम गरीबों में भी गुरु जी ऐसे ही जान डालेंगे। इस घटना को कवि मंगू राम सरोया बाहड़वाल ने इस प्रकार अंकित किया है

उमर गुरां दी होई इक साल दी,
शक्ति बेअंत जो है अलाही।
भूआ आप जी दी जो मिलण है आई,
चमड़े दा खलौणा सैहां लियाई है।
हत्थ विच गुरु जी खड़ौणा फड़के,
खेलदे है बैठे मंजे उते चढ़के।
चरनां ते फेरके सी परे सुट्टिया,
चम्म दा खडौणा बण सैहा नठ्ठिया। (जन्म साखी, पृष्ठ 16)

समय का चक्र घूमता रहा। जगत् गुरु रविदास जी जैसे-जैसे बड़े होते गए, उनके कोमल स्वभाव व सुन्दर व्यक्तित्व से सभी प्रभावित हुए

करमावती नाम की एक औरत, जिसकी आयु 60-65 वर्ष की थी, सीरगोवर्धनपुर में ही रहती थी। उसका गुरू जी की दादी लखपती के साथ बहुत प्रेम था। दादी लखपती प्रायः अपने प्रिय पौत्र को साथ लेकर, उसे मिलने जाया करती थी। करमावती स्वयं लखपती को मिलने के लिए नहीं आती थी क्योंकि उसकी आँखों की रोशनी गए, 30 वर्ष बीत चुके थे, परन्तु फिर भी वह सारा दिन-चरखा चलाती थी। जब दादी लखपती, करमावती के साथ गुज़रे समय की बातें करती तो गुरु जी उनके पास बैठकर सुनते तथा करमावती के साथ हंसते-खेलते। लखपती जब उससे अंधेपन में, चरखा कातने का कारण पूछती, तो करमावती रो पड़ती और अपनी निर्धनता का वृतांत व घरेलू विवश्ता खोल कर सुनाती। यह सब सुनते, तो उनका कोमल हृदय पिघल जाता।

एक दिन सुबह के समय, करमावती चरखा कात रही थी। जगत् गुरु रविदास जी अकेले ही उसके घर पहुँच गए। उन्होंने चुपचाप आकर, उसकी धागे की टोकरी उठा ली और निकट ही खड़े हो गए। बीबी करमावती ने हाथ से टटोलकर, धागे की टोकरी को देखा, परन्तु उसे वह नहीं मिली। कुछ देर बाद, गुरु रविदास जी ने, जब वह टोकरी उसी स्थान पर वापिस रख दी, जहाँ से उठायी थी, तब माता का हाथ उस टोकरी को लग गया। वह बहुत हैरान हुई क्योंकि उसने पहले भी तो वहाँ हाथ लगाकर देखा था। करमावती को, वहाँ किसी की उपस्थिति का अहसास हुआ, परन्तु वह घबरायी नहीं क्योंकि प्रायः बालक उसे सताया करते थे। फिर जब टोकरी में से धागा उठाकर वह कातने लगी, इतने में गुरू जी ने तकले में से गलोटा खींच लिया। करमावती को झटपट पता चल गया। जब गुरु जी ने चरखा खींचा तो करमावती को क्रोध आया और उसने अपने दोनों बाजू फैलाकर गुरु जी को पकड़ लिया और कहा, ''तू कौन है?'' गुरु जी ने अपने दोनों हाथ, करमावती की दोनों आखों पर रखे तथा कहा ''लो माता, तुम स्वयं देख लो, मैं कौन हूँ।'' करमावती शांत हो गई। जब करमावती ने आँखे खोलीं, तो उसे दिखाई देने

लगा। उसने गुरु रविदास जी के सुन्दर आलौकिक स्वरूप के दर्शन किए। फिर माता करमावती ने, दोनों हाथ जोड़कर, गुरु जी को प्रणाम किया और कहने लगी, ''हे महाराज! आपने मुझ पर बहुत कृपा की है। धन्य है वह माता, जिसने तुम्हें जन्म दिया है, धन्य है वह कुटुम्ब, जिसमें तुमने जन्म लिया है।'' तदोपरांत माता करमावती ने घर की प्रत्येक वस्तु की ओर देखा ओर मन ही मन अ ति प्रसन्न हुई। इतने में गुरु जी ने वहाँ से प्रस्थान किया।

माता करमावती का मन, अभी जगत् गुरु रविदास जी के, दर्शन करके नहीं भरा था, वह झटपट, गुरु जी के पीछे-पीछे, गुरु जी के घर पहुँच गई। उसने सारे परिवार को सारी कहानी बताई, तो सारे परिवार को यह चमत्कार सुनकर, अत्यंत आश्चर्य हुआ। उसने सभी को बताया कि यह सब आपके पुत्र की कृपा से हुआ है। आप सभी धन्य हो क्योंकि आपके घर परमात्मा ने जन्म लिया है। वह, सारे नगर में, गुरु जी की उपमा करने लगी।

***

जगत् गुरु रविदास जी का पारिवारिक जीवन

जगत् गुरु रविदास जी महाराज द्वारा दिए जा रहे, सत्य उपदेशों के कारण, मानव विरोधी, आप जी से ईर्ष्या करने लगे। आप जी के परिजन, इन बातों से काफ़ी चिंतित थे, परन्तु गुरु रविदास जी को, इन बातों की तनिक भी चिंता नहीं थी। गुरु जी सदैव ही, साधू संतों की संगत में, प्रसन्न रहते थे तथा अपने पिता श्री संतोख दास जी के काम-काज में, हाथ बंटाया करते थे। आप जी के पिता जी, जूते बनाने के कार्य में, बहुत व्यस्त रहते थे। पिता संतोख दास जी, गुरु जी के काम-धंधे के विषय में, बहुत चिंतित रहते थे। उनकी मनोकामना थी कि उनका पुत्र उनकी भांति ही, काम-काज करे, परन्तु गुरु जी, प्राय: साधू-संतों की संगत में, ज्ञान-ध्यान की बातें करते रहते और प्रभु का गुणगान करते। गुरु जी के ज्ञान की सुगन्धि से, सीरगोर्वधनपुर की सारी बस्ती महकने लगी। गुरु जी के पास, प्रत्येक धर्म के लोग आकर ज्ञान प्राप्त करने लगे।

किशोरावस्था में, प्रारम्भ में, गुरु जी ने पिता पुर्खी व्यवसाय किया। श्री गुरु रविदास जी बनारस जैसे कर्म-काण्डी शहर में, जब विश्व धर्म का संदेश

दे रहे थे, तब मानव विरोधियों द्वारा, भ्रमवश, उनकी जाति को निम्न समझकर, परिहास किया जाता था। मानवविरोधियों के अनुसार, गुरु जी को उपदेशक बनने की अपेक्षा, केवल अपने जाति-कर्म (जूते बनाने) पर ही, ध्यान देना चाहिए। परन्तु गुरु जी दृढ़ निश्चयी थे और उन्होंने सारी सृष्टि को सही मार्ग पर लाने का, उत्तरदायित्व ले रखा था। गुरु जी की अटल अवस्था को देखकर, जातिभिमानियों द्वारा गुरु जी को वेदों-शास्त्रों व मनुस्मृति के उद्दरण देकर, यमदूतों का भय दिया गया। गुरु जी ने मानवविरोधियों को फ़रमाया कि मैं परमात्मा के नाम का सिमरन करता हूँ, मेरा यमदूतों के साथ कोई संबंध नहीं है

चमरटा गांठि न जनयी ॥
लोग गठावै पनही ॥ रहाऊ ॥
आर नही जिह तोपऊ ॥
नहीं रांबी ठाऊ रोपऊ ॥१ ॥
लोग गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥
हऊ बिनु गांठे जायि पहूचा ॥२ ॥
रविदास जपै राम नामा ॥
मोहि जम सिऊ नाही कामा ॥३ ॥

गुरु जी की इच्छा थी कि वे धर्म के प्रसार व प्रचार को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाएं ताकि मनुष्य का जीवन स्तर ऊँचा हो सके। वास्तव में, गुरु जी वह सब कर रहे थे, जो विश्व के इतिहास में कोई अन्य करने में असमर्थ था।

जगत् गुरु रविदास जी महाराज की बढ़ रही ख्याति को देखकर, मानव-विरोधी अति क्रोधित हुए क्योंकि एक शूद्र द्वारा उपदेश देना तथा लोगों को प्रभु-प्रेम का मार्ग समझाना उन्हें अच्छा नहीं लगा। मानवविरोधी गुरु जी को राज-दरबार में बुलाकर राजा द्वारा गुरु जी को दण्डित करवाए जाने की, साजिशें करने लगे। इन बातों का, जब पिता संतोख दास जी को पता चला तो उन्होंने गुरु जी को, विवाह-बंधन में, बांधने का निर्णय लिया। उन्होंने सोचा कि यदि गुरु जी का विवाह कर दिया जाए तो शायद वे प्रभु-भक्ति का मार्ग त्यागकर, गृहस्थ जीवन की ओर रुचित हो जाएंगे।

विचार-विमर्श के बाद, पिता संतोख दास जी ने यह फैसला कर लिया कि गुरु रविदास जी का विवाह कर दिया जाए, ताकि उनका मन तथा ध्यान घर-गृहस्थी की ओर लग जाए। कुछ समय बाद, गुरु रविदास जी की सगाई, मिर्ज़ापुर में एक अच्छे परिवार की लड़की, लोना जी के साथ कर दी गई और शीघ्र ही उनके विवाह की तैयारियां होने लगीं। लोना जी भी बहुत ही धार्मिक विचारों वाली स्त्री थी। विवाह उपरांत, उसने ससुराल जाकर, घर का सारा काम-काज संभाल लिया। उसका चेहरा सदैव फूल की भांति, खिला रहता था। पुत्री समान बहु पाकर, पिता संतोख दास जी मन ही मन बहुत प्रसन्न रहते थे और परमात्मा को अति आभार प्रकट करते रहते थे। उन्हें अपना घर और भी अच्छा लगने लगा था।

श्रीमती लोना जी को जल्द ही अनुमान हो गया कि मेरे पति, सभी सांसारिक आत्माओं के पति-परमेश्वर प्रभु रूप हैं। इस लिए वह गुरु रविदास जी की सेवा में हर समय तत्पर रहती थी। वह समझ चुकी थी कि उसके पति गुरु रूप धारण कर, केवल अपने कुटुम्ब का ही नहीं बल्कि सारे ब्रह्मण्ड के पाप व अज्ञानता को दूर करके, सभी जीव-जन्तुओं का उद्धार करेंगे।

श्रीमती लोना जी की कोख से,एक बालक ने जन्म लिया, जिसका नाम श्री विजय दास रखा गया। दस्तावेज़ पुस्तक 'दी चमार्ज़' के लेखक, मि. जी. डबलयू ब्रिगेस भी लिखते हैं, "आप (गुरु रविदास जी) की सुपत्नी का नाम लोना तथा सुपुत्र का नाम श्री विजय दास था।"

***

गुरमुखी अक्षरों की रचना करना

जिस समाज में का आगमन हुआ, वह सख्त प्रतिबन्धों के अधीन था। अज्ञानता व निर्धनता इस समाज की पहचान बन चुकी थी। जगत् गुरु रविदास जी महाराज अपने गरीब समाज का कायाकल्प करने की इच्छा रखते थे, वे प्रत्येक पक्ष से समाज में परिवर्तन लाना चाहते थे। गुरु जी ने सभी को ज्ञानवान होने के लिए प्रेरित किया

माधो अबिदिया हित कीन।।
बिबेक दीप मलीन।।

विवेक के दीपक को जलाने के लिए, आपने गुरमुखी के चौंतीस अक्षरों की रचना की, जिससे समाज में जागृति आई और ज्ञानवान बनने की, नई किरण फूटी। जिस समाज को पढ़ने-लिखने नहीं दिया जाता था, वही समाज, अब गुरु जी के पास आकर अपना दीपक स्वयं बनने लगा। यहाँ तक कि देव नागरी अंकित पत्र पर, यदि किसी शूद्र की दृष्टि पड़ जाती थी, तो उसकी आँखों को निकालकर, उसे अंधा बना दिया जाता था। इन अकथनीय कष्टों के निवारण हेतु, दीन दयाल प्रभु गुरु रविदास जी ने समाज को गुरमुखी अक्षर प्रदान किए। सत्गुरु कबीर साहिब जी के अनुसार

पंडित मुलां जो लिखि दीया।

छाडि चले हम कछु न लीया।

अब सब कुछ उसी प्रकार हो रहा था, जिस प्रकार गुरु रविदास जी महाराज चाहते थे। प्रसिद्ध इतिहासकार मैकालिफ लिखता है, ''श्री गुरु रविदास जी साहिब का तेज, प्रताप एवं यश एक सूर्य की भांति, फैल गया।'' गुरु जी की नेक व सुहिरद सोच के सामने कपटी, लालची और मानव विरोधियों की न चली।

पुस्तक 'गुरमुखी अख्खर भगत रविदास ने बनाए' के लेखक ज्ञानी गुरचरन सिंह वैद लिखते हैं -

(1) ''गुरबानी द्वारा भक्त रविदास जी के गुरमुखी अक्षर बनाना सिद्ध होना, उनकी वाणी द्वारा पूर्ण रूप से समझा जा सकता है।'' आप जी लिखते हैं -

'नाना ख्यान पुरान बेद बिध चौतीस अख्खर माही।।'

इसका भाव है कि वास्तव में अक्षर चौंतीस ही हैं, पण्डितों ने ज्ञान को कठिन बनाने के लिए देव नागरी के अक्षरों को अ कारण ही बढ़ाकर, 52कर छोड़ा है। इससे सिद्ध हो गया है कि प्रारम्भ में केवल चौंतीस अक्षर, गुरमुखी की आवश्यकतानुसार, जो बताए व सांकेतिक किए गए हैं, वे भक्त रविदास जी की ही देन हैं। श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अगंद देव जी ने नहीं बनाए।

(2) अछूत वर्ग के लिए संस्कृति भाषा पढ़ने/पढ़ाने पर पूर्ण प्रतिबन्ध था। अछूत वर्ग की आवश्यकता को पूरा करने हेतु गुरु रविदास जी ने, गुरमुखी अक्षर बनाए, ताकि यह पिछड़े शूद्रों एवं स्त्रियों का वर्ग विद्या ग्रहण कर, ब्राह्मणवाद की पराधीनता से, मुक्त होकर, सन्मानित जीवन जी सके और उन्नति कर सके। (संदर्भ वही)

भारत-पाकिस्तान के विभाजन से पूर्व, लाहौर की अदालत ने भी यह फैसला (11 मार्च, 1932) को किया था कि 'गुरमुखी की रचना, श्री गुरु रविदास जी ने की है।' इस प्रकार, गुरु रविदास जी, केवल एक धार्मिक नहीं, बल्कि भारतीय साहित्य के निर्माता भी हैं। गुरु जी ने गुरमुखी के 34 अक्षरों की रूप-रेखा बनाकर, समाज को, इन अक्षरों से अवगत करवाते हुए फरमाया -

नाना ख्यान पुरान बेद बिधि-चऊतीस अखर माही।।

गुरु रविदास जी ने जिन 34 अक्षरों की रचना की वे निम्नलिखित अनुसार हैं

-"ੳ ਅ ੲ ਸ ਹ ਕ ਖ ਗ ਘ ਙ ਚ ਛ ਜ ਝ ਞ ਟ ਠ ਡ ਢ ਣ ਤ ਥ ਦ ਧ ਨ ਪ ਫ ਬ ਭ ਮ ਯ ਰ ਲ ਵ"

बहुत से विद्वान, उन्हें गुरमुखी के 34 अक्षरों के रचयिता मानते हैं और 'ੜ' अक्षर के विषय में उनका मत है कि यह अक्षर बाद में जोड़ा गया है, परन्तु गुरु जी की वाणी -हाड़ मास नाड़ी को पिंजर..., द्वारा यह सिद्ध होता है कि 'ੜ' अक्षर का प्रयोग आपजी ने अपनी वाणी में किया है। इसलिए गुरमुखी के विस्तार हेतु आप जी ने बाद में 'ੜ' अक्षर की रचना भी कर दी हो सकती है। यह कार्य चौंतीस अक्षरों के रचयिता के लिए मामूली था, परन्तु इसकी पंजाबी जगत के लिए अद्वितीय देन है।

पुस्तक "गुरु रविदास कावि-कला" में डॉ. कृष्णा कलसीया ने "गुरु रविदास वाणी विच पंजाबी प्रधानता" शीर्षक के अधीन अपने विचार इस प्रकार अंकित किए हैं -

"श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित गुरु रविदास वाणी में पंजाबी प्रभाव

अधिक प्रगट हुआ है। बाहरली वाणी में वी पंजाबी प्रभाव की झलक मिलती है। जैसे :

पहिले पहरे रैणि दे बणिजरिया, तैं जनम लिया संसार वे।
सेवा चूको राम की बणिजारिया, तेरी बालक बुद्धि गंवार वे ॥1 ॥
बालक बुद्धि गंबार न चेतियो, भूला माया जाल वे।
कहा होय पाछे पछिताये, जल पहिले न बांधी पाल वे ॥2 ॥
बीस बरस का भया अ याना, थामि न सका भाव वे।
जन रविदास कहै बणिजारिया, जनम लिया संसार वे ॥3 ॥
दूजे पहरै रैण दे बणिजारिया, तूँ निरखत चालियो छांह वे।
हरि न दमोदर ध्याइया बणिजारिया, तैं लेयी न सका नांव वे ॥4 ॥
नांव न लीया औगुन कीया, इस जोबन कै तान वे।
अपनी परायी गिनी न कायी, मंद करम कमान वे ॥5 ॥
साहिब लेखा लेसी तूँ भरि देसी, भीर परै तुझ तांह वे।
जन रविदास कहै बणिजारिया, तूँ निरखत चाला छांह वे ॥6 ॥
तीजै पहरे रैण दे बणिजारिया, तेरे ढिलड़े पड़े प्रान वे।
काया रवानी ना करै बणिजारिया, घट भीतर बसे कुजान वे ॥7 ॥
एक बसै कुजान कायागढ़ भीतर, पहिला जनम गंवायि वे।
अब की बेर न सुकिरित कीयो, बहुरि न यहि गडि पायि वे ॥8 ॥
कंपी देह कायागढ़ छीना, फिर लागा पछितान वे।
जन रविदास कहै बणिजारिया, तेरे ढिलड़े पड़े परान वे ॥9 ॥
चौथे पहरे रैन दे बणिजारिया, तेरी कंपन लागी देह वे।
साहिब लेखा मांगिया बणिजारिया, तू छाड़ि पुरानी थेह वे ॥10 ॥
छाड़ि पुरानी जिंद अयाना, बालदि लदि सबेरिया वे।
जम के आये बांधि चलाये, बारी पूगी तेरिया वे ॥11 ॥
पंथ चले अकेला होय दुहेला, किस को देह सनेह वे।
जन रविदास कहै बणिजारिया, तेरी कंपन लागी देह वे ॥12 ॥

उपरोक्त शब्द में बणिजारिया, बालक बुद्धि, जोबन, गंवरा, मंदे करम,

थंभि, बरस, निखरे, पिरान, पाल आदि पंजाबी-प्रधान शब्द काव्य भाषा से संबंधित हैं।

इसके अतिरिक्त बरन पलटि भयो, धन्नि सो पंथी, घटि घटि बयापिरहयो, संत उतारे आरती देव सिरोमनीये, धूप धूपाइये, तनमन आतम बारि, सदा हरि गाइये, सघन बन विकु, काम कलेश, जब लगि तन मन सुध न होय, भगति न होय बहु गुण कीनै, संतों कुल पखी भगति हवैसी कलियुग मैं, बिन विसवास, निसि बासर दुसकरम कमायी, राम कहत बैकुंठे जायी। मेरी कुचील जाति कुचीला मे बास, बरस सहस दस जुध कराइयो जुगल उधारण राज, निरंजन ध्याऊं, जिस घरि जाऊ हों बहुरि ना आऊं, प्रेम की पाटि सुरति लेखनि, ररा ममा लिखि अंक दिखाऊं।। आदि पंजाबी प्रधान लोक-भाषा से संबंधित वाक-वंश हैं।

पंजाबी उच्चारण में, जब दो से अधिक अक्षर दीर्घ स्वर के हों, तो आरंभिक स्वर अपने आप ही लघु हो जाता है, जैसे आधार, अधार में परिवर्तित हो जाता है :-

- कलि केवल नाम अधार।।
- जीवत मुकन्दे मरत मुकन्दे। ता के सेवक को सदा अनन्दे।।

चंदा अथवा चांद की तुलना पर चंद शब्द, नाऊं शब्द का प्रयोग, सैर के स्थान पर सैल, घना के स्थान पर घणा ('न' के स्थानपर 'ण' प्रयोग) यूं के स्थान पर इयूं, परचणा शब्द का प्रयोग पंजाबी उच्चारण के अनुसार हुआ है:-

- जऊ तुम चंद तऊ हम भये है चकोरा।।
- तिऊं तिऊं सैल करहि जिऊं भावै
  मरहम महल न को अटकावै।।
- घट अवघट डूगर घणा।।
- इयूं गुर प्रसादि नरक नहीं जाता।।
- फेडे का दुख सहे जीऊ।
- परचै राम रवै जो कोय।

गुरु रविदास वाणी में पंजाबी क्रियाओं का काफी प्रयोग मिलता है, जिससे उनकी काव्य-भाषा पंजाबी-प्रधान नज़र आती है, जैसे :-

- टांडा लादिया जायि रे।।

- मेरा मन बिखिया बिमोहिया।। (गाऊड़ी पूरबी)

- निमत नामदेऊ दूध पीयाइया।।
  तऊ जग जनम संकट नहीं आया।। (राग आसा)

- निंदक सोधि सादि बीचारिया।।
  कहु रविदास पापी नरकि सिधारिया।। (राग गोंड)

- होय पुनीत भगवंत भजन ते
  आप तारि तारे कुल दोय।। (रागु बिलावल)

पंजाबी में परिसर्ग लगने से, शब्द का अंतिम 'अ' बदल कर 'ऐ' हो जाता है,रमइये सिऊ इक बेनती (राग गाऊड़ी), रमइये रंग मजीठ का (राग गाऊड़ी) उपरोक्त अध्ययन के उपरांत हम बिना हिचकिचाहट कह सकते हैं कि गुरु रविदास वाणी की भाषा, पंजाबी प्रधान, सहज लोक भाषा है।

गुरु रविदास वाणी की काव्य-कला पर, तीक्षण बुद्धिमता के साथ डॉ. कलसीया ने, जो ब्यान किया है, वह सचमुच ही प्रशंसनीय है। इस प्रकार गुरु रविदास वाणी की काव्य-कला से भी यह सिद्ध होता है कि गुरु रविदास जी, पंजाबी के ज्ञाता ही नहीं, बल्कि बहुत बारीकी से पंजाबी भाषा पर पकड़ रखने वाले थे। अत: नि:संदेह पंजाबी की रचना उन्होंने ही की है।

गुरमुखी अक्षरों की रचना के उपरांत, गुरु जी न ज्ञान के दीपक जलाने में, कोई कसर नहीं छोड़ी। गुरु जी ने फ़रमाया -

सति विदिया को पड़े प्राप्त करें सदा गियान।
रविदास कहे बिन विदिया नर को जान अजान।।

जगत् गुरु रविदास जी महाराज के प्रचार का ढंग बहुत मिठास भरा था। वे अपने तेजस्वी स्वरूप तथा मधुर वचनों से, सभी का मन मोह लेते थे। वे मानवता को प्रेम-प्यार एवं नेक कमाई का सबक पढ़ाना चाहते थे। बच्चों को इस प्रकार पढ़ते हुए देखकर मानवविरोधी कांप उठे, क्योंकि गुरु रविदास जी का यह कार्य भारत के इतिहास में सबसे बड़ा क्रांतिकारी कदम था। इस कदम से ही, सदियों से पीड़ित, दलित समाज में, सोचने-समझने की शक्ति पैदा हुई।

गुरु जी की पावन वाणी से प्रतीत होता है कि आपको बहुत सी भाषाओं का ज्ञान था। गुरु जी ने अपनी वाणी में, शिक्षित होने तथा विचारशील बनने की शिक्षा ही नहीं दी, बल्कि नियमित रूप से आप अपने शिष्यों को पढ़ाते भी थे। बहुत स विद्वान इस मत से सहमत हैं कि गुरु जी ने अ पने घर में ही पाठशाला खोल रखी थी, जहाँ बहुत से लोग, विद्या ग्रहण करने के लिए आते थे। आप जी के ज्ञान का, बड़े-बड़े विद्वान लोहा मानते थे, जो आप जी ने अपनी वाणी में अनेक बार स्पष्ट किया है :-

अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडयुत
तेर नाम सरणायि रविदासु दासा।।3।।

और

आचार सहित बिप्र करिह डंडउति
तिन तनै रविदास दासान दासा।।

गुरु रविदास जी की पावन वाणी के केवल 40 शब्द ही, श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज़ हैं। गुरु जी द्वारा इन 40 शब्दों में, प्रयुक्त कई ऐसे शब्द हैं जो संपूर्ण गुरु ग्रंथ साहिब में, अन्य किसी भी गुरु ने, प्रयोग नहीं किए। जैसे- सुभायी, साभा, बिलांबा, अंदोह, तसवीस, आबादान, मामूर, महरम, दादिरा, बिमोहिया, उनमन, असोच, ओलग, ओल्हगणी, बिगूचा, पतीयारू, अविलोकनो, मधुकरू, भाखउ, उरसा, अंभुला, अभाखै आदि, जिससे आप जी के विशाल शाब्दिक ज्ञान/भंडार का पता चलता है। केवल यही नहीं, आप जी के विशाल ज्ञान के कारण ही उस समय आध्यात्मिक संगीत पद्धति के निर्माण में, तीव्रता आई थी।

प्रसिद्ध लेखक रतन रीहल अपनी पुस्तक ''गुरूआं दे गुरू श्री गुरू रविदास जी'' में लिखते हैं :''आप जी ने अपनी वाणी, कई रागों में उच्चारण की है, जिसस प्रतीत होता है कि गुरू रविदास जी संगीत विद्या के महान् विद्वान थे। गुरु रविदास जी ने इलाही वाणी को रागों में उच्चारित किया।'' लेखक आगे लिखता है, ''प्रत्येक मत में राग-रागनियों के नामों, नेमों एवं स्वरूपों में बहुत सा अंतर पाया जाता था। इस मतभेद तथा अंतर-देश भेद के कारण, श्री गुरु रविदास जी ने, राग-रागिनी पद्धति को, न केवल अवैज्ञानिक समझा, बल्कि रागों को उनकी सही आठ सुरों में, बैठाकर उनके नाम के अनुसार ही, उन्हें

राग बनाकर, प्रयोग किया। जिस राग–वर्गीकरण के संबंध में, आधुनिक संगीतकार कुछ विचार करने के लिए सोच रहे हैं, उन रागों की नींव श्री गुरु रविदास जी पाँच सौ वर्ष पूर्व ही रख चुके हैं। उन्होंने अपनी वाणी सोलह रागों में उच्चारित की है। श्री गुरु नानक देव जी ने भी गुरु रविदास जी द्वारा रचित सारे रागों को अपनी वाणी का आधार बनाया है। इसके साथ ही साथ गुरु रविदास जी ने प्रचलित धर्म में दाखिल हो चुके झूठे कर्म–काण्ड से अवगत ही नहीं करवाया, बल्कि प्रभु–भक्ति का सत्य मार्ग भी दिखाया। गुरु जी ने, समाज के दुख–कष्ट के कारणों को हल करने के लिए, भक्ति एवं शक्ति का मार्ग अपनाया। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि हमें आपस में, मधु–मक्खियों की भांति मिल–जुल कर रहना चाहिए, तभी भक्ति पर शक्ति का रंग चढ़ेगा, यह सत्य की संगत से ही संभव है: सतसंगति मिलि रहीये माधऊ जैसे मधुप मखीरा।।

* * *

पीरां दित्ता मरासी की ईर्ष्या

जगत् गुरु रविदास जी महाराज सब का भला चाहने वाले महापुरुष थे। उन के हृदय में सब के लिए प्यार था। वह पुरुष भले किसी भी जाति का क्यों न हो। वह सब को सत्य का उपदेश देते थे। बुराईयों से हटा कर सत्यमार्ग पर जीवों को लगाना ही गुरु जी के जीवन का लक्ष्य था। जगत् गुरु रविदास जी महाराज के विचारों से प्रभावित हो कर सभी वर्णों के लोग उन के पास श्रद्धा पूर्वक आने लगे।

पीरां दित्ता मरासी को यह अच्छा न लगा और वह गुरु रविदास जी से ईर्ष्या करने लगा। उस ने एक दिन नगर के बाहर एकांत में एक सभा बुलाई। समाज के कई शिरोमणी लोग वहां आये। सब ने पीरां दित्ता की बात को सुन कर गुरु जी को मार देने का विचार किया और इस विचार से यहाँ उपस्थित लगभग सभी लोग सहमत हो गये। गुरु जी ज्यों ही उस सभा में पहुँचे तो कुछ लोग कटु वचन कहने लगे। गुरु जी ने उन लोगों से कहा कि आप बुरे वचन क्यों बोल रहे हो? जिह्वा से पवित्र वचन बोलने चाहिए, जिन को सुन कर दूसरों का भला हो और अपना कल्याण हो। कटु वचन बोलने से क्या लाभ है?

दूसरा मेरा आप लोगों से कोई विरोध नहीं है, मेरे लिए कोई धर्म अच्छा या बुरा नहीं है। अच्छे कर्म करने से पुरुष अच्छा कहा जाता है और बुरा करने वाला और औरा बुरा सोचने वाला, बुरा माना जाता है। विवेकी आदमी तो गुरु जी के मुख से अमृत सदृश वचन सुन कर गुरु जी की शोभा करने लगे और जो दुष्ट प्रवृत्ति के थे वह आक्रमण पर उतर आये। ऐसा देख कर गुरु जी ने प्रभु की शरण ली और उच्चारण किया :

राम गुसंईया जीअ के जीवना ॥
मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा ॥रहाउ ॥
मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई ॥
चरन न छाडओ सरीर कल जाई ॥
कहु रविदास परउ तेरी सांभा ॥
बेगि मिलहु जन करि न बिलांबा ॥ (राग गउड़ी)

जब गुरु जी ने यह वाणी उच्चारण की तो एक तेज प्रकाश निकला सब को गुरु रविदास के स्वरुप ही सब तरफ दिखाई देने लगे। सब लोग वहीं देखते रह गये अ ौर इधर घर आकर गुरु जी ने फिर शंख नाद किया। समर्थ पुरुष के अ ागे किसी की कोई चाल नहीं चलती सभी लोग गुरु जी के चरणों में गिर पड़े।

बनारस में, जब संगत् जगत् गुरु रविदास जी महाराज के दरबार में श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मन्दिर में आती है तो वहाँ से आकर लोग बताते हैं। लौटा वीर के पास यह स्थान बताया जाता है और मन्दिर के आगे से जो सड़क जाती है गंगा जी की तरफ उसी रास्ते के बगल में ये स्थान बतलाते हैं।

***

बैसाखी के ऐतिहासिक पर्व पर ठाकुर तारने की कथा

जगत् गुरु रविदास जी महाराज अपने पवित्र कार्यों एंव पावन चरित्र के प्रभाव से उस काल में अद्वितीय ख्याति प्राप्त कर चुके थे। एक छोटी समझी जाती जाति के महापुरुष का समाज में ऐसा प्रभाव देख कर कुछ लोग उन से ईर्ष्या करने लगे। यह बात उनको अच्छी नहीं लगी। उस समय के अनुरूप यह बात बिल्कुल असहनीय थी।

ब्रह्मज्ञानी के रूप में और सत्य उपदेश देने वाले सच्चे महापुरुष के रूप में वे लोग एक छोटी समझी जाने वाली जाति के गुरु को कैसे सहन कर सकते थे?

यह सब देख कर कुछ लोगों ने आप का विरोध करना शुरू कर दिया। इस विरोध के बारे में कई गाथाऐं प्रचलित है, जिस का संकेत गुरु रविदास जी ने अपनी वाणियों में भी किया।

जगत् गुरु रविदास जी महाराज नित्य-प्रति अपनी कुटिया में सत्संग किया करते थे, धीरे-धीरे बहुत से लोग आप के जीवन व सत्संग से प्रभावित होकर सत्संग में आने लगे। आप के अमृत सदृश वाणियों की चर्चा को सुन कर, अपने जीवन को सफल बनाने लगे। आप के मुख से प्रवचनों को सुन कर जनता को एक नया मार्ग प्राप्त हुआ। आप ने कहा:

जन्म जाति कू छाड़ि कर करनी जात प्रधान।
इहयो साचा धर्म है कहै रविदास बखान॥
ब्राह्मण खतरी वैश सूद रविदास जन्म ते नाहिं।
जो चाहे सुबरन कऊ पावई करमन माहिं॥
रविदास जन्म के कारनै होत न कोऊ नीच।
नर कूनीच करि डारि है ओछे करम की कीच॥

जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने समाज को सही दिशा प्रदान करने हेतु सत्य का रास्ता दिखाया। आपका कहना था कि कोई प्राणी जन्म से शूद्र नहीं होता। किसी भी प्राणी की जाति को देखने से पहले उस के गुणों को देखना चाहिए।

रविदास ब्राह्मन मत पूजिए, जऊ होवे गुन हीन।
पुजहिं चरन चंडाल के, जऊ होवे गुन परवीन॥

गुरु रविदास जी की तरह और संतों ने भी इस बात पर बल दिया कि जो ब्रह्म को जानने वाला है वह ही ब्राह्मण कहलाने योग्य है।

गुरु रविदास के सच्चे विचारों से प्रभावित होकर उस काल के बहुत राजे और रानियाँ आप के शिष्य बने। यहीं कारण था कि आप को मानव विरोधियों का कड़ा विरोध सहना पड़ा।

एक बार काशी नरेश वीर सिंह बघेल के पास कुछ लोगों ने शिकायत की कि आप के राज्य में एक शूद्र रविदास धर्म गुरु बन कर लोगों को उपदेश देता हैं, यह बात ठीक नहीं हैं। यह काम तो ब्राह्मणों का है।

यह शिकायत जब राजा ने सुनी तो राजा नें संदेश भेज कर गुरु रविदास जी को अपनी सभा में बुलाया और साथ ही विरोधी दल को भी। दोनों पक्षों के बीच शास्त्रार्थ करवाया। इस दृश्य को देखने के लिए बहुत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित हुए। काफी लम्बे समय तक चर्चा चलती रही। गुरु रदिवास जी के सामने पंडितों का पक्ष निर्बल सिद्ध हुआ। विरोधियों ने जब देखा कि उन का पक्ष निर्बल हो रहा है तो उन्होंने प्रयास किया कि कोई निर्णय न होने पाए। ऐसी स्थिति में जनता की इच्छा और राजा की आज्ञा के अनुसार फैसला हुआ कि अपने-अपने ठाकुर यहाँ सभा में लाओ। उनको गंगा जी में बहा कर फिर वापिस बुलाने का आदेश हुआ। निर्णय लिया गया कि जिसके ठाकुर बुलाने पर ऊपर आ जाएँगे उस को पूजा और उपदेश करने का अधिकार होगा। विजेता को सोने की पालकी में बिठा कर पूरे नगर में घुमाया जाएगा।

बैसाखी संक्रांति नियत अवसर पर गंगा जी के तट पर बहुत सारे लोग (राजघाट के स्थल पर) यह लीला देखने के लिए पहुँचे। पंडित जन काठ के ठाकुर लेकर आए और गुरु रविदास जी पत्थर की शिला को उठा लाए जिस पत्थर पर वे अपना दैनिक कार्य किया करते थे। पंडित जन यह देख कर मन ही मन खुश हो रहे थे कि हम इस मुकाबले में जीत जाएँगे और रविदास जी हार जाएंगे, क्योंकि पत्थर पानी में डूब जायेगा।

बहुत भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी, सब लोग इन्तज़ार में थे कि देखो इस मुकाबले में कौन जीतता है। लोगों में उत्सुकता थी कि कब काशी नरेश वीर सिंह बघेल का आदेश होगा। समय देखते हुए बादशाह ने पहले पंडितों को आदेश दिया ऐ कि तुम अपने ठाकुर जी को गंगा जी में बहाओ और फिर वापिस बुलाओ। राजा के आदेश को पाकर पंडित जनों ने अपने ठाकुर को गंगा जी प्रवाहित धारा में बहा दिए। इस के पश्चात् मंत्र उच्चारण करके ठाकुरों को वापिस बुलाने लगे। यह सब कुछ दूर दूर से आए हुऐ लोग देख रहे थे। बहुत देर तक बुलाने पर भी जब ठाकुर जी पानी के ऊपर नहीं आए, तब काशी

नरेश ने गुरु रविदास जी को कहा और कहा कि रविदास जी ! आप भी अपने ठाकुर जी को गंगा जी में बहा दो और फिर उनको वापिस बुलाओ।

गुरु रविदास ने राजा का आदेश सुन कर प्रभु को याद किया कि प्रभु जी मुझे केवल आप का ही सहारा है इस मुश्किल में मैने आप को याद किया है आप आकर दर्शन दीजिए और मेरी लाज रखिए। गुरु रविदास जी आँखें बन्द कर गंगा जी के तट पर बैठ गऐ और प्रभु स्तुति में बोलने लगे। कहने लगे कि हे प्रभु जी मैंने आप के साथ सांची प्रीति लगाई है।

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा।
जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥१ ॥
माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि।
तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥१ ॥ रहाउ ॥
जउ तुम दीवरा तउ हम बाती।
जउ तुम तीरथ तउ हम जाती ॥२ ॥
साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी।
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥३ ॥
जह जह जाउ तहा तेरी सेवा।
तुम सो ठाकुर अउरु न देवा ॥४ ॥
तुमरे भजन कटहि जम फांसा।
भगति हेत गावै रविदासा ॥५ ॥५ ॥

जैसे पर्वत और मोर, चन्द्रमा और चकोर, तीर्थ और यात्री का प्रेम है ऐसी ही मेरी प्रीति आपसे है। इस के साथ फिर प्रेम भाव से प्रभु दर्शन के लिए निवेदन करने लगे। निम्न पद का आपने उच्चारण करना आरंम्भ किया:

कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ।
ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सुझ ॥१ ॥
सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी ॥१ ॥ रहाउ ॥
मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ।
करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥२ ॥
जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार।

प्रेम भगति कैकारणै कहु रविदास चमार ॥३ ॥१ ॥

उन्होंने बिह्वल हो कर यह पद भी कहा:

आयों हो आयों देव तुम सरना।
जानि कृपा कीजै आपनो जना।।टेक।।
त्रिबिधि जोनि बास, जम दी अगम त्रास
तुमहरे भजन भिन भ्रमत फिरयो।।
ममिता अहं बिखै मदि मातों इह सुख कबहूं न दूतुर तिरौं।।१।।
तुमहरे नांव बिसास चाडी है आन की आस।
संसार धरम मेरे मन न धीजै।।
रविदास दास की सेवा मानि हो देवाधिदेव
पतित पावन नाम प्रगट कीजै।।२।।

यह शब्द पूरा कहने के बाद जब जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने अपने नेत्र खोले तो क्या देखा कि जल के ऊपर शिला रूप ठाकुर जी तैर रहे हैं। सतिगुरु रविदास जी प्रेम भाव से ठाकुर जी को जिस ओर बुलाते हैं उसी तरफ ठाकुर जी दर्शन देते हैं। सारी दुनियां यह अदभुत दृश्य देख कर गुरू जी की जय जय कार करने लगी। सब लोग गुरु रविदास जी को साक्षात् परमात्मा का रूप समझने लगे। सभी ने गुरु जी के चरणो कँवलों में दंडवत् प्रणाम किया। गुरू जी ने सबको उपदेश दिया कि हर जीव को अपनी इच्छा अनुसार प्रभु की पूजा करने का अधिकार है। राजा बीर सिंह बघेला ने भी श्री गुरु रविदास जी को प्रणाम किया और गुरु जी को विनय की कि आप मुझे अपना शिष्य बना लें। राजा ने सब लोगों को कहा कि मेरे गुरु रविदास जी प्रभु का स्वरूप हैं। आप लोगों को इनके साथ ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए थी। आज हम सब को ठाकुर जी का साक्षात् दर्शन हुआ है हम सब के अहो भाग्य हैं। सब लोग जब प्रणाम कर चुके तो बनारस शहर में श्री गुरु रविदास जी को श्रद्धा पूर्वक हाथी पर सोने की पालकी में बिठा कर और छत्र लगाकर गुरू जी हाथी पर सवार आगे-आगे और राजा समेत सभी लोग गुरू जी के पीछे-पीछे चले अ ौर शहर की परिक्रमा की गई। सभी लोग श्री गुरु रविदास जी के दर्शन करके आन्नदित हो रहे थे। पालकी जहाँ-जहाँ से गुजरती थी वहाँ-वहाँ सभी नगर निवासी

प्रेम भाव से फूलों की वर्षा कर रहे थे। तब गुरू जी ने यह शब्द उचारण किया:

ऐसी लाल तुझ बिनु कउन करै।।
गरीब निवाजु गुसईया मेरा माथै छत्र धरै।।१।।रहाउ।।
जा की छोति जगत कु लागै ता पर तूं ही ढरै।।
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै।।१।।
नामदेव कबीर तिलोचनु सधना सैनु तरै।।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै।।२।।१।।

शाम को श्री गुरु रविदास जी को उन के स्थान पर पहुँचया गया। गरीब लोगों को आज बहुत बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई। सभी लोग श्री गुरु रविदास जी के आदेश के अनुसार सत्करम में लग गये और सभी लोग नित्य प्रति गुरु जी के उपदेश को सुन कर जीवन में ग्रहण करके मनुष्य जन्म का लाभ लेने लगे। आओ आज हम सब मिल कर गुरु जी के उपदेश को अपने जीवन में धारण करके अपने जीवन को पवित्र बनाएं और गुरु जी के जो पावन कल्याणकारी उपदेश हैं उन को पढ़ सुन कर और ह्दय में धारण करके इस अ मूल्य जन्म को सफल करें।

जो बोले सो निर्भय।
श्री गुरु रविदास महाराज की जय॥

***

प्रभु का साधू वेश में
जगत् गुरु रविदास जी महाराज को पारस भेंट करना

वरस सात को भयौ है जबही, नौधा भक्ति चलाई तब ही।
अरु भगतन की सेवा करई। सतगुर कहो सो सीष न तरई॥

श्री गुरु रविदास जी जब सात वर्ष के हुए तो प्रेमी जन गुरु जी के पास आकर भक्ति का आनन्द प्राप्त करने लगे। जो अकाल पुरुष सतिगुरु की ओर से जन कल्याण की सेवा लगाई गई थी, उस सेवा को श्री गुरु रविदास जी निभाने लगे। प्रति दिन बड़ी से बड़ी संख्या में संगत् दरबार में आने लगी।

बरस सात और चलि गइआ,
बहुत प्रीति केसो सु भइआ।

ऐसे ही प्रभु भक्ति में सात बर्ष और व्यतीत हो गए। प्रभु से आप की बहुत गहरी प्रीति लग गई। गुरु जी हर रोज अपने सत्य कर्म में तत्पर रहते थे। अपने हाथों से मेहनत करके संगत की और घर आए संतों की सेवा किया करते थे।

सीधो चाम मोलि ले आवे। ताकी पनहीं अधिक बनावे।

टुटे फाटे जरवा जोरे। समकति करे काहू न निहौरे॥

गुरु जी स्वयं चमड़े के सुन्दर-सुन्दर जूते तैयार करते थे। कई बार सन्तों को तथा जनसाधारण बिना पैसे के ही पनही भेंट कर दिया करते थे। इस ढंग से श्री गुरु रविदास जी ने समझाया की सब को अ पनी उपजीविका के लिए पूरे बल के साथ मेहनत करनी चाहिए। संतों की संगत और सेवा करके हरि-भजन का लाभ लेना, यही मनुष्य जीवन का लक्ष्य है।

बरस सात ऐसी विधि गईआ, केसी के मन उपजी दईआ॥

तब हरि भक्त रूप धरि आयो। जन रविदास बहुत मन भायौ।

अब श्री गुरु रविदास जी 21 वर्ष के हो गए तो एक दिन प्रभु साधू के वेश में गुरु जी के पास आये। श्री गुरु रविदास जी दर्शन करके बहुत प्रसन्न हुये। गुरु जी ने साधू वेश भगवान का बहुत प्रेम पूर्वक आदर किया और श्रद्धा सहित आसन पर बिठाया गुरू जी ने कहा कि आपने बहुत कृपा की, दर्शन दिये,आज मेरे भाग्य धन्य हो गये। इस प्रकार प्रेम वाणी का उच्चारण करके साधू वेश भगवान के चरणों को जल से धोया। इस के साथ ही ऐक घड़ी तक सत्संग हुआ। फिर भगवान को भोजन करवाया गया। जब हरि भोजन कर चुके तब आपसी चर्चा पुनः प्रारम्भ हुई। हरि कहने लगे कि आप के पास कुछ संपति तो दिखाई नहीं देती, आप आपना निर्वाह किस प्रकार करते हो? तब श्री गुरु रविदास जी ने उतर दिया कि मेरी संपति तो परमात्मा का नाम ही है। उस से बड़ी संपति मैं और कोई नहीं समझता हूं।

कोटि लछमी जाकै चरना। दुष दारिद्र नहीं तिहि सरना॥

करोड़ों की गिनती में लक्ष्मी (धन) जी आपके चरणों में निवास करती हैं। उन की शरण में दुःख और गरीबी कैसे हो सकती है। जब इस प्रकार का श्री गुरु रविदास जी ने उत्तर दिया तो एसा उत्तर पाकर हरि जी को बहुत प्रसन्नता हुई। प्रभु फिर कहने लगे कि हे रविदास जी मेरा एक वचन मानों तो

सब गरीबी आज ही दूर हो जाएगी। मैं बचपन से ही वैरागी हूँ जब मैं आप के घर को आ रहा था तो रास्ते में मुझे एक पारस पत्थर मिला है। यह मेरे तो किसी काम का नहीं है, इस लिए मैं अपने दयालु स्वभाव से यह आप को योग्य अ धिकारी समझ कर देना चाहता हूँ। इस पारस पत्थर से जब लोहा स्पर्श होता है तो सोना बन जाता है। इस से सोना बना कर सुन्दर घर बनवाओ और आराम से जीवन व्यतीत करो और घर आई संगत् के लिए खूब अच्छी व्यवस्था बनाओ।

श्री गुरु रदिवास जी यह वचन सुन कर बिल्कुल चुप रह गये। सोचने लगे कि क्या ये मेरी मत को बिगाड़ने या भक्ति को नष्ट करने आये हैं। श्री गुरु रविदास जी एक घड़ी तक मौन हो गये।

घरी एक रदिवास न बोल्य, हरि जी गांठि ते पारस शोल्य॥

तु जिनि मानै डहकै हमको। निहचै कीया देत हैं तुम को॥

तब प्रभु ने पारस गांठ से निकाला और कहा कि आप जैसे भी समझो, हमने आप को योग्य समझा है इसलिए निश्चय यह आप को ही दूँगा। तब भगवान ने एक सूई के साथ पारस को लगाया तो वह सोने की हो गई। यह देखकर श्री गुरु रविदास जी ने कहा कि इस को लेना तो अलग रहा इस को कभी आँखों से भी नहीं देखूंगा। संत मत ने तो इस को हाथ लगाने से मना किया है। यदि सोने से ही सब काम हो जाऐं तो राजा लोगों ने राज्य क्यों छोड़े हैं? उन्होंने भिक्षा माँग कर अपना जीवन निर्वाह किया है और कामनी को दोष रूप कहा है। (तब भगवान ने कहा कि कंचन को दोष मत दो। कंचन से सुन्दर सुन्दर मंदिर तैयार होते है। कंचन से हरि की सेवा की जाती है। कंचन से बैकुण्ठ पुरी बनाई जा सकती है। कंचन से भंडारा आदि किया जा सकता है। तब गुरु जी ने कहा कि कंचन से बहुत पाप होते हैं और जीव नरक में जाता है। कंचन से पुरुष जुआ खेलने वाला, शराब पीने वाला वैश्यागमी, माँस खाने वाला हो जाता है। तो कहो किस प्रकार उद्धार करेगा और यदि महोछे की बात कहो तो तुम स्वंय ही महोछा क्यों नहीं करते, हमें क्यों ये पत्थर दे रहे हो। गुरु जी ने कहा कि हमें आप के ऊपर पूर्ण विश्वास है। श्री गुरु रविदास जी ने इस बात को रंचक मात्र नहीं माना।)

यह देख कर हरि ने पारस अपनी गांठ से खोल कर वहां रख दिया। श्री गुरु रविदास जी पीछे हट गए। तब साधू(हरि)ने कहा कि यह हमारी अमानत तुम अपने पास रख लो। मैं कुछ दिन के लिए आगे जा रहां हूँ और वापिस आकर ले जाऊँगा। श्री गुरु रविदास जी ने कहा कि इस छपरी में जहां चाहें रख लो और वापिस आकर वहीं से ले लेना। भगवान सोच रहे थे कि रविदास जी इस पारस को हमारे बाद निकाल कर प्रयोग करेगा। 13 महीने व्यतीत हो गए और श्री गुरु रविदास जी ने उस पत्थर की ओर आँख उठाकर देखा तक नहीं।

जन रविदास न देखै काई।

मास तेरूवें बहुटयो आई।

तब भगवान ने कहा कि इस पारस को आप ने क्यों नहीं निकाला, इस में क्या दोष है?

काहे स्वामी काढ़ि न लीना, कौन दोष पारस को दीना॥

जन रविदास कहे करि जोरे, मैं छाड़ियो पाथर कै मोरे।

श्री गुरु रविदास जी कहा कि ये पत्थर मेरे किसी काम का नहीं है। मेरे पास हरि के नाम का पारस है जो सर्व श्रेष्ठ है।

पारस मोरे हरि को नामु। पत्थर सों मोहि नाहिं कामु॥

हरि पारस कंचन की रासी। अवरु सकल माया की पासी॥

हरि पारस ही सब से बड़ी कंचन की राशि है और बाकी सब माया की फांसी है।

अंगीकार रविदास न कीनौ।

तब हरि अपनौ पारस लीनौ॥

ले पारस रमि चले मुरारी॥

जब श्री गुरु रविदास जी ने पारस को स्वीकार नहीं किया तब हरि पारस लेकर वहां से अन्तर्ध्यान हो गये।

इस कथा से जो उपदेश हमें प्राप्त होता है इस को सदैव स्मरण रखना चाहिए। श्री गुरु रविदास जी ने समझाया है कि हमें प्रभु मार्ग पर चलना चाहिए। किसी भी प्रलोभन में लग कर प्रभु भक्ति का त्याग नहीं करना चाहिए। प्रभु का नाम सब से उत्तम पारस पत्थर है। इस पारस को गुरु जी से

प्राप्त करके इस पारस के साथ अपने जीवन को कंचन रूप बनाना चाहिए। अटल विश्वास के साथ सत्संग, सिमरन और सेवा में लगें रहना चाहिए जी।

***

प्रभु का संगत की सेवा के लिए मोहरों का वरदान

सुपनांतर नें बिनती करई। मुहर पांच संपुट में धरई।

लेहु कनक जिन करो कुभाउ। पूजौ भगत रिदै धर भाउ॥

पिछले प्रसंग में हम ने पढ़ा कि साधू वेश में प्रभु जगत् गुरु रविदास जी महाराज जी के पास पारस लेकर गुरु जी की परीक्षा लेने के लिए आए। प्रभु ने श्री गुरु रविदास जी को कहा कि यह पारस आप को अधिकारी जानकर मैं देता हूँ, इस से आप सोना बनाकर सुंदर सुंदर मंदिर तैयार करो और संगत की सेवा में लगाओ। गुरु जी ने इस बात को मानने से बिल्कुल इन्कार कर दिया।

इस के पश्चात् फिर प्रभु ने दर्शन दिये और कहा कि हे रविदास जी! अब मेरी एक बात आप को जरूर माननी पड़ेगी। आप के यहां संगत् और संत समाज जुटता है। इनकी अच्छी सेवा के लिए आपको अच्छा प्रबन्ध करना चाहिए। प्रति दिन आप को यहां दरबार में पांच स्वर्ण मोहरें प्राप्त हुआ करेंगी। आप ने वो मोहरें लेकर संगत् की सेवा में खर्च करनी हैं। कहते हैं कि श्री गुरु रविदास जी के दरबार में हर रोज देश विदेश के बादशाह और संगत् सत्संग के लिए आया करती थी। गुरु जी ने बहुत सुंदर सत्संग भवन, निवास स्थान और धर्मशाला का निर्माण करवाया था।

मंदिर महल किया वहुतेरा।

यहां तहां भगतन का डेरा॥

जगत् गुरु रविदास जी महाराज के उपदेशों के अनुसार आज भी जीवन में सत्संग की प्राचीन काल के समान ही जरूरत है। हम सब को यह चाहिए कि सत्संग में जुड़ें। सद्गुरु के अमृतमय उपदेशों को सुनकर अमूल्य मनुष्य जन्म का लाभ लें।

***

एक धनवान सेठ द्वारा अमृत का तिरस्कार करना और उस को कुष्ट की बीमारी हो जाना

संत महापुरुष स्मस्त समाज के होते हैं। उन का सम्बन्ध केवल एक जाति या वर्ण के साथ नहीं होता। वह सर्वहित के लिए और सब को अच्छे मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा देते हैं। जगत् गुरु रविदास जी महाराज के पवित्र जीवन और साधुता को देखते हुए चारों वर्णों के लोग सत्संग में आने लगे। श्री गुरु रविदास जी पवित्र आहार, पवित्र कर्म और पवित्र विचारों की बार-बार चर्चा करते थे।

एक दिन की घटना है कि एक धनवान सेठ श्री गुरु रविदास जी के सत्संग में आया। उसने देखा कि बहुत सी संगत सत्संग सुनने को आई हुई है। जिस में अमीर गरीब और चारों ही वर्णों के लोग श्री गुरु रविदास जी के उपदेश सुनने की चाह रखे बैठे हुए हैं। सेठ के मन पर यह सब कुछ देख कर बहुत प्रभाव पड़ा और वह भी सत्संग सुनने के लिए बैठ गया। गुरु जी ने कहा कि मनुष्य तन बहुत अनमोल है और यह तन बहुत दुर्लभ है।

दुलभ जन्म पुंन फल पाइओ विरथा जात अविवेके,

इस अनमोल जन्म को प्रभु बंदगी में लगाकर सफल बनाना जाहिए। प्रभु के नाम के बिना सभी पासारे झूठे हैं।

हरि के नाम बिन झूठे सगल पसारे॥

और कहा कि सिमरन का सब जातियों और वर्णों को अधिकार है। कोई किसी भी जाति या वर्ण का आदमी हो, प्रभु भजन द्वारा महान हो जाता है।

ब्राहमन बैस सुद अरु ख्यत्री
डोम चंडार मलेछ मन सोइ।
होइ पुनीत भगवंत भजन ते
आपु तारि तारे कुल देइ॥१॥

भजन करने वाला ब्राह्मण, वैश, शुद्र, क्षत्रिय, डोम, चंडाल, और मलेच्छ अथवा किसी भी जाति का हो प्रभु के सिमरन द्वारा भवसागर से पार हो सकता है और अपने कुटुम्बियों को भी उबार लेता है। गुरु जी ने कहा कि सब के लिए सिमरन अनिवार्य है।

सत्संग समाप्त होने पर सब प्रेमियों को कठौती मे से अमृत बांटा गया जिस में श्री गुरु रविदास जी चमड़ा भिगोते थे। सेठ ने चरणामृत तो लिया। परन्तु उसे पीने की बजाय सिर के पीछे से फेंक दिया। चरणामृत का कुछ अंश उसके कपड़ों पर पड़ गया। सेठ ने घर जाकर कपड़ों को अपवित्र जानकर एक भंगी को दान कर दिया। भंगी ने ज्यों ही उन कपड़ों को धारण किया उसका शरीर कान्ति से चमकने लगा और सेठ को कुष्ट रोग हो गया। उधर सेठ ने हकीम और वैद्यों से बहुत दवाई कराई पर कुष्ट रोग ठीक नहीं हुआ। जब सेठ को ध्यान आया कि उसने किसी संत्पुरुष का अनादर किया है, जिसके कारण उसे यह कष्ट उठाना पड़ रहा है, तो दुखी हो कर गुरु जी की शरण में गया। उदार-हृदय, गुरु जी ने सेठ को क्षमा कर दिया और वह फिर से स्वस्थ हो गया और हरि का सिमरन करने लगा।

***

एक हिरणी की रक्षा

जगत् गुरु रविदास जी महाराज बहुत कोमल हृदय के महापुरुष थे। एक बार लहरतारा तालाब जो कि श्री गुरु कबीर साहिब जी की प्रकट स्थली है। उन दिनों यहां पर घना वन था। इस एकांत रमणीय स्थान पर श्री गुरु रविदास जी समाधि अवस्था में बैठे प्रभु का सिमरण कर रहे थे। आस पास में कुदरत का बहुत प्यारा दृश्य मन को मोहित कर रहा था।

इसी समय एक हिरणी भागती इधर निकल आई जिस के पीछे शिकारी लगा हुआ था। वह हिरणी को मारने के लिए तैयार था। शिकारी ने हिरणी को अपने काबू में कर लिया था। हिरणी ने सोचा कि अब उसका जीवन मुश्किल में पड़ गया है और शिकारी उसे मार डालेगा। उसने सोचा कि अब वह अपने बच्चों को नहीं मिल सकती, दूध पिलाना तो बहुत दूर की बात है। हिरनी अपने मन में ऐसा सोच कर दुखी हो रही थी और अपने बच्चों को याद कर उसकी आँखों में आँसू बहने लगे। यह देख कर शिकारी ने हिरणी से पूछा कि तेरी आँखों में आँसू आने का क्या कारण है? हिरणी ने कहा कि मुझे अपने बच्चों की याद आ रही है, इस लिए मेरी यह हालत है। शिकारी को हिरणी ने कहा हे शिकारी! तू मुझे दो पल के लिए छोड़ दे, मैं अपने बच्चों को दूध

पिलाकर तेरे पास आ जाऊँगी। शिकारी ने उत्तर दिया कि यदि कोई तुम्हारी जमानत देगा तो मैं तुम्हे छोड़ सकता हूँ।

पास ही गुरु रविदास जी थे। उन्होंने शिकारी को कहा कि मैं इसकी जमातन देता हूँ और तेरे पास तब तक रहूँगा जब तक हिरणी वापिस नहीं आ जाती। शिकारी ने दो घड़ी के लिए हिरणी को छोड़ दिया। हिरणी तेज़ी से भागती हुई अपने बच्चों के पास पहुँची। बच्चों ने जब देखा कि उनकी माता आ गई है तो वह अपनी माता से लिपट गए। जब वह दूध पीने लगे तो उन्होंने देखा कि उनकी माता उदास है। बच्चों ने माता को दुखी देखकर पूछा कि माता जी आपकी उदासी का क्या कारण है? तो हिरणी ने सारी बात सुनाई। बच्चों ने कहा माता जी अब हम दूध नहीं पीएंगे बल्कि आप के साथ जाएंगे। आप से पहले हम अपनी जान देंगे, हमारे बाद ही आपकी बारी आएगी। हिरणी कुछ देर बाद अपने बच्चों के साथ जहाँ शिकारी और गुरु जी बैठे थे वहाँ पहुँच गई। हिरणी ने शिकारी को कहा कि अब इन संत महापुरुषों को छोड़ दो। हम दो घड़ी से पहले आप के पास पहुँच गए हैं। जब शिकारी ने हिरणी को मारने के लिए कटार का बार किया तो शिकारी का कटार वाला हाथ ऊपर ही रह गया। वह जड़ पत्थर के समान हो गया। उसको अपनी आँखों के सामने मृत्यु नाचती हुई दिखाई देने लगी। जब उसको ऐसे आभास हुआ तो वह मन ही मन में पश्चाताप करने लगा और बार-बार गुरु जी के आगे नमस्कार करने लगा। इसने गुरु जी से क्षमा मांगी। गुरु जी ने आगे से उसको ऐसा करने से मना कर दिया और उस को सत्य का उपदेश दिया तथा वह गुरू जी का शिष्य बन गया। इस शिकारी का नाम हीरू लिखा गया है। यह शिकारी गुरु रविदास जी का सच्चा भक्त बन गया और आगे चल यह एक अच्छे आदमी के रूप में समाज के सामने आया।

हिरणी और इसके बच्चे श्री गुरु रविदास जी को धन्यवाद देते हुए, शीश झुका कर, जय जय कार करते हुए जंगल की ओर चले गये।

***

एक शेख द्वारा प्रेम की याचना करना

जगत् गुरु रविदास जी महाराज प्रति दिन सत्संग किया करते थे। आपके भेदभाव रहित विचारों का संगत पर बहुत प्रभाव होता था। हिन्दू, मुसलिम दोनों ही आप के पास परमार्थ लाभ के लिए आते थे।

एक दिन की घटना है। एक शेख ने आ कर कहा कि हे स्वामी जी! हमें भी प्रेम का रंग प्रदान करो जी। श्री गुरु रविदास जी जहाँ पर चमड़ा धो रहे थे उस कुंभ का पानी लिया और उस शेख को दे दिया। शेख ने उस से ग्लानि की और छुपा कर वह पानी फैंक दिया। उस पानी का उसकी कमीज़ पर दाग पड़ गया। घर जा कर वह कमीज़ उतार कर नौकरानी को धोने के लिए दे दी। नौकरानी उस कमीज को लेकर जब धोने लगी तो पानी का वह दाग नहीं उतर रहा था। बहुत यत्न किया परन्तु दाग नहीं उतरा। इस के बाद नौकरानी उस कपड़े को मुंह में लेकर दाग को चूसने लगी। दाग को चूसते ही नौकरानी में अनेक शक्तियां प्रवेश कर गई। वह नौकरानी ज़मीन से ऊँचा-ऊँचा चलने लगी। नौकरानी को इस रंग में देखकर उस से पूछा गया कि आप को यह सिद्धि कहाँ से प्राप्त हुई? दासी ने कहा कि कुर्ते पर लगे दाग को चूसने से मुझे यह सिद्धि प्राप्त हुई है। उस शेख को बहुत आश्चर्य हुआ और पछताने लगा कि मुझ से यह कैसी भूल हो गई। इस के पश्चात् वह शेख दूसरी बार फिर श्री गुरु रविदास जी के पास आया। विनम्रता से गुरु रविदास जी से अमृत की मांग की। गुरु जी ने कहा कि वह तो समय अब बीत गया है। शेख ने बारबार श्री गुरु रविदास जी से आग्रह किया तो श्री गुरुदेव जी ने दयालु हो कर उस को अपना शिष्य बनाया और उस को प्रभु बंदगी का संदेश सुनाया। गुरु जी का कथन है

करि बंदिगी छाडि मैं मेरा॥
हिरदै नामु सम्हारि सवेरा॥१॥
जनमु सिरानो पंथु न सवारा॥
सांझ परी दहदिस अंधिआरा॥
कहि रविदास निदानि दिवाने॥
चेतसि नाहीं दुनीआ फरखाने॥३॥

आज भी यदि कोई अपने जीवन को सफल बनाना चाहता है और प्रेम के रंग की चाह रखता है तो यह अनिवार्य है कि गुरु जी के इन उपदेशों को जीवन में अपनाए। इस से ही जीवन सफल होगा।

***

मृत बालक को जीवन दान देना

काशी में एक विधवा सेठानी रहती थी । उस सेठानी का पहले बड़ा परिवार था। एक बार ये लोग (सारा परिवार) तीर्थ यात्रा को गऐ दैवयोग से वहां नाव दुर्घटना हो गई जिस से सारा सेठ परिवार पानी में डूब कर मर गया । केवल एक बहु बची रही जो कि गर्भवती थी । रोती चिल्लाती और नाना कष्टों को सहती हुई वह किसी प्रकार अपने घर आई और अकेली रहने लगी । समय पाकर उसकी कोख से एक बच्चे ने जन्म लिया। बच्चे का मुँह देख कर वह बडी प्रसन्न हुई, क्योंकि यही एक मात्र उस का सहारा था। बच्चा जब बड़ा होकर खेलने कूदने लगा तो एक बार वह सख्त बीमार हो गया सेठानी ने दवा इलाज और पाठ पूजा में बहुत खर्च किया। किन्तु लाभ कुछ भी नही हुआ। बच्चे का रोग दिन-प्रतिदिन भयंकर रूप धारण करता गया । वह हर एक से रो-रो कर कहती, मेरे बच्चे की जान बचाओ । किसी ने उसे श्री गुरु रविदास जी का परिचय दिया । वह बीमार बच्चे को लेकर श्री गुरु रविदास जी के पास पुहंची। किन्तु वहाँ पहुंचते ही दैवयोग से उस का बच्चा मर गया। फिर क्या था, सेठानी बिलख-बिलख कर रोने लगी । उसका करुण-क्रन्दन हृदय को विदीर्ण करता जा रहा था । कोमल हृदय सतग्रु जी से उस का दुख देखा न गया। वह उस बच्चे के लिए प्रभु से प्रार्थना करने लगे और उन की दयामयी सेविका लोना बाई उस मृत बच्चे को गोद में लेकर बैठ गई और उस के सिर पे हाथ फेरने लगी। गुरु जी ने बच्चे के मुँह में जल डाल दिया। जल के बच्चे के शरीर के भीतर जाते ही बच्चे केश्वास चलने लगे और थोड़ी देर में उसने आंखें खोल दी। सेठानी प्रसन्नता और प्रेम से पुलकित हो गई और बच्चे को लेकर अपने घर गई। बच्चा उस दिन से अच्छा होने लगा और शीघ्र ही अच्छा हो गया। सेठानी गुरु जी की परम भक्त हो गई। उसने बहुत सारा धन श्री गुरु रविदास जी को भेंट करना चाहा, परन्तु गुरु जी ने उस धन स्वंय स्वीकार न करके धन को दीन-दुखियों की सहायता में खर्च करने का उसे उपदेश दिया। पीछे सेठानी ने आग्रह करके गुरु जी के सत्संग भवन में एक अन्न क्षेत्र खोल दिया था। उसके द्वारा साधु संतों और भूखों को भोजन मिलता रहा।

जो बोले सो निर्भय,
श्री गुरु रविदास महाराज की जय ॥

****

सतिगुरू रविदास महाराज जी और सतिगुरू कबीर महाराज जी की गोष्टी

एक समय की बात है कि सतिगुरू रविदास महाराज जी की शोभा सुन कर सतिगुरू कबीर महाराज सतिगुरू रविदास महाराज जी के पास आए और सतिगुरू रविदास महाराज जी ने सतिगुरू कबीर महाराज जी का बहुत सम्मान किया। सुंदर आसन दे कर आदर से बिठाया तथा जल-पान से सेवा की। फिर उन्होंने उनके आने का कारण पूछा।

सतिगुरू रविदास महाराज जी बोले, ''महाराज जी अपने आने का कारण बताओ, मैं आप जी की क्या सेवा कर सकता हूँ।'' सतिगुरू कबीर महाराज जी ने कहा, ''महाराज जी, आप जी की कीर्ति सुन कर हम आप जी के पास आए हैं। आप जी के पावन मुख से सत्संग ज्ञान सुनने की बहुत इच्छा थी।'' सतिगुरू रविदास महाराज जी ने सतिगुरू कबीर महाराज जी के वचन सुन कर प्रश्न किया,''हे महाराज जी आप हमें यह बताओ कि मनुश्य रात दिन में कितने सवास लेता है।'' सतिगुरू रविदास महाराज जी बोले, ''मनुश्य रात दिन में इक्कीस हज़ार छः सौ सवास लेता है।'' सतिगुरू कबीर महाराज जी सतिगुरू रविदास जी का उत्तर सुन कर बहुत खुश हुए और बोले, ''महाराज जी इस मनुष्य शरीर में कितने रोम है।'' सतिगुरू रविदास महाराज जी ने उत्तर दिया, ''इस शरीर में साढ़े तीन करोड़ रोम है।'' सतिगुरू कबीर महाराज जी फिर प्रश्न किया, ''महाराज जी, कृपा करके यह बताओ कि जीव कहाँ से आया है और कहाँ जाएगा।'' सतिगुरू रविदास महाराज जी बोले, ''यह जीव अगम से आया है, निगम से होकर अगम में ही पहुँच जाएगा।'' सतिगुरू कबीर महाराज जी अपने प्रश्नों का उत्तर पाकर संतुष्ट हो गए और सत्संग चर्चा में मगन हो कर सतिगुरू रविदास महाराज जी से लगातार प्रश्न करते जा रहे थे। कुछ समय बाद सतिगुरू कबीर महाराज जी ने फिर प्रश्न किया कि,''हे अन्तर्यामी महाराज जी विशय किस प्रकार शांत होते है।'' सतिगुरू

रविदास महाराज जी ने उत्तर दिया, ''महाराज जी जब जीव परमात्मा के नाम भजन में लीन हो जाता है, विषय भली-भांति शांत हो जाते है। उस समय परमानंद में मगन हो जाते है।'' सतिगुरू रविदास महाराज जी का उत्तर सुन कर सतिगुरू कबीर महाराज जी ने फिर प्रश्न किया कि, ''मोक्ष किसको कहते है।'' सतिगुरू रविदास महाराज जी उत्तर देते हुए बोले, ''इच्छाओं, मनोकामनाओं की निवृति ही मोक्ष है, जब यह प्राणी इच्छाओं को अपनी आशक्ति को त्याग देता है, उस समय यह मोक्ष अवस्था को प्राप्त कर लेता है। इच्छाओं के कारण ही जीव देह बंधन में पड़ता है। मोक्ष प्राप्त हो जाने पर यह जीवन जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाता है।'' फिर सतिगुरू कबीर महाराज जी ने प्रश्न किया, ''शरीर और आत्मा का मुख्य स्थान रूप क्या है?'' ''शरीर में भूंकुटी(नाभि) मध्य अंदर आत्मा निवास करती है और ज्योति रूपी है। गुरू कृपा हो जाने पर यह जीवन अपने निजी स्वरूप के दर्षन करके आनंदमई हो जाता है।'' सतिगुरू कबीर महाराज जी सतिगुरू रविदास महाराज जी का सत्संग सुन कर प्रसन्न हुए और बोले, ''सतिगुरू रविदास महाराज जी आप तत्व ज्ञानी हो। आप ज्ञान के सागर और साक्षात भगवान् हो। आप जी की सदा ही जय हो।'' यह कह कर सतिगुरू कबीर महाराज जी चलने लगे और सतिगुरू रविदास महाराज जी ने अपनी कठवत (कुठोती) में से जल तूंबी में भर कर दिया। फिर कहा,''महाराज जी यह प्रसाद है। इसको ग्रहण करो'' फिर सतिगुरू कबीर महाराज जी प्रणाम करके तूंबी लेकर चल पढ़े।

* * *

कमाली को ज्ञान की प्रप्ति

सतिगुरू कबीर महाराज जी को जब सतिगुरू रविदास महाराज जी ने जो अमृत जल दिया था। उस समय सतिगुरू कबीर महाराज जी के दो संतान थी, एक लड़की जिसका नाम कमाली और लड़के का नाम कमाल था। कमाली भगवान् की भक्त थी, उसने सतिगुरू रविदास महाराज जी का बहुत यश सुना था। कमाली ने जब देखा कि पिता जीमेरे सतिगुरू रविदास महाराज जी के दर्शन करके आ रहे हैं, उनके पास से अमृत जल तूंबी में ले कर आए तो अपने

पिता जी से वह तूंबी ली जो बचा अमृत जल वह कमाली ने पी लिया। सतिगुरू रविदास महाराज जी के दिये हुए अमृत जल को पीते ही कमाली को तीन लोक का ज्ञान हो गया। तीनों लोकों का ज्ञान हो जाने पर कमाली को सब कुछ दिखाई देने लगा।

मुलतान शहर में आग लगी हुई थी, तो कमाली कुँए से जल भर कर बाहर को फेंकने लगी, जिस कारण लगी हुई आग बुझ जाए। देखने वाले लोक सारे बहुत हैरान थे, कि कमाली पानी के डोल भर-भर के कहाँ फेंक रही है। जब आग बुझ गई तो कमाली ने पानी फेंकना बंद कर दिया तो लोगों ने पूछा, पता नहीं लगा कि जो कमाली ने पानी फेंका वह कहाँ गया। फिर कमाली ने लोगों को कहा कि वह पानी मुलतान शहर में आग लगी थी, वहाँ गया, उस पानी से आग बुझाई, लोगों ने मुलतान शहर में पता किया जा कर तो सच में यह बात हुई। लोग बहुत हैरान हुए, कमाली को पूछने लगे कि आपने कौन-सी बड़ी भक्ति की है, जिस के साथ आपकी दिव्य दृष्टि खुल गई, ज्ञान हो गया कि पता लगा, कि मुलतान शहर में आग लगी हुई है। तो कमाली ने कहा मुझे मुक्ति मिली है, सतिगुरू रविदास महाराज जी के अमृत जल पीने से। मेरे पिता जी तूंबी में लाये थे। सतिगुरू कबीर महाराज जी ने जब यह बात सुनी तो प्रसन्न हुए। सतिगुरू रविदास महाराज जी के अमृत जल और उनकी भक्ति की प्रसिद्धि चारों ओर फैल गई।

* * *

जगत् गुरू रविदास महाराज जी की शरण में कमाली का जाना

जिस समय कमाली को दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हो गई तो कमाली ने सतिगुरू रविदास महाराज जी के पास जा कर गुरू मंत्र गुरू दीक्षा लेने का निर्णय कर लिया।

यह सोच कर कमाली जी सतिगुरू रविदास महाराज जी के पास पहुँच गई। सतिगुरू रविदास महाराज जी के पास पहुँच कर विधिपूर्वक प्रणाम किया और फूलों की माला पहना कर महाराज जी की पूजा अर्चना की।

सतिगुरू रविदास महाराज जी यह जानते थे कि कमाली देवी को दिव्य

दृष्टि की प्राप्ति हो चुकी है, इसी लिए यह हमारे पास आई है। सतिगुरू जी सारी बात जानते हुए भी पूछने लगे, ''कि कुमाली देवी पुत्री अपने आने का कारण बताओ, किस लिए आए हो।'' कमाली देवी बोली,''भगवान् आप तो सभी के मन की जानते हो, आप जी की शरण में आई हूँ , मेरा उद्धार करो, कृपा करो महाराज जी।'' सतिगुरू मुझे ऐसा उपदेश करो, जिसके साथ मेरा जीवन सफल हो जाए, तभी सतिगुरू रविदास महाराज जी ने कहा, ''पुत्री जितनी भी रिद्धियां-सिद्धियां है वह जीव आत्मा को बंधन में डालती है, दिव्य दृष्टि की सिद्धी प्राप्त हो जाने के साथ कोई भी मोक्ष गति प्राप्त नहीं कर सकता और जीवन आत्मा के जीवन का लक्ष्य जन्म-मरन के चक्कर से मुक्ति प्राप्त करनी है। हे पुत्री यह जीव जन्म-जन्मात्रों से काल के बंधन में पड़ी हुई है। जन्म-मरन का दु:ख भोग रही है। पुत्री, जब तक यह जीव आत्मा अपने शुद्ध रूप के दर्शन न कर ले , तब तक यह दिव्य दृष्टि शांति को प्राप्त नहीं कर सकती।'' पुत्री कमाली, शरीर में उस आत्मा को जितना वियोग का अभ्यास होता है, उतना पुरुष शरीर में नहीं होता। जब तक अपने सच्चे पति परमेश्वर को प्राप्त न कर लें, यह आत्मा सच्चे सुख को नहीं प्राप्त सकती। कमाली इस शरीर को पाकर संसारिक पति को परमात्मा के प्रति मूर्तिमान कर उस की सेवा करते हुए सच्चे पति परमात्मा का ध्यान करना चाहिए, तभी इस शरीर से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्ति कर सकते है। पुत्री, पति को परमेश्वर जानकर जो स्त्री अपने पति के सिवाए किसी अन्य पुरूश का ध्यान न कर केवल परमात्मा का ही ध्यान करती है, वह स्त्री तीनों लोकों की पूजा करती है। सतिगुरू रविदास महाराज जी ने इस तरह कमाली देवी को शुद्ध ज्ञान सुना कर उसका अज्ञान दूर कर दिया। फिर हरि हरि महा मंत्र की दीक्षा दी। कमाली देवी सतिगुरू रविदास महाराज जी के अमृत वचन सुन कर और गुरू मंत्र प्राप्त कर धन्य हो गई, जिस के प्रताप से वह जीवन का सुख भोग कर मोक्षगति को प्राप्त हो गई।

''संत रविदास मिले गुरू पूरे, मन की घुंडी खोले।
कहि कमाली सुन रे मीरा, गुरू अमृतवाणी बोले।।''

संत कमाली जी

* * *

जगत् गुरु रविदास महाराज जी की जूनागढ़ (गुजरात) में एतिहासिक महानता

गुजरात राज्य के ज़िला जूनागढ़ तहसील विशादपुर के एक गाँव सरसई जिस को जगत् गुरू रविदास महाराज जी की चरण स्पर्श प्राप्त है। इस पावन धरती पर जगत् गुरू रविदास महाराज जी ने करीब चार-पाँच वर्ष व्यतीत किए और वहां की संगतों को सत्य का उपदेश दिया। इस पावन स्थान को श्री गुरू रविदास आश्रम ''गंगा कुण्ड'' के नाम से जाना जाता है। इस पवित्र धरती पर सतिगुरू जी के आने के बारे में बहुत सारे लेखकों ने अपनी पुस्तकों में लिखा संत भाण दास जी ने बताया कि श्री गुरू रविदास आश्रम गंगा कुण्ड जो कि गाँव सरसई तहसील ज़िला जूनागढ़ में स्थित है। यह कुण्ड जंगल से करीब 5 किलोमीटर नज़दीक है। करीब 2500 मील के क्षेत्र में घना जंगल है। जंगली क्षेत्र में इस गाँव में सतिगुरू रविदास महाराज जी ने चार-पाँच वर्श व्यतीत किए और यह अमृत कुण्ड स्थापित किया। कई बार जंगल के शेर भी इस कुण्ड में से जल पी कर जाते है। इस पूजनीय स्थान पर एक 600 वर्ष पुराना पेड़ है जो सतिगुरू जी ने अपने कर कमलों से लगाया हुआ है। गौड़ला के महाराजा भगवत जी ने सतिगुरू रविदास जी से प्रभावित हो कर यह कुण्ड बनाया था।

समय के ब्रह्मणवादी सोच के धारणी लोगों ने इस कुण्ड का नाम-निशान मिटा दिया था और इस के नज़दीक ही भैरों जति मन्दिर की उसारी करवा दी थी। इस जगह पर जाति-पाति का आज भी बोलबाला है। महन्त भाण दास जी ने बताया कि वह इस स्थान पर करीब 40 वर्ष से सेवा निभा रहे है। इस आश्रम की आरंम्भिक उसारी मेरे गुरू श्री 108 संत नाजा राम जी ने करवाई थी जो ग्रहस्थी संत थे और इस आश्रम की उसारी करके अपने पुश्तैनी गाँव केसवाला तहसील गंढ़ल ज़िला राजकोट गुजरात चले गए थे। वहां ही संसारिक यात्रा करते हुए पाँच भूतक शरीर को त्याग गए थे। संत जी बहुत मिशनरी और तपस्वी थे।

इस पावन स्थान पर वर्ष में दो बड़े समागम होते है और भारी दीवान सजते है। पहला समागम जगत् गुरू रविदास महाराज जी के आगमन पूर्व पर

मनाते है। शोभा यात्रा का आयोजन किया जाता है। संगतें अपने धार्मिक ग्रंथ अमृतवाणी सतिगुरू रविदास महाराज जी की और महाराज जी के स्वरूप आगे अरदास निवेदन करके हाथों में हरि के निशान साहिब पकड़ कर चलते है। यह षोभा यात्रा 5 किलोमीटर के क्षेत्र में परिक्रमा करती है,

जिन में अहमदाबाद, बड़ौदा, सूरत, मैसाणा, गाँधी नगर, भाव नगर, अम्बरेली, जूनागढ़, गिरसोमनाथ, राजमोट, गुरिन्दर नगर, जाम नगर, कच्छ भुज इलाके और भारतवर्ष की संगतें अपने-अपने साधनों के द्वारा भजन मण्डलियां ले कर आते है। यह शोभा यात्रा सुबह से षाम 5 बजे तक चलती है। कीर्तन शब्द वाणी पढ़ी जाती है।

दूसरा समागम सावन महीने की समाप्ति पर 24 भादों को मनाते है। इस स्थान पर सावन महीना खत्म होने से एक दिन पहले गंगा प्रगट होती है। इन समागमों में इलाके की संगतें, संत महापुरूश,भजन मण्डलियां बहुत ही उत्साह के साथ पहुँचते है। यहां एक बड़ा हॉल यात्री निवास जिस में 12 कमरे यात्रियों की सुविधा के लिए बनाए है जिस में बाथरूम, स्नान घर की सुविधा है।

जहां ही सिकन्दर लोधी के दो मौलवी गुरू जी के दर्शन करने के लिए आए थे जिन के नाम हज़रत नवरंग षाह और हज़रत अवरंग शाह था। उन की कब्रें भी आश्रम के नज़दीक ही है। मुसलमान (पठान) लोग आज भी इस पावन स्थान की पूजा करते है।

गुरू जी के कुण्ड से जल लेकर प्रसाद तैयार करते है। यहां वर्णनयोग है कि सिकन्दर लोधी की स्वंय जीवनी पुस्तक में 9, अप्रैल 1509 ई. सिकन्दर लोधी गुरू जी के पास आए थे।

जूनागढ़ ज़िले में नागर संत नरसी महिता पण्डित थे जो जन्म से गूंगा और बहरा था। उस के माता पिता कई वैद्यों के पास ले कर गए पर कहीं से भी ठीक न हुआ। आखिर किसी के कहने पर उस के दादी-दादा ने सतिगुरू रविदास महाराज जी के चरनों में निवेदन किया। जैसे ही सतिगुरू रविदास महाराज जी ने नरसी महिता के सिर पर हाथ रखा पण्डित नरसी महिता सतिगुरू जी की कृपा के साथ बोलने और सुनने लग पड़ा। एक ओर कथा अनुसार इस इलाके

में कणकई नगरी में कणकचावड़ा नाम का राजा सतिगुरू के चरणों में आता था।

* * *

जगत् गुरू रविदास महाराज जी की पंजाब यात्रा तथा एतिहासिक स्थान खरास (चक्की) और अमृत गंगा खुरालगढ़ साहिब

सतिगुरू रविदास जी महाराज अपनी वृद्ध अवस्था में सन् 1515 ई में बँटवारे से पहले पंजाब की धरती पर विश्व के कल्याण हित आरम्भ हुई यात्रा दौरान पहुँचे। सतिगुरू जी लुधियाना से फगवाड़ा आकर ज़िला होशियारपुर तहसील गढ़शंकर के एक छोटे से पहाड़ी क्षेत्र के गाँव कुराली में पहुँचे। सतिगुरू जी कुछ समय के लिए जी.टी.रोड फगवाड़ा में रूके जहां अब देखने योग्य स्थान श्री गुरू रविदास मन्दिर नज़दीक चक्कहकीम बना है। जहां हर वर्ष अशाढ़ की सक्रांति पर बहुत धार्मिक समागम भी होते हैं।

गाँव कुराली जो खुरालगढ़ के नाम से जाना जाता है। यह गाँव महाराज बैन सिंह की रियासत का एक गाँव था। महाराज बैन सिंह संत मीरा भाई जी के रिश्ते में मौसा लगते थे। राजा बैन सिंह कड़व एंव निर्दयी स्वभाव का था और अपने ब्राह्मणवादी हुक्मों को सख्ती से लोगों पर लागू करता था। इलाके की संगते अत्याचार के कारण दबे हुए शूद्र समाज उसके इन अत्याचारी हुक्मों से तंग परेशान थे। कोई भी धार्मिक आगू या संत महापुरुष उस की रियासत में नहीं आता थे क्योंकि वह बहुत दण्ड देता था। इस बात के बारे में सतिगुरू रविदास जी महाराज को पता चला था।

महाराज जी गाँव कुराली में गए। इस इलाके में लोगों को सत्संग के माध्यम से उपदेश दिए। अधिक गिनती में संगते आने लगी। महाराज जी ने इस नगर में उस समय के बुर्जुग बाबा धन्ना जी और बाबा देविया जी के घरों को अपने मुबारक चरनों के साथ पवित्र किया। महाराज जी इस नगर में चार वर्ष से ज़्यादा समय जहाँ पर रहे है।

महाराज जी के संत मत के बढ़ते हुए प्रचार को देखते हुए समय के

ब्राह्मणवादी लोगों से यह देखकर रहा नहीं गया, उन्होनें महाराज जी की शिकायत महाराज बैन सिंह के पास की। महाराज बैन सिंह क्रोधित हो उठा और तुरंत सतिगुरू जी को पकड़ कर जेल में बंद करने का शाही हुकम सुना दिया। राजा के सिपाहियों ने बाबा देविया जी जो उस समय चौंकीदार थे, उनके कच्चे घर में से सतिगुरू जी को साथ ले गए। सारी बसती शूद्र लोगों की ही थी और घर भी कच्चे थे। संगतों के कहने पर भी राजा के सिपाही नहीं रूके। गुरू जी को साथ लेकर ही गए। सतिगुरू जी को ले जाकर राजा की कचहरी में हाज़िर किया। राजा ने गुस्से में कहा यह है, वह संत जो शूद्रों को नाम जपने का उपदेश देता है। इसकी इतनी हिम्मत कैसे? इसने महाराजा बैन सिंह की रियासत में पाँव रखने और धर्म प्रचार करने की हिम्मत और हौंसला कैसे किया। हमारे धार्मिक ग्रंथों की तौहीन (अपमान) कर रहा है।

''ढोर गंवार शुद्र पशु नारी,
ये सब ताड़न के अधिकारी''

की संहितों के अनुसार इसको सख्त से सख्त सजा दी जाए। इसकी जेल में सरकारी खरास (आटा पीसने की चक्की) चलाने के हुकम दिए जाते है। सिपाहियों ने सत्य वचन कह कर राजा के हुकमों की पालना करते हुए सतिगुरू जी को जेल में बंद कर दिया और एक बहुत बड़े खरास वाली चक्की हाथ से चलाने के लिए दे दी। ज़ेल के अधिकारी हैरान हो गए, कि सतिगुरू जी की कृपा के साथ यह खरास खुद ही चलने लगे और जेल में ताले लगने के बावजूद भी सतिगुरू जी जेल में से बाहर आते-जाते दिखने लगे। जेल अधिकारियों ने इसकी सूचना राजा बैन सिंह को दी। वह समय पर आकर हैरान हो गया। राजा का अहंकार टूट गया और महाराज जी की शरण में आ गिरा तथा कहने लगा महाराज जी आप धन्य हो मुझे क्षमा कर दीजिए। मेरे पापों को क्षमा कर दीजिए। मैं गुनाहगार हूँ। फिर मैं कभी किसी संत-महापुरुष को तंग नहीं करूँगा। किसी भी गरीब पर अत्याचार नहीं करूँगा।

राजा ने गुरू जी से दीक्षा (नाम-दान)की दात ली और शिष्य बना।

फिर राजा और वहाँ की संगतों ने निवेदन किया कि महाराज जी हमें इस पहाड़ी इलाके में पानी की बहुत कमी है, कोई भी फसल उपजाऊ नहीं होती

काल पढ़ चुका है, आप दया करो। महाराज जी ने कहा आप शूद्रों की बसती में बीबी गुरदासी है, उसके घर से गेहूँ के दाने ले कर आओ। जब सिपाही बीबी गुरदासी के घर गए वहाँ उस से गेहूँ के दाने मांगे तो बीबी गुरदासी ने कहा अंदर मिट्टी की मटकी है, उसमें कोई दाना नहीं है। सिपाहियों के तलाशी लेने पर वह मटकी सतिगुरू जी की कृपा से भरी हुई मिली। बीबी गुरदासी भी हैरान रह गई। सिपाही दाने लेकर सतिगुरू जी के पास पहुँचे, बीबी गुरदासी भी पीछे ही धन्य-धन्य करती पहुँच गई। सतिगुरू जी ने बीबी गुरदासी को आर्शीवाद दिया और सारे ही दाने खरास में डालने के लिए कहा। सतिगुरू जी की कृपा के साथ प्रबंधको के अनुसार यह खरास सवा साल चलता रहा और आटा भी खत्म नहीं हुआ। इस इलाके में अकाल की स्थिति खत्म हो गई और घर-घर में अनाज मिलने लगा। फिर महाराज जी वहां से उत्तर दिशा की तरफ़ गए करीब एक किलोमीटर वहां अपने पावन चरनों से एक पत्थर को हिलाया, यहां से अपने आप पानी निकलने लगा। हैरानी की बात यह है, कि यह पानी गहराई से ऊँचाई की दिशा में चलने लगा। सारी संगतों को सच का उपदेश देते हुए सतिगुरू जी राजस्थान को चल पड़े। आज यहां के पावन स्थान पर लोग श्रद्धापूर्वक आते है और सतिगुरू रविदास मंदिर बनाए गए है। देश-विदेश से संगतें वैशाखी के पर्व पर आती है। एतिहासिक स्थान खरास और खुरालगढ़ साहिब पूजने योग्य स्थान है। संत बाबा सुंदर दास रमता जी ने विशेष सेवाएं निभाई है। दास (कांशी राम कलेर) ने स्वंय संत बाबा रमता जी के साथ फ़रवरी 1993 में गाँव जंडू सिंघा में बातचीत की थी। (हवाला श्री गुरू रविदास जीवन और किरतां पन्ना-5) लेखक डॉ. लेख राज प्रवाना एस.ई.पी.ऍच.डी. एल.एल.बी.। यहां वर्णन योग्य है।

* * *

सतिगुरू रविदास महाराज जी की संत नरसिंह महिता पर कृपा

संत नरसिंह महिता जी जिन को सरल भाषा में नरसी महिता जी भी कहते है। गुजरात राज्य के ज़िला जूनागढ़ के गाँव तलाज़ा में संत नरसिंह महिता जी का जन्म संमत् 1479 ई. के लगभग पिता श्री कृष्ण दमोदर दास जी के ग्रह में

माता बीबी लक्ष्मी गौरी की पवित्र कोख ब्रह्मण समाज में हुआ। जिस का कुछ पुस्तकों में वर्णन मिलता है।

आप के एक ओर बड़े भाई थे जिन का नाम वंसीधर था जो उस समय पुलिस में उच-अधिकारी थे। बचपन में ही इन के माता-पिता की मृत्यु हो गई थी और दादा जी का भी देहांत हो चुका था। आप जी की उम्र करीब 5 वर्ष और बड़े भाई की उम्र 22 वर्ष थी। आप जी का पालन-पोषण दादी जयकुम्बरी जी और बड़े भाई वंसीधर ने किया। नरसी महिता बचपन से ही गूंगा और बहरा था। परिवार बहुत चिंत्तित था। सारे वैद्यों के पास इलाज करवाया ठीक न हुआ। आखिर किसी के कहने पर सरसई (जूनागढ़) के अमृत कुण्ड पर पहुँचे। नरसी की आयु आठ वर्ष की हो चुकी थी। पर वह न कुछ बोलता और न ही कुछ सुनता था। जब माता जयकुम्बरी जी अपनी एक ओर पड़ोसन को साथ ले कर नरसिंह के साथ जाती है कि वह क्या देखती है कि तपस्वी और तेज़स्वी संत परमात्मा रूपी जो नाम वाणी में रंगे हुए भजन बन्दगी कर रहे है। उन का परमात्मा रूपी नूर सहा नहीं जा रहा था। माता ने नमस्कार की और बच्चे का सिर पकड़ कर झुकाया। महाराज सतिगुरू रविदास जी की अचानक समाधि खुली तो माता जयकुम्बरी ने निवेदन किया कि गुरूदेव मेरा यह पौत्रा बचपन से ही गूंगा और बहरा है हम सभी जगह दिखा चुके है पर किसी वैद्य, किसी ब्रह्मण या संत के पास से ठीक नहीं हुआ। आप जी की महिमा सुन कर आई हूँ आप कृपा करो ।

''गुरू की लखो दयालता,
सतिगुरू कियो पसार।।''

सतिगुरू रविदास महाराज जी अमृतवाणी के पावन वाक्यों के अनुसार सतिगुरू जी दयालु, कृपालु और दया के सागर थे। उन की दृष्टि इस बच्चे पर पड़ी। उन्होंने बच्चे को अपने पास बिठाया उस का मस्तिष्क देख कर अपनी शक्ति के साथ बताया कि यह बालक एक दिन पूर्ण संत होगा और ब्राह्मज्ञानी महापुरुष बनेगा। सतिगुरू रविदास महाराज जी ने 'हरि' का सिमरन करते हुए अपना हाथ उस बालक नरसी पर रखा तो कहा बोलो बेटा सतिनाम बालक को सुनने लग पड़ा और वह बोलने लग पड़ा और कहा सतिनाम। जितनी भी

संगतें वहां हाज़िर थी सभी हैरान हो गई। गुरू जी के चरनों में पड़ गए और जय गुरू देव उचारने लगे। सतिगुरू जी ने कहा कि इस बालक को बुरा-भला नहीं बोलना, यह संत माला का मनका है। इस प्रकार यह परिवार सतिगुरू जी के सेवक बन गए। गूंगे बच्चे के मुखरविंद से परमात्मा का नाम सुन कर बूढ़ी माता जयकुम्बरी कितनी खुश हुई होगी? इस का वर्णन नहीं किया जा सकता। यहां उन सभी ज्योतिषों फेल हो गए जो यह कहते थे कि यह बालक ठीक नहीं हो सकता। महाराज जी ने इस को ठीक ही नहीं किया बल्कि अपनी दिव्य-दृष्टि और आत्मिक शक्ति पर परमारथी चढ़ाई द्वारा यह भी बता देना कि यह बालक पूर्ण ब्राह्मज्ञानी होगा। जो बाद में सच हो गया।

माता जयकुम्बरी धन्यवाद करती हुई बोली महाराज जी मेरा पौत्रा पुलिस का उच-अधिकारी है और हमारे नागर कुल में ओर भी बहुत ऊँचे-ऊँचे अफ़सर है आप कोई सेवा का मौका दीजिए और यह भी हुकम करो कि आप को किस वस्तु की ज़रूरत है। महाराज जी हँस पड़े और कहा बीबी हमने वस्तुओं का क्या करना है हमें किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है।

सतिगुरू जी ने तो पारस की चिंत्ता न की वह ओर क्या मांग सकते थे। जहां वर्णनयोग्य है कि नागर जाति के लोगों का सात विभागों में गुजरात में पूरा बोलबाला और सुनवाई थी। यह ही कारण था कि संत नरसिंह के बड़े भाई वंसीधर की नियुक्ति भी नागर जाति के कारण हुई होगी। पूरे परिवार और नगर में खुशी की लहर थी। इस के बाद बहुत लम्बी कहानी है नरसिंह को पढ़ने के लिए भेजा जाता है। वैरागी मन पढ़ाई में नहीं लगता, शादी कर दी जाती है। लड़का-लड़की पैदा होते है। नरसिंह के भक्ति भाव और संत बिरती को बड़े भाई की पत्नी पसंद नहीं करती। भाई को भड़का कर भाई के विरूद्ध करती है। अन्त में संसारिक झमेलों में से निकल कर नरसिंह हरि भक्ति में ही मगन हो जाता है और पूर्ण संत का रूतवा प्राप्त कर लेता है। सतिगुरू रविदास महाराज जी की हुई भविष्यवाणी मुत्ताबिक नरसिंह तो पूर्ण संत नरसिंह महिता बन कर संतों वाला जीवन व्यतीत करते है। यह पूर्ण गुरू रहमतों का वर्णन है।

***

परमानंद बैरागी को उपदेश

कांशी में परमानंद नाम का एक बैरागी रहता था। उसे अपनी भक्ति पर बहुत घमंड था। अंधविश्वास और कर्मकांड़ों में लिप्त परमानंद बैरागी गुरू रविदास महाराज जी की प्रसिद्धि से बहुत ईर्ष्या करता था। वह किसी भी ढंग के साथ गुरू रविदास महाराज जी को नीचा दिखाना चाहता था। स्वंय को महान् बताने के लिए एक दिन अपने कुछ श्रद्धालुओं के साथ परमानंद बैरागी मोतियों की भरी हुई थाली को लेकर गुरू रविदास महाराज जी के दरबार में आया। जब यह थाली गुरू रविदास महाराज जी को देनी चाही तो गुरू रविदास महाराज जी ने यह लेने से इन्कार करते हुआ कहा, कि परमानंद जी इतनी भक्ति करने के बावजूद अभी भी आपके मन में से माया का मोह नहीं गया। इसी लिए इस को अपने पास रखो या फिर किसी गरीब ज़रूरतमंद को दे दीजिए। हमारे तो यह काम की नहीं है। न ही हमें इसकी कोई ज़रूरत है। यह कष्टों की खान कहते हुए महाराज जी ने कहा कि :

''धन संचय-दु:ख देत है धन त्यागे सुख होए।
रविदास सीख गुरदेव की धन मति जोरे कोए।।''

परमानंद बैरागी को ध्यान से सुनते हुए देखकर महाराज जी ने फिर उच्चारण किया कि :

''सच्चा सुख सत् धर्म मंहि धन संचय सुख नाहि।
धन संचय दु:ख खान है रविदास समझ मन माहि।।''

इस मार्ग दर्शन श्लोक को सुनकर परमानंद बैरागी का अहंकार टूट गया और वह प्राश्चित की आग में जलने लगा। परमानंद बैरागी श्रद्धालुओं सहित गुरू रविदास महाराज जी को प्रणाम कर उनकी महिमा का गुणगान करते हुए अपने मन्दिर वापिस आ गया। मन से ईर्श्या, झूठे कर्मकांडों को त्याग कर परमानंद बैरागी एक सच्चा संत बन गया।

***

रुपवती का प्रसंग

शहर मुल्तान में एक परमात्मा की भक्ति से नि:पुन परिवार था जिस के सभी सदस्य परमात्मा का भजन सिमरन करके सदैव अपने परिवार में खुशी भरा जीवन व्यतीत कर रहे थे। इस परिवार में एक रुपवती देवी थी जिसको परमात्मा के साथ बहुत लगन थी। वह हर समय सोचती रहती कि उस को परमात्मा के दर्शन किस तरह होंगे। प्रभु भक्ति, मन की सच्ची लगन, परमात्मा के साथ सच्चा प्यार, उस को रस्ता ज़रुर मिलना था।

एक दिन उस को अकाश वाणी हुई और परमात्मा ने हुकम नामा उस की नज़रों में भेजा और सत्गुरु रविदास महाराज जी का स्वरुप दिखा था। सीर गोवर्धनपुर काशी का पूरा दृश्य दिखाई दिया और इशा राहु आ कि तुम्हारा पूर्ण गुरु काशी में है। उनके पास जाकर नाम भजन लेकर अपना मन निहाल करो। लड़की होने के कारण अकेली इतना सफर नहीं कर सकती थी। उसने अपने पिता को अपने साथ जाने के लिए तैयार किया। कई दिनों का सफर करके सीर गोवर्धनपुर काशी में पहुँचे। सत्गुरु रविदास महाराज जी अपने स्थान पर बैठे प्रभु भक्ति में लीन थे। कुछ समय बाद महाराज जी ने समाधि बंद की और देखा कि कुछ श्रद्धालु संगत उनका इंतज़ार कर रही है।

सत्गुरु जी ने रुपवती और उसके पिता को दूर से चल कर आए थके हुए देख कर पहले उनका हाल पूछा। महाराज जी के मुख (चेहरा) पर नूरानी नूर की चमक देख कर रुपवती ने एक दम उठ कर महाराज जी के चरनों में नमस्कार की और निवेदन किया कि हजूर सच्चे परमात्मा मुझे आप जी के अपने घर दर्शन हुए थे और मन में आप जी के दरबार में नमस्कार करने के लिए तृष्णा उत्पन्न हुई और अपने पिता जी की मदद से मैं भाग्यशाली आप जी के दर्शन कर रही हूँ।

सतिगुरु जी जाणी-जान थे कि उस भाग्यशाली रूपमती को नाम-दान दे कर इस समुद्र रुपी संसार में से पार करना है। साहिब सत्गुरु जी ने अमृतकुंड में से एक चुलू भरकर रुपवती को अमृत पिलाया और उसे प्रभु का ज्ञान हो गया एंव उस की खुशी का कोई अंत न रहा। इस तरह नाम-दान प्राप्त करके

कुछ दिन महाराज जी के दरबार में सेवा की और वापिस मुल्तान शहर को आ गई।

घर आकर रुपवती ने सारे घर के सदस्य को अपने सत्गुरु रविदास महाराज जी की महिमा सुनाई और उनके सचखंड वाले शब्द जो सत्संग में सुने थे सभी का विस्तार पूर्वक अर्थ करके समझाया जिससे रुपवती के परिवार वाले सत्गुरु रविदास महाराज जी की महिमा के शब्द घर में गाने लगे। कुछ समय बाद रुपवती ने अपने पिता को कहा कि वह अपने गुरु का लंगर करना चाहती है जिस में वह संत गोरख नाथ और उनके शिष्य को भोजन छकाना चाहती है। पिता की आज्ञानुसार पूरे परिवार ने भण्डारे की तैयारी शुरु की और रुपवती ने अंतर ध्यान हो कर सत्गुरु रविदास महाराज जी को याद किया और दर्शन हुए। सत्गुरु जी से आज्ञा मिली और लंगर छकाने के लिए लोगों को बुलाया गया।

संत गोरख नाथ के बड़ी संख्या में सेवक होने का उसे घमंड हो गया और उसने कहा कि सतिगुरु रविदास जी की सेवक बन कर रुपवती इतना भण्डार कहां से पैदा करेगी। यह सारा लंगर तो मेरी चिप्पी(बरतन) मेंही समा जाएगा। इस बात के बारे में रुपवती को पता चला। उसने फिर भी संत गोरख नाथ को बुलाया कि वह अपने सेवकों के साथ आ कर भोजन छके। अब शहर के सभी लोग लंगर में सेवा करने के लिए कुछ न कुछ आटा-दाना लेकर आए। रुपवती की एक सहेली थी। उसके घर बहुत गरीबी थी। आटा-दाना न होने के कारण उसने अपनी गाय का ताज़ा दूध लाकर रुपवती के लंगर के लिए दिया। संत गोरख नाथ अपने सेवकों के साथ भोजन छकने के लिए आ गए। रुपवती ने कई प्रकार के खाने तैयार किए थे और सतिगुरु जी के हुक्म अनुसार आरती अरदास करके लंगर छकाया जाने लगा। हज़ारों की संख्या में संत गोरख नाथ के सेवकों ने लंगर छका और सारे नगर निवासियों ने भी लंगर छका और लंगर उतना ही रहा कोई कमी नहीं आई। अहंकारी संत गोरख नाथ ने रुपवती को कहा कि मेरी एक शर्त है कि अगर आप मेरी चिप्पी दूध से भर देगी तो मैं तुम्हें पूर्ण गुरु वाली मान लूँगा। अगर मेरी चिप्पी न भरी तो तुम्हें आज ही मुझे गुरु धारण करना पड़ेगा। पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर चुकी जानी-जान

रुपवती ने दूध से भरे बरतन उठाया और संत गोरख नाथ की चिप्पी में गंगा की धार जैसे दूध डाला और चिप्पी दूध से भर कर उछलने लगी। संत गोरख नाथ का अहंकार टूट गया और सभी सत्गुरु रविदास महाराज जी की जय-जय कार करने लगे।

***

कुंभ के शुभ अवसर पर गुरु जी का गंगा जी के लिए भेंट भेजना

दोहरा

अवर कहो इतिहास को भगवन जस सुख दानि॥
हरिद्वार यात्री मिल आये, तिन दर्शन जन केरे पाये॥
तिन को पूछा लखि रविदासा, जाहु कहां तुमहीं सुख रासा।
ब्रह्मकुंड गंगा इस्नाना। नहावन चल तहां हम जाना।
तब रविदास बचन अस भाखे। कीजै काज हठी मन राखे।
ऐक छिक्षाम हमारा लीजै। भेटा गंगा की वहि दीजै।
हमरे नाम नलेहि पसारी। नहि दीजै तुम अैसे डारी।

जगत् गुरु रविदास जी महाराज का नाम बनारस शहर और आस-पास के इलाकों में बहुत प्रसिद्ध हो चुका था। एक बार कुछ यात्री पंडित गंगा राम जी के साथ हरिद्वार में कुंभ के पर्व पर ब्रह्मकुंड में स्नान करने जा रहे थे। जब वे बनारस पहुंचे तो उन के मन में प्रेम उमड़ आया कि श्री गुरु रविदास जी से भेंट करके फिर आगे को चलेंगे। श्री गुरु रविदास का निवास स्थान पूछ कर सीरगोवर्धनपुर में पहुंच गए। सामने ही श्री गुरु रविदास जी महाराज बैठे थे। सभी यात्री दर्शन करके बहुत प्रसन्न हुए। तब श्री गुरु रविदास जी ने पूछा कि कहिए आप कहां जा रहे हो? तब पंडित गंगा राम ने बताया कि हम हरिद्वार में कुंभस्नान के लिए जा रहे है। जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने यात्रियों से कहा कि गंगा जी के लिए मेरी ओर से यह कसीरा ले जाओ और यह भेंट, गंगा जी को तब देना जब वह हाथ निकाल कर ले, नहीं तो इसे वैसे ही मत देना। श्री गुरु रदिवास जी की भेंट यात्रियों ने प्राप्त की और हरिद्वार को चलते भये। चलते-चलते कुछ दिनों में यात्री लोग हरिद्वार पहुँच गये। हरिद्वार पहुँच

कर क्या देखते हैं कि गंगा जी के तट पर यात्रियों की बहुत भारी भीड़ लगी हुई है। वह यात्री भी गंगा जी के तट पर पहुँचा तो गंगा जी में स्नान किया। इसके पश्चात् पंडित गंगा राम ने कहा कि हे माता गंगा जी! आपके लिए एक कसीरा सतिगुरू रविदास जी ने प्रेम भेंट (आर्शीवाद) भेजी है। हे माता गंगा जी! अपना हाथ बाहर निकालें और इस भेंट को स्वीकार करें। पंडित गंगा राम जी के मुख से ज्यों ही आवाज़ निकली, ठीक उसी समय जल में से गंगा जी ने प्रकट हो कर दर्शन दिया और कसीरा लेने के लिए अपना हाथ निकाला। पंडित गंगा राम ने कसीरा हाथ पर रख दिया। सभी लोग इस आश्चर्यजनक दृश्य को देख कर जगत् गुरु रविदास जी महाराज हैरान भी हुए और स्वंय को धन्य समझने लगे कि हमें गंगा जी का दर्शन हो गया। मन ही मन जगत् गुरु रविदास जी महाराज की जय जय कार करने लगे कि उन की कृपा से ही हमें गंगा जी का दर्शन हुआ है। गंगा जी ने अपने हाथ का एक हीरे जड़ित कंगन श्री गुरु रविदास जी के लिए भेंट किया और गंगा राम से कहा कि यह मेरी भेंटा गुरू रविदास जी के चरणों में पहुँचा देना जिन्होंने मुझे कसीरा आर्शीवाद के रूप में भेजा है और कहा कि मेरी ओर से कहना कि मैं धन्य हो गई जो आप ने मुझे याद किया।

दोहरा –

ले कंगन अति हर्ष युत, देखत सब विसमाद॥
अैसे न कबहुँ भयो, गंगा को प्रसादि॥

गंगा राम सहित सभी यात्री बहुत हैरान हुए कि इस प्रकार आज तक किसी को गंगा जी ने इस प्रकार सआदर भेंट नहीं दी। गंगा जी का दर्शन करके अ ौर स्नानपान करके पंडित गंगा राम खुशी–खुशी कुछ दिनों में वापिस घर पहुंच गया। पंडित गंगा राम ने अपनी प्रत्यक्ष दर्शन की सारी गाथा कह सुनाई। जो कंगन गंगा जी ने दिया था वह अपनी पत्नि के हाथ दे दिया। कंगन को घर पर गप्त रूप में रख लिया गया। कुछ दिनों के बाद पुरोहित गंगा राम जी की पत्नि ने कहा के हे पतिदेव इस कंगन को बाज़ार में बेच दिया जाए। यह बड़ी कीमत में बिक जाएगा। पैसे लेकर अपना जीवन मजे से बिताएँगे। हमें किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहेगी। जब पुरोहित गंगा राम वह कंगन बाज़ार

बेचने के लिये गया तो कंगन की जितनी कीमत थी उस की कीमत के बराबर किसी के पास रुपया न था, जो भी सराफ कंगन को देखता था वह हैरान हो जाता था और कहता था कि ऐसा कंगन हम ने पहले कभी नहीं देखा। इस में अ नोखे हीरे जवाहरातों की जड़त की हुई है।

दोहरा -

तब कुटवारै सुध दई वाकै हाट विकाए।

भुखन कंगन हाथ को बेचत जन इक आए॥

इस बात की ख़बर पुलिस के पास पहुँच गई कि एक आदमी ऐसा कंगन बेच रहा है। पुलिस के सिपाही पुरोहित को पकड़ कर राजा के पास ले गए। राजा के पूछने पर पुरोहित ने सारी कथा कह सुनाई कि यह कंगन गंगा माता जी के हाथ का है और माता जी ने यह प्रेम भेंट अपने श्रद्धेय गुरू श्री गुरु रविदास साहिब जी के चरणों में पहुंचाने के लिए कहा था। सारी वार्ता को सुन कर राजा बहुत हैरान हुआ। बादशाह ने कहा कि श्री गुरु रविदास जी को यहां बुलाया जाए और उन से इस बात का पूरा निर्णय किया जाए। तब श्री गुरु रविदास जी को आदरसहित सभा में बुलाया गया और कंगन की बात पूछी। गंगा जी हर समय सतिगुरू रविदास महाराज जी के चरणों में बहती थी।

श्री गुरु रविदास जी ने कहा कि हे राजा! यह बात कोई बड़ी बात नहीं है। अभी एक बर्तन में गंगा जल डाल कर और कंगन उस में डाल कर ऊपर से कपड़ा देकर ढांप दें। मन चंगा तो कठौती में गंगा। गंगा जी इस बात का सारा फैसला कर देंगी। जिस प्रकार श्री गुरु रविदास जी ने कहा था सारी सामग्री उसी ढंग से तैयार कर दी गई। तब श्री गुरु रविदास जी ने गंगा जी को यह निर्णय करने के लिए कहा। जब पर्दा बर्तन के ऊपर से उठाया गया तो ये दो कंगन हो गए। राजा और बाकी लोग यह सब देखकर बहुत प्रसन्न हुए। श्री गुरु रविदास जी ने वह दोनों कंगन उस पुरोहित को दे दिये। जितने लोग श्री गुरु रविदास जी का पहले विरोध करते थे इस समय सब उन के प्रेमी बन गए। इस घटना से श्री गुरु रविदास जी का यश तीनों लोक में फैल गया। सभी लोग श्री गुरु रविदास जी की जय जय कार करने लगे। कई जगह ऐसा प्रकरण भी लिखा है कि राजा अपनी रानी और वजीरों सहित श्री गुरु रविदास जी के दर्शन के लिए आया। श्री गुरु रविदास जी से राजा ने उस कंगन के साथ का दूसरा

जिसकी रानी मांग कर रही थी, देने के लिए श्री गुरु रविदास जी से प्रार्थना की। गुरु जी ने वह शिला जिस पर जूता बनाने का काम करते थे उस को पीछे हटा कर कहा 'मन चंगा ते कठौती में गंगा' तो राजा देखता है कि शिला के नीचे गंगा जी का प्रवाह बह रहा है। उस कंगन के साथ के असंख्य कंगन गंगा जी की धारा में बहे जा रहे हैं। यह देख कर राजा और रानी गुरु जी के शिष्य बने। पीछे वाले प्रसंग की कथा कहीं-कहीं कुछ अंतर से दूसरी तरह भी लिखी प्राप्त होती है। जब रानी ने कहा कि मुझे इस कंगन के समान एक और कंगन अवश्य मंगवा कर दो। तब राजा गंगा जी के तट पर आया। अनेक प्रकार से पूजा करके उस कंगन के साथ का दूसरा कंगन मांगा परन्तु गंगा जी की ओर से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। तब राजा ब्राह्मणों को साथ लेकर श्री गुरु रविदास जी की कुटिया पर आ पहुँचे। बहुत विनम्र भाव से श्री गुरु रविदास जी से दूसरे कंगन की के लिए प्रार्थना की। श्री गुरु रविदास जी ने कहा हे राजन! जितने चाहो कंगन ले लो। तब जिस शिला पर जूते बना रहे थे उस को थोड़ा हटाया और गंगा जी को कहा कि राजा को कंगन दो। शिला के नीचे गंगा जी का प्रवाह देखकर सभी बहुत आश्चर्य चकित हुए। गंगा जी एक-एक उछाल के साथ उस कंगन के समान कई कंगन बाहर फैंक रही हैं। यह सब चमत्कार देख कर राजा बहुत हैरान हुआ और जगत् गुरु रविदास जी महाराज के चरणों में गिर कर नमस्कार करने लगा। साथ आए ब्राह्मणों ने भी गुरु जी के चरण पकड़ लिए। राजा श्री गुरु रविदास जी का सेवक बन गया और गुरु जी में बहुत श्रद्धा रखने लगा। राजा ने कहा कि ज्ञानी, भक्त और संत राजाओं के भी राजा हैं।

* * *

रानी झाली की कथा

जगत् गुरु रविदास जी महाराज की महिमा को सुन कर और पवित्र जीवन को देख कर बहुत से राजा और रानियां आप के शिष्य बन गए थे। एक बार झाली नाम की रानी चितौड़ से काशी में गंगा स्नान के लिए आई। उसने श्री गुरु रविदास जी का नाम सुना तो दर्शन के लिए उन के स्थान पर गई। जगत् गुरु रविदास जी महाराज के मुख से सत्संग सुन कर उसका मन शांत हो गया।

जगत् गुरु रविदास जी महाराज की शिष्या बनने की उसमें परमश्रद्धा उत्पन्न हुई। रानी ने जगत् गुरु रविदास जी महाराज से प्रार्थना की कि मुझे अपनी शिष्या बना लीजिए।

गुरु जी ने रानी को बार-बार मना किया कि मैं चमार हूं और आप क्षत्रिय वंशी हैं। आप किसी ब्राह्मण की शिष्य बन जाओ। रानी झाली ने बहुत हठ किया और प्रतिज्ञा की कि आप को ही गुरु बनाऊँगी। ऐसा किये बिना अन्न जल ग्रहण नहीं करूँगी। श्री गुरु रविदास जी ने फिर कहा कि अपने से ऊँची जाति वाले का शिष्य होना चाहिए। तब झाली ने फिर प्रार्थना की कि गुरु बनाने में जाति को कोई नियम नहीं है। केवल ब्रह्मज्ञानी गुरु का होना नियम है।

ब्रह्मवेता की जाति चाहे अपनी जाति से नीची समझे जाने वाली हो तो भी उस से ग्लानि नहीं करनी चाहिए। उन से उपदेश लेकर अपना मोक्ष रूप काम सिद्ध करना चाहिए। जैसे चन्दन का वृक्ष छोटा होता है और वह अपनी सुगन्धि से सब को चन्दन बना देता है। बांस बड़ापन के अहंकार से सुगन्धि ग्रहण नहीं करता और वह चंदन नहीं बन पाता है, वैसे ही भक्त और महात्मा लोग उपदेश द्वारा सब की मुक्ति करते हैं।

इसलिए ब्रह्मवेता की जाति का विचार नहीं करना चाहिए। इस प्रकार प्रेम भाव के विचार कह कर गुरु रविदास जी को प्रसन्न किया। श्री गुरु रविदास जी ने झाली रानी को उतम अधिकारी समझ कर अपनी शिष्य बनाया। गुरु जी के वचन सुन रानी उनके चरणों में गिर पड़ी। कुछ दिनों के बाद गुरू जी से आज्ञा लेकर वापिस चितौड़ गई और अपनेपति को सब हाल सुनाया। रानी झाली के पति के मन में भी गुरु के प्रति श्रद्धा उत्पन हुई। रानी ने अपने पति से निवेदन किया कि श्री गुरु रविदास जी को अपने राजमहल में बुलाओ।

श्री गुरु रविदास जी का सत्संग करवाओ जी। राजा संग्राम सिंह (राणा सांगा) जी ने रानी की बात मानी और अपने वजीरों को श्री गुरु रविदास जी को बुलाने के लिए भेजा। गुरु जी को सम्मान सहित चितौड़ में बुलाया गया। चितौड़ में बहुत सुन्दर सत्संग हुआ और सब का चित्त शांत हुआ। इस के बाद रानी ने बहुत धन खर्च करके एक भंडारा किया। दूर दूर से ब्राह्मण समाज को

आमंत्रित किया। यह भी कहा कि सब को एक-एक स्वर्ण की मोहर दक्षिणा में दी जाएगी। असंख्य लोग भंडारे में पहुंच गये। जब भंडारा तैयार हो गया तो पंक्तियों में सब लोग बैठ गये तब जाति अभिमानी ब्राह्मणों ने सब को सिखाया कि चमार के चेले राजा, रानी का भोजन मत करो। पंक्तियों में से सभी ब्राह्मण उठ कर खड़े हो गए। सबने कहा कि हम चमार के साथ भोजन नहीं करेंगे।

राणा कहे सुनो रे भाई,
मोरे तो मन इहै सुहाई।
करनी हीन सू मधिम सोई,
करनी करै सो उनाम होई॥
उनिाम मधिम करनी माहिं,
मानष देह कहूँ उनिाम नाहिं।
काम क्रोध लालच नौ द्वारा,
ऐठी तन मैं सबै चमारा॥
उनिाम वही जिनूं यो जीता।
ब्राह्मण किनै वालमीक कीता॥
जाति पांति का नहीं अधिकारा।
राम भजै सो उतै पारा॥
नाहिं कछु तुम्हारै सारै,
उठी विप्र जाहू अ पनै द्वारौ।
विप्र बहुरि मनि मंह दुषपावै।
करोध करै रानी डरपावै॥

तब विप्रों ने कहा कि पहले भोजन हम करेगें। तब इस के पश्चात् जैसी आप की मर्ज़ी हो वैसे करें। तब राणा ने कहा कि

राणी कहयो नाहिं मन धीजै,
गुरु पहल तुम्ह कौ क्यूं दीजै।

इस प्रकार बहुत वाद-विवाद होने लगा। तब जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने एक शिष्य को भेजा और कहा :

हमरे नाहिं हारू अरू जीति।

इन्हकी तुम राषो रसनीति ॥

कि मुझे हार जीत से कोई मतलब नहीं है जैसे इन की रीति है उस के अनुसार ही इन को भोजन करवा दो। गुरु जी की आज्ञा पाकर भोजन परोसा गया। प्रभु की लीला अैसी भई कि आप (श्री गुरु रविदास जी) जी विराट रूप धारण हो कर एक-एक विप्र के साथ बैठ कर भोजन करने लगे।

सबहिं कै संग जीमन बैठा,
इनि वापै उनि वापै डीठा ॥
सब को अचिरज भयो तमासा।
जेते विप्र तेते रविदासा ॥

जितने विप्र बैठ कर भोजन कर रहे थे जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने अपने उतने ही शरीर धारण किये। यह देख कर जातीय अभिमानी बहुत हैरान हुये और यह सोचा कि यह लीला जगत् गुरु रविदास जी महाराज की है, जो ईश्वर के साक्षात् स्वरूप हैं।

सबहिन कै मनि उपजी लाजा,
साध सतायौ किया अकाजा।
जे वे कोप करै हम ऊपरि।
तौ अब ही जाहिं सकल जरि बरि ॥
हम अपराधी वो जन पूरा।
उन के साहिब रहत हजूरा ॥
इहै संत हम एसा पापी।
भगतन सौ लरि एसी थापी ॥
साचे हरि सांचै हरि जनां,
यौ पश्चाताप कियौ ब्राह्मणां।

तब ब्राह्मणों ने कहा कि हमने अज्ञानता वश यह अपराध किया है। श्री गुरु रविदास जी पूर्ण महापुरुष है और परमात्मा सदैव उनके साथ रहते है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे श्री गुरु रविदास और भगवान में कोई अन्तर नहीं है।

दोहा

धनि धनि साहिब तू बड़ा अरु बड़े तुम्हारे दास।

जाति पाति कुल कछु नहीं ब्राह्मण भये उदास ॥

सब विप्रों ने आपस में विचार करके जगत् गुरु रविदास जी महाराज का शिष्यत्व ग्रहण कर लिया। रानी झाली जी को साथ लेकर सब ने कहा कि हम से बहुत भूल हुई है। गुरु जी ने सब विप्रों को कहा कि प्रभु जी की भक्ति करो।

जगत् गुरु रविदास जी महाराज की अमृतवाणी को सुन कर विप्र कहने लगे कि:

विप्र कहें तू गुरु हमारा अपनी तोरि जनेऊ डारा।

माथै हाथ देहु अब स्वामी, इस सेवग तुम अन्तरजामी।

आप हमारे गुरु है, आप सर्वज्ञ है, आप अर्न्तयामी है, आप हमारे सिर पर अपना हाथ रखो जी। तब गुरु रविदास जी ने सब को आर्शीवाद दिया। सब संगत को बहुत प्रसन्नता हुई। सब लोगों ने मिल कर जगत् गुरु रविदास जी महाराज की जय बुलाई और सब ने प्रभु भक्ति का मार्ग अपना लिया :

जाति पाति पूछो मति कोई,

हरि को भजै सो हरि कै होई ॥

(लंगर प्रथा भाई जोध सिंह (पब्लिकेशन ब्यूरो पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला) की ओर से रचित 'भगत रविदास-जीवन ते रचना' चौथा भाग, वर्ष 2000 के पन्ना 5 अनुसार मैकालिफ और अन्य सभी जीवनकारों ने लिखा है कि "लंगर में अब भेटा बहुत आने लग गई और आप ने एक अच्छा सा घर बी बनवा लिया। संगत जो दर्शन करने आती उनके ठहरने के लिए एक सराय भी बनवाई। आज लंगर में सभ एक पंगति में बैठ कर भोजन खाते हैं।")

***

जगत् गुरु रविदास जी महाराज और उनकी शिष्य मीरा बाई

मीरा जी के जन्म स्थान मेहड़तियो के इतिहास एंव राठौरों के भाटों की बहियों द्वारा मीरा जी का जन्म श्रावण सुदी एकम शुक्रवार 1498 ई. माना गया है। बचपन में मीरां की माता का देहान्त हो गया था। मीरा इकलौती संतान थी। बाल्यकाल में मीरा को न भाई बहन का साथ मिला न माता पिता का दुलार

प्यार । इन के पिता रतन सिंह राणा सांगा के साथ तत्कालीन राजनैतिक उथल पुथल एंव प्रतिदिन के युद्धों में उलझे रहते थे । अत: मीरा का पालण-पोषण दूदा जी रतन सिंह के पिता की देख रेख में हुआ था। स्वभावत: मीरा के मानस पटल पर अपने दादा की भक्ति भावना का प्रभाव पड़ना ही था । संम्वत् 1566 में राजा संग्राम सिंह (राणा सांगा) चितौड़ की गद्दी पर बैठे इनकी पत्नी राणी झाली झालावार के राजा की कन्या रत्नकुंवरी भी प्रभु भक्त थी। सं० 1567-1568 के लगभग इन्होंने काशी जा कर ये जगत् गुरु रविदास जी महाराज के शिष्य बने। चितौड़ के राणा सांगा के परिवार ने आश्रम बना कर जगत् गुरु रविदास जी महाराज को भेंट किया। इधर मेड़ता से प्रभु भक्त दूदा जी श्री गुरु रविदास जी के चितौड़ स्थित आश्रम में आाध्यात्मिक सम्मेलनों में सत् उपदेश सुनने के लिए आया करते थे। (संभववत्: मीरा जी भी श्री गुरु रविदास जी के सत्संग में चितौड़ आई हो) जिस से उसे बचपन में ही प्रभु भक्ति का मार्ग मिला।

रानी झाली का पुत्र कुंवर भोजराज अपनी माता के समान शांत और निचश्ल प्रकृति का मालिक था। कुंवर भोजराज की आयु उस समय लगभग 18 वर्ष की रही होगी। रानी झाली ने अपने पति राणा सांगा की सहमति एंव अपने गुरु रविदास का आर्शीवाद लेकर कुंवर भोज का मीरा से विवाह का प्रस्ताव दूदा जी के सम्मुख रखा था। उन्हें क्यों कर आपति हो सकती थी। दोनों परिवार सम्बन्ध सूत्र में बन्ध गए। वैसाखी के पर्वोत्सव पर सन्त रविदास की उपस्थिति में कुँवर भोज राज और मीरां का विवाह सम्पन्न हुआ। मीरां की आयु उस समय 18 वर्ष की थी। इस के बाद ही मीरां ने अपने पति एंव सास रानी झाली की अनुमति से सन्त रविदास का शिष्यत्व ग्रहण किया।

चतौड़गढ़ की 18 फुट ऊँची पहाड़ी पर विजय स्तम्भ के समीप सात फुट ऊँचे चबूतरे पर राणा कुम्भ द्वारा निर्मित कुम्भ श्याम मन्दिर के खूले प्रागण में सत्संग चलता था। चितौड़ के इसी प्रांगण में ही ''पद घुंघरु बांध मीरा नाची रे'' के अनुसार प्रभु प्रेम में नाचती गाती थी। संत कमाली जी जगत् गुरु रविदास जी महाराज की प्रति उचारी वाणी

संत रविदास मिले गुरू पूरे, मन की घुंडी खोले।

कहि कमाली सुन रे मीरा, गुरू अमृतवाणी बोले ।।

संत कमाली जी

जगत् गुरु रविदास जी महाराज की महिमा में संत मीरा जी ने उच्चारण किया :

गुरु रविदास मिले पूरे धुर से कलम मिती ।।

समय परिवर्तनशील है। मीरां के भाग्य में गृहस्थ जीवन भोगना विधाता ने नहीं लिखा था। ऐसा होता भी क्यों? भक्ति के क्षेत्र में दिग् दिगन्त व्यापी यश: सौरभ कैसे फैलता। राजस्थान के शून्याकाश में मीरां के घुंघरुओं की झंकार अ ाज भी झंकृत होती है और उसके विरह रस में सराबोर मधुर गीत आज भी राजस्थान की घाटिओं और रेगिस्तान में प्रति ध्वनित हो रहे हैं। ई. 1521 में कुँवर राजा भोज का अकस्मात् देहान्त हो गया। सम्मत् 1585 (जनवरी 1528) में राणा सांगा का बावर के साथ कानवाहा युद्ध में देहान्त हो गया। राणा सांगा के पुत्रों-रतन सिंह और विक्रमजीत में चितौड़ की गद्दी हथियाने के लिए संघर्ष प्रारम्भ हो गया। मीरा और राणी झाली विधवा हो गई। रानी झाली पति की मृत्यु के बाद किस अवस्था में रही इतिहास इस विषय में मौन हैं। परन्तु मीरा का अपने श्री गुरु रविदास जी के साथ अटूट सम्बन्ध जुड़ा रहा। कुंभ श्याम से सटे मीरा मंदिर के साथ गुरु रविदास छतरी का निर्माण संभवत: मीरा और राणी झाली के प्रयत्नों से तत्कालीन परिस्थितियों में ही सम्भव हो सका होगा। इस छतरी के नीचे श्री गुरु रविदास जी के चरण चिन्ह है और छत के निचले भाग में श्री गुरु रविदास जी द्वारा बहुचर्चित पंच विकारों की प्रतिमा एक प्रस्तर शिला पर उत्कर्षित है। राणा सांगा की मृत्यु के पश्चात् मीरा को पारिवारिक यात्नाओं का सामना करना पड़ा। ऐसा भी कहा जाता है कि विक्रमजीत ने आधी रात के समय मीरा को चितौड़गढ़ के नीचे बहती हुई गांभीरी नदीं में गिरवा दिया। परन्तु धन्य श्री गुरु रविदास जी की दया से मीरा का कुछ भी बिगड़ा नहीं। वह नदी के प्रवाह में से इसी प्रकार बाहर निकली जिस प्रकार सोना अग्नि में से शुद्ध हो कर निकलता है। मीरा अब भगवत् भजन और साधू सेवा निडर होकर करने लगी। परन्तु राणा विक्रमजीत को इनके यहां साधुओं की भीड़ का लगा रहना न सुहाया। उनके

अपने भरोसे की दो सहेलियों चम्पा और चमेली को इनके पास तैनात कर किया कि वो मीरा को साधुओं के पास बैठने से रोकती रहें। मीरा बाई की संगत् के प्रभाव से उन दोनों पर भी गुरुभक्ति का रंग चढ़ गया और वे दोनों मीरां बाई की सहायक बन गई। यही दशा और सहेलियों और दासियों की हुई जो मीरां जी को वर्जित करने और चौकसी के काम पर नियत की गई। अंत में राणा ने यह कठिन काम अपनी बहिन ऊदाबाई (मीरा बाई की ननद) को सौंपा और वह कुछ समय तक अपने कर्त्तव्य को बड़ी तनदेही से अंजाम देती रही। दिन में कई बार मीरा बाई के महल में जाकर उस को समझाती और रोकटोक करती थी। अपने इन सम्बन्धियों के व्यवहार का वर्णन मीरा ने अपनी वाणी में भी किया है। इस के पश्चात् राणा ने मंत्रियों की सलाह के अनुसार मीरां जी को विष देकर मार देने की योजना बनाई। मीरा बाई जी को एक विष का कटोरा भर कर गुरु रविदास चरणामृत के नाम से भेजा गया। ऊदाबाई इस भेद को जानती थी उन्होंने मोह वश होकर मीरा जी को सब हाल कह दिया और विष पीने से रोकना चाहा परन्तु मीरा जी ने कहा जो पदार्थ श्री गुरु रविदास जी के चरणामृत के नाम पर आया है, उस का परित्याग करना गुरु भक्ति के विरुद्ध है और उसे माथे को लगा कर बड़े उत्साह के साथ पी गई। इस से मीरां बाई जी को भक्ति का दुगुना रंग चढ़ गया। ऐसी भक्ति का कमाल देखकर ऊदाबाई भी उस की सखी बन गई। एक बार राणा ने एक नाग (सांप) पटारी में बन्द करके मीरा बाई के पास भेजा कि यह तेरे लिये हीरों जड़ित हार है। जब मीरा जी ने श्री गुरु रविदास जी का नाम लेकर उस पिटारी को खोला तो वह नाग हीरों का जड़ित हार बन गया।

कविता

गरल पटायों सो तो सीस लै चढ़ायऔ
संग त्याग विष भारी ताकी घार न संभारी है।
राणां नै लगायो चर, बैठे साधु ढिग ठर,
तब ही खबर कर मारों यहै धारी है।
राजै गिरिधारी लाल, तिन्ही सों रंग जात
बोलत हँसत खयाल कानपरी प्यारी है।

जाय के सुनाई, भई अति चपलाई,
आयों लिये तलवार दे किबार खोलि न्यारी है।

कवित

जाके संगि रंगभीजि, करत प्रसंग नाना,
कहां वह नर गयो, वेग दै बताइयै।
आगे ही बिराजै, कुछ तो सो नाहि लाजै,
अभै देखि सुख साजै, आंखैं खोलि दरसाइयै।
भयोई खिसानौ राणा, लिखयौ चित्र भीत मानो,
देख्यौ हूँ प्रभाव एपै भाव मैं न भिद्यौ जाई,
बिनां हरिकृपा कहौ कैसे करि पाईयै।

मीरा जी को राणा ने विष भेजा तो वह सीस पर चढ़ कर पान कर गई। उसके पश्चात् राणा ने प्रतिहारों से कहा कि तुम यह मर्म लो। जब मीरां किसी बैरागी के साथ एकांत में बैठी हो तब शीघ्र आ कर समाचार करो। उसी क्षण आकर उस को मार डालूँगा। एक बार मीरा को गुरु जी का दर्शन हुआ। वह गुरु जी से हँस हँस कर बातचीत कर रही थी। एक प्रतिहारी ने जाकर राणा को कहा कि मीरा किसी से हँसी वार्ता कर रही है। राणा तलवार लेकर आया और आवाज दी कि खोल किवाड़! मीरा ने दरवाजा तत्कालीन खोल दिया। राणा मीरा जी के साथ किसी मनुष्य को न देख कर कहने लगा तू जिस के संग रंग भीज के अनेक प्रेम प्रसंग करती थी वह मनुष्य कहाँ है? शीघ्र बता। आपने उत्तर दिया कि मनुष्य आप के आगे ही विराजमान है और दरवाजा खुलते ही उस को बिजली के समान तेज प्रकाश दिखाई दिया जिस से राणा बेहोश होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और होश में आने पर मीरा जी से अपनी भूल की क्षमा मांगी।

कवित

विषई कुटिल एक भेष धरि साधू लियौ,
कियौं यौं प्रसंग मौसौं अंग संग कीजियै।
आज्ञा मोंकी दई आप लाल गिरिधारी,
अहों सीस धरि लाई करि भोजन हूँ लीजियै।

संतनि समाज मैं विछाय सेज बोलि लियौ,
सेत मुख भयौ, विषैभाव सब गयौ
नयौ पायन पै आप, मोकों भक्तिदान दीजियै।

एक दिन की विचित्र वार्ता सुनिये। एक विषई पापी दुष्ट साधु का भेष धारण किये हुए आपके पास आकर कहने लगा कि मुझे परमात्मा ने स्वंय आज्ञा दी है कि तुम जा कर मीरा को पुरुष संग का सुख दो। मीरा ने उत्तर दिया कि आज्ञा मेरे शीश पर है,

प्रथम भोजन तो कर लीजिए, मैं सेवा को उपस्थित हूँ। आप संतों के समाज में सेज बिछवा कर उस पुरुष से बोलीं कि आप इस पलंग पर सुखपूर्वक बिराजिये और मुझे भी आज्ञा दीजिये, जब प्रभु की आज्ञा है ही तो अब शंका किस की? आइये निशंक रस रंग में डूब के अंग संग कीजिये। मीरा जी के वचन सुन उस का मुख फीका पड़ गया। उस के तो रही न जान तन में काटो ते न लहू था बदन में। वह मीरा जी के चरणों पर गिर कर भक्ति का दान मांगने लगा। अन्ततः सम्वत् 1603 में द्वारिका स्थित रणछोड़ के मन्दिर में नाचती गाती मीरा बेहोश होकर गिर पड़ी और उठी नहीं सदा के लिए अपने प्रियतम में समा गई।

(राधा स्वामी सतिसंग बियास की ओर से 'मीरां-प्रेम दीवानी' वर्ष 1999 के पन्ना 26 पर लिखा है कि 'सतिगुरू रविदास महाराज जी की शिष्य संत मीरां बाई की शख्शीयत का अकबर पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिस कारण उसके मन में सहनशीलता की भावनाएं पैदा होनी शुरू हो गईं। इन भावनाओं के कारण ही अकबर ने एक सर्ब-सांझा धर्म चलाने का यतन किया।)

***

जगत् गुरु रविदास जी महाराज की शिष्या कर्मा बाई

कर्मा बाई जी की प्रसिद्धि दूर दूर तक फैली हुई थी। सारे संत समाज में से महापुरुष उनको मिलने के लिए आते थे। ऐसे ही एक रोज़ एक महापुरुष आए और कहने लगे कि कर्मा बाई हर रोज़ भगवान तुम्हारे घर भोजन करने के लिए आते है। आप कैसे भगवान के लिए भोजन तैयार करती हो? कर्मा बाई ने अपने सीधे स्वभाव के अनुसार कहा कि मैं परमात्मा का सिमरन करते

करते ही भोजन बनाती हूँ, खिचड़ी बनाती हूँ। जिस समय भोजन तैयार हो जाता है, परोस कर रख देती हूँ। भगवान आकर भोजन कर जाते हैं। वे महापुरुष कर्मा बाई से कहने लगे कि तुम्हें भोजन तैयार करने से पहले स्नान करना चाहिए, जिन लकड़ियों के साथ आग जलाती होती हो उनको धोकर, सुखा कर और लेप-पोच करके फिर भोजन तैयार करना चाहिए। यह बात सुनकर कर्मा के मन में वियोग लग गया कि मैंने तो कभी ऐसा सोचा ही नहीं।

कर्मा बाई ने दूसरे दिन लकड़ियों को धोकर रख दिया, स्नान किया, चौंके को लेप-पोच किया और भोजन तैयार करने लगी। भगवान् हर रोज़ की तरह नियत समय पर आए और देखा कि कर्मा ने भोजन अभी तैयार नहीं किया था वह वापिस चले गए भगवान फिर आए लेकिन भोजन अभी भी तैयार नहीं था। कुछ देर बाद कर्मा ने भोजन तैयार कर लिया और परोस दिया। भगवान आए, भोजन किया और जब हाथ साफ कर रहे थे और उनके हाथों और मुँह पर अभी खिचड़ी लगी हुई थी कि उसी समय स्वामी रामानंद जी के दरबार में भी भोजन तैयार करके भोज लगाने के लिए रख दिया गया और रामानंद ने भगवान को बुला लिया। अकसर ऐसा होता है कि भोजन तैयार कर कर कपड़े से ढांप दिया जाता है और भगवान का आह्वान किया जाता है। जब भगवान जल्दी में आए तो रामानंद जी ने देखा कि भगवान जी के हाथों और मुंह पर खिचड़ी लगी हुई है। रामानंद जी ने पूछा कि भगवान जी यह खिचड़ी आप कहां से खाकर आए हैं? और आप आज इस रूप में कैसे आ गए? भगवान जी ने उत्तर दिया कि मैं हर रोज़ कर्मा बाई के पास खिचड़ी खाने जाता हूँ। आज किसी महापुरुष ने उसे बहका दिया जिस कारण उसने खिचड़ी देर से बनाई। उसने अभी हाथ धुलाए भी नहीं थे कि आप ने याद कर लिया। मुझे उसी तरह उठकर आना पड़ा, हाथ साफ करने का समय नहीं मिला। यह सुनकर रामानंद जी हैरान हो गए कि कर्मा बाई के घर हर रोज़ भगवान खिचड़ी खाने जाते हैं। स्वामी रामानंद जी कर्मा बाई के घर गए और कर्मा बाई से कहा कि आप हर रोज़ भगवान के लिए भोजन तैयार करती हैं और भगवान हर रोज़ खिचड़ी खाने आप के घर आते हैं। आप ने ऐसी क्या साधना की है? जिसके कारण भगवान आप पर इतने दयालु हैं। कर्मा बाई ने

कहा कि मैंने तो ऐसी कोई साधना नहीं की, गुरु देव जी की बताई हुई मर्यादा के अनुसार उनके द्वारा बताया हुआ नाम सिमरन करती हूँ और भगवान के लिए भोजन तैयार करती हूं। मेरे सतगुरु रविदास जी बहुत दयालु हैं और उनकी ही कृपा से इस दासी को यह सेवा मिली है। तब कर्मा बाई के चरणों में स्वामी रामानंद जी ने निवेदन किया कि कर्मा जिस तरह तेरे घर आकर खुद भगवान तुम्हारे पास बैठकर भोजन करते हैं, मेरे लिए भी भगवान के चरणों में निवेदन करना कि मुझे भी साक्षात् दर्शन दें, मुझे भगवान के पूर्ण दर्शन नहीं होते। अगले दिन जब भगवान् कर्मा बाई के घर आए और खिचड़ी खाने लगे तब कर्मा बाई ने स्वामी रामानंद जी की स्नेह भरी बिनती भगवान के चरणों में की कि स्वामी रामानंद जी ऐसा कहते हैं। भगवान जी ने कहा कि कर्मा उसके मन में कुछ द्वैत है। तुम्हारा स्वभाव सीधा है और अंतर्मन पवित्र है, तुम्हारे मन में किसी के लिए वैर-विरोध नहीं है, तुम्हारा चित शांत है, तुम समदर्शी हो इसी कारण तुम्हें मेरे साक्षात दर्शन होते हैं। कर्मा बाई ने निवेदन किया कि महाराज मेरी आपको विनती है कि आप एक बार स्वामी रामानंद जी को दर्शन जरुर दें। इस तरह स्वामी रामानंद जी को कर्माबाई के निवेदन से भगवान के दर्शन हो गए। कर्मा बाई पर एक दिन भगवान बहुत खुश हुए और कहने लगे कि कर्मा कुछ वर मांग लो। कर्मा बाई कहने लगी कि प्रभु जी मेरी कोई इच्छा नहीं है और न ही मुझे दुनिया के पदार्थों से मोह है। मैं तो महाराज! आपके चरणों की भक्ति ही माँगती हूँ। दुनिया की कोई भी वस्तु सदा रहने वाली नहीं है। मेरे मन में एक ही विचार है कि आप तो अविनाशी है, सदैव रहने वाले हैं। मेरा शरीर तो नाश्वान है सदा रहने वाला नहीं है इसी लिए मैं यह चाहती हूं कि हमेशा के लिए खिचड़ी को भोग इसी तरह से लगता रहे। भगवान कर्माबाई से कहने लगे कि हमेशा ऐसा ही होगा।

***

जगत् गुरु रविदास जी महाराज चरन कुण्ड

एक बार जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने एक भंडारा किया। इस भंडारे में कन्या के रूप में स्वंय गंगा जी आईं। कन्या के अलौकिक रूप पर एक राजा

मोहित हो गया। उस ने जगत् गुरु रविदास जी महाराज के पास संदेश भेजा कि इस लड़की की हमारे साथ शादी कर दो, नहीं तो तुम्हें तोपदम करा दिया जाएगा। जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने ज्यों ही यह बात गंगा जी से कही, गंगा जी ने कहा यह राजा है, यह सीधे ढंग से नहीं मानेगा और परेशान करेगा। इस को बारात लाने को कह दीजिए। राजा धूमधाम से बरात लेकर जगत् गुरु रविदास जी महाराज के द्वार पर आया। लड़की के रूप में गंगा जी सोलह श्रृंगार करके बाहर आईं और राजा को देखते हुए उसी कुण्ड में कूद पड़ी, जिस से कंगन निकाल कर जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने दिया था। गंगा जी कुण्ड में समा गई। कुण्ड सें जल की ऐसी तेजगती धारा निकली जिस में राजा और सारी बरात डूब गई। सब को ज्ञान हो गया कि कन्या के रूप में स्वंय गंगा जी थी, जो जगत् गुरु रविदास जी महाराज के दर्शनों के लिए आई थी।

***

उल्टी गंगा का बहाना

समयानुसार जगत् गुरु रविदास जी महाराज के पिता जी जीवन यात्रा संपूर्ण कर गये तो जगत् गुरु रविदास जी महाराज उनकी पालकी लेकर गंगा जी के किनारे पहुँचे जहाँ उन के अन्तिम संस्कार करने का विचार किया गया था। वहां के पांडे पण्डित इस पर बिगड़ गये और उन्होंने कहा कि यहां से पीछे आधे मील पर आप यह क्रिया कर सकते हैं। सब लोग पालकी पीछे आधे मील पर ले गये। गंगा जी के किनारे पर चिखा (चिता) बना कर अग्नि दी गई। इतने में गंगा जी में एक बड़ी लहर उठी और वह चिखा को अपनी लपेट में ले गई। वहां से गंगा जी का उल्टा प्रवाह आया था। इसलिए इस स्थान का नाम उल्टी गंगा पड़ गया। आज भी उस स्थान की स्थिति वैसी ही दिखाई देती है।

(डा॰ लेख राज परवाना जी)

***

सिकंदर लोधी की साखी

साखी श्री गुरु रविदास जी मिशन में एम॰ आर॰ बहाड़वाल ने सतगुरु रविदास जी और सतगुरु कबीर साहिब जी की जीवन गाथा सिकंदर लोधी जो

उनके समकालीन था) उसके साथ जोड़ा है। सतगुरु कबीर जी को प्रभू भक्ति से रोकने के लिए बहुत प्रयत्न किए गए थे। परन्तु सतगुरु कबीर साहिब जी के ऊपर इस बात का कोई प्रभाव नहीं था। इसके लिए सतगुरु कबीर जी को शराबी हाथी के आगे डाला गया था। लेकिन शराबी हाथी सतगुरु कबीर साहिब को नमस्कार करके वापिस लौट गया। इस के बाद उन्हें जंजीरों से बांध कर गंगा में फैंकवा दिया था। गंगा की लहरों ने उन की बेड़ियो को काट डाला।

इसी प्रकार सिकंदर लोधी ने जगत् गुरु रविदास जी महाराज को सूनी कोठरी में बंद कर दिया। सब प्रेमियों को ऐसा प्रतीत होता था कि जगत् गुरु रविदास जी महाराज जी जैसे कि तख्त पर विराजमान हैं। जेल के अधिकारियों ने जैसे अपनी आंखों से देखा इस से सिकन्दर लोधी को यह मालूम हो गया कि दोनों महापुरुष ब्रह्मज्ञानी है। बादशाह सिकन्दर ने देखा कि मैंने यह गलत किया है। बादशाह ने सतगुरु रविदास जी और सतगुरु कबीर जी से क्षमा याचना की और मुल्ला-मौलवियों को प्रताड़ित किया की कि कोई भी इन महापुरुषों के विरोध में कुछ भी न कहे।

एक बार सिकन्दर लोधी ने जगत् गुरु रविदास जी महाराज को ब्राह्मणों और मुस्लमानों के कहने पर कैद कर लिया। परन्तु जब रात आई तो क्या देखा कि जगत् गुरु रविदास जी महाराज की नूरी शक्ति ने एक जलवा दिखाया। इस दृश्य में बादशाह सिकन्दर लोधी ने देखा कि जगत् गुरु रविदास जी महाराज उन की सहायता करके उनका बचाव कर रहे हैं। इस बात का बादशाह पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। बादशाह को लगा कि उससे यह बड़ी भूल हुई है, जो जगत् गुरु रविदास जी महाराज को उसने जेल में बंद करवाया। अगले दिन सुबह जब बादशाह ने न्याय सभा लगाई तो पहले गुरु जी को जेल से निकाला और गुरु जी से अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी। बादशाह ने जहाँ गुरु जी को जेल में बन्द करवाया था उस स्थान को मस्जिद में बदल दिया, जो आज भी बनारस में मौजूद है। जगत् गुरु रविदास जी महाराज और सिकन्दर लोधी की भेंट के बारे में श्री हरभजन रतन जी ने अपने महाकाव्य (गुरु रविदास महान्) में अपने विचार प्रकट किये हैं। जिन के द्वारा सिकन्दर लोधी का पश्चाताप

प्रकट होता है कि श्री गुरु रविदास जी की महानता के आगे सिकन्दर बादशाह को झुकना पड़ा।

डा॰ धर्मपाल सरीन ने भी लिखा कि जब सिकन्दर लोधी बनारस आया था तो उन्होंने गुरु रविदास जी की बहुत महिमा सुनी। उनकी ख्याति से प्रभावित हो कर उसने गुरु जी को सआदर अपने दरबार में बुलाया। गुरु जी की भक्ति, ज्ञान और अलौकिक तेज को देख सिकन्दर लोधी बहुत हैरान हुआ।

गुरु जी की भक्ति और ज्ञान के कारण समकालीन ब्राह्मण उनसे बहुत ईर्ष्या करते थे। सिकन्दर लोधी से ब्राह्मणों ने शिकायत की। इस शिकायत के फैसले के लिए एक शराबी हाथी को जगत् गुरु रविदास जी महाराज को मरवाने के लिए छोड़ा गया। परन्तु हाथी गुरु जी को प्रणाम करके वापिस चला गया। यह देख कर सिकन्दर लोधी और सब लोग बहुत हैरान हुए। बादशाह सिकन्दर ने ब्राह्मणों को डाँटा और जगत् गुरु रविदास जी महाराज से गलती के लिए क्षमा मांगी।

***

जगत् गुरु रविदास जी महाराज की उदासियां/यात्राएं

जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने भारत देश में अज्ञानी मानवता का मार्गदर्शन करने के लिए, कई वर्षों तक यात्राएं की। परन्तु छूआछात का बोलबाला होने के कारण, उनके सभी स्मृति चिह्न मिटा दिये गए। निर्धन व दूसरों की कृपा पर निर्भर, समाज ने, उनकी स्मृतियों को किस प्रकार संभालना था।

जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने, अपने जीवन आदर्श को, भारतीय समाज तक पहुँचाने के लिए, केवल लिखित वाणी द्वारा ही नहीं, बल्कि भारत के कोने-कोने में जाकर, मनुष्य के सुधार का महान् कार्य आरंभ किया। भारतीय समाज को जात-पात, भेदभाव, निरक्षरता, पाखंडवाद, औरत की हो रही अधोगति जैसे भयानक मसलों से मुक्ति दिलाने के लिए, जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने कई यात्राएं की। विद्वान बुद्धिजीवियों के अनुसार वे यात्राएं हैं -

उदासी-1

1. रानीपुर, मालपी, माधोपुर, भागलपुर, नारायणगढ़, कालपी और नागपुर।
2. बरहानपुर, बीजापुर एवं भोपाल।
3. चंदेही, झांसी, टोड़, बूंदी तथा फिर उदयपुर।
4. जोधपुर, अजमेर तथा फिर बम्बई।
5. अमरकोट, हैदराबाद, काठियावाड़ तथा फिर बम्बई।
6. बम्बई से कराची, जैसलमेर, जोधपुर तथा बहावलपुर।
7. कालाबाग कोहाठ, दर्राखैबर, जलालाबाद।
8. जलालाबाद से काफरस्तान तथा फिर यहां से श्रीनगर।
9. डलहौजी से गोरखपुर (नाथों के साथ वार्तालाप) एवं गोरखपुर से काशीपुर।

* * *

उदासी-2

काशीपुर से गोरखपुर और फिर यहां से प्रतापगढ़, शाहजहानपुर और तत्पश्चात वे हिमालय पर्वत पर चले गए। उन्होंने अपनी सारी संगत को वापिस लौटा दिया तथा आदेश दिया कि उनका पुत्र श्री विजय दास, उनके बाद संगत को नाम/गुरदीक्षा प्रदान करेगा तथा वे स्वयं काफी समय के पश्चात् वापिस लौटेंगे।

इन यात्राओं के दौरान, गुरु जी ने बहुत से क्रांतिकारी परिवर्तन किए। गुरु जी के चरणों में गिरकर, बहुत से पापियों ने, अपने दुष्कर्मों से मुक्ति प्राप्त की, धर्म के अति कट्टड़ ठेकेदारों ने गुरु जी द्वारा दर्शाये गए मार्ग पर चलकर अपना जीवन सफल किया। इसी दौरान गुरु जी ने बहुत से ला-इलाज रोगियों पर भी कृपा की। गुरु जी ने कई अंधे व्यक्तियों को दृष्टि प्रदान की। जो भी प्राणी उनकी शरण में अ ाया, चाहे वह हिन्दु था या मुस्लिम, चाहे वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र था, सभी को गुरु जी ने अपनी कृपालु दृष्टि से एक समान देखा।

* * *

उदासी -3

जगत् गुरु रविदास जी महाराज द्वारा अरब देशों की यात्रा:-

गुरु जी ने प्रत्येक धर्म के मुखियों के साथ विचार गोष्ठियां की तथा असंख्य लोगों को सत उपदेश प्रदान किए। गुरु रविदास जी की अमृतवाणी में प्रयुक्त विभिन्न स्थानों के नाम एवं स्थानों के गहन भेद से यह ज्ञात होता है कि आप ने दूर-दूर तक गमन किया। आप जी के एक शब्द 'बेगमपुरा सहर को नाउ' में अंकित 'आबादान' शब्द पर विचार करें, तो आप जी द्वारा, अरब देशों की यात्रा के संकेत मिलते हैं।

मैं जब जगत् गुरु रविदास जी महाराज की अमृतवाणी की व्याक्या के संबंध में, अमृतवाणी में प्रयुक्त शब्दों के अर्थों को, गहराई से देख रहा था तो 'आबादान' का अर्थ भाई कान सिंह नाभा के महान् कोष में देखकर हैरान रह गया क्योंकि बहुत से व्याक्याकार 'आबादान' शब्द का अर्थ केवल 'आबाद' ही निकालते आए हैं। 'महान् कोष' में इसका अर्थ 'इराक अरब का एक प्रसिद्ध शहर' है। किन्तु लेखक थोड़ा सा चूक गया, क्योंकि खोज करने के उपरांत पता चला है कि आबादान इराक का नहीं बल्कि ईरान का प्रसिद्ध शहर है।

गुरु रविदास जी की अमृतवाणी से यह प्रमाण मिलता है कि गुरु जी ने अपनी वाणी स्वयं, अपने निजी अनुभवों द्वारा ही लिखी है। बाह्म क्रियाओं का आंतरिक अनुभवों से सुमेल कर, श्रोताओं को रूचित करने हेतु एवं जन कल्याण के लिए, अपनी अमृतवाणी को अति सुन्दर ढंग से उच्चरित किया है-

घट अवघट डूगर घणा, इक निरगुणु बैलु हमार॥
रमईए सिउ एक बेनती, मेरी पूंजी राखु मुरारि॥१॥
को बनजारो राम को, मेरा टांडा लादिया जायि रे॥१॥ रहाउ॥

भाव- यदि राम नाम का, व्यापार करने वाला कोई व्यापारी है, तो वह मेरे पास आकर, परमात्मा के राम नाम का व्यापार कर ले। मेरा टांगा परमात्मा के नाम के साथ लदा हुआ है। जिस प्रकार एक गुणहीन बैल के लिए, पहाड़ों का दुर्गम एवं सघन मार्ग तय कर, अपनी मंज़िल को प्राप्त करना कठिन है। उसी

प्रकार सांसारिक जीव के लिए, दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त कर, परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग, अज्ञानता व सांसारिक झूठे बंधनों के कारण अत्यंत खतरनाक पहाड़ी की भांति कठिन एवं जंगल की भांति घना है। इस मार्ग से गुज़रने वाले जीव का, मन रूपी बैल बहुत कमज़ोर है। हे परमात्मा! आप के समक्ष निवेदन है कि सांसारिक जीवों की श्वासों रूपी पूँजी की रक्षा कीजिए जी।

कूपु भरिउ जैसे दादिरा, कछु देसु बिदेसु न बूझ॥
ऐसे मेरा मन बिखिया बिमोहिया, कछु आरा पारु न सूझ॥१॥

(भाव – हे परमात्मा जी, जिस प्रकार कुँअे में रहने वाला मेढ़क, बाह्य दुनिया से बिल्कुल अनभिज्ञ होता है क्योंकि मेढ़क का मन, अज्ञानतावश विषय-विकारों में लिप्त होता है। उसी प्रकार की स्थिति इस जीव की है, जिसका मन अज्ञानतावश, भ्रम रूपी कुँअे में फंसा हुआ है।)

रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार॥
पारस मानो ताबो छुए, कनक होत नही बार॥५॥
परम परस गुरु भेटीऐ, पूरब लिखत लिलाट।
उनमन मन मन ही मिले, छुटकत बजर कपाट॥६॥

भाव-जिस प्रकार यह एक महान् सत्य है कि सूर्य के प्रकाश से, रात्रि का अंधकार दूर हो जाता है। इस तथ्य से संसार के लोग अत्यंत भली भांति परिचित हैं। इस तरह, जब तक जीव के मन में, गुरु के ज्ञान का प्रकाश नहीं होता, तब तक अज्ञानता रूपी अंधकार का नाश नहीं होता। जीव के पूर्व कर्मों को, तभी शुभ समझना चाहिए, जब उसका परस पारस गुरु के साथ मिलन हो जाता है, जिसके मिलने से जीव के अज्ञानता रूपी कठिन द्वार खुल जाते हैं तथा जीव तुरियावस्था में पहुँच जाता है।

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा॥
नीच रुख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा॥१॥

भाव – हे परमात्मा जी! आप इस संसार में चंदन की भांति श्रेष्ठ हो। हम सांसारिक जीव विकारों के कारण, अरिंड की भांति गुणहीन हैं। परन्तु जिस प्रकार चंदन के समीप अरिंड का वास होता है, उसी प्रकार प्रभु जी, हमारा वास आपके समीप है। जिस प्रकार चंदन के समीप रहने के कारण, अरिंड में

भी चंदन जैसी सुगन्धि आ जाती है तथा नीच कहा जाने वाला अरिंड, चंदन जैसा ही उनद्मम बन जाता है। उसी प्रकार परमात्मा जी, आपकी संगत करके, हम आप का ही रूप हो गए हैं।

तर तारि अ पवित्र करि मानीये रे, जैसे कागरा करत बीचारं।।

भगति भगऊतु लिखीये तिह ऊपरे, पूजीये करि नमसकारं।।२।

भाव - जिस प्रकार ताड़ का वृक्ष अपवित्र माना जाता है क्योंकि उसमें नशे के समान (जल) पदार्थ होता है। विचारक ताड़ वृक्ष के पनद्मों से बने कागज़ को अपवित्र समझते हैं। परन्तु जब उन पर प्रभु का नाम एवं प्रभु की उह्यतति लिख दी जाती है, तब उन्हें प्रणाम् कर पूजा जाता है। उसी प्रकार जिन जीवों को, सांसारिक लोग अज्ञानता के कारण नीच समझते थे, जब उन्होंने प्रभु का नाम सिमरन किया, तो वे भी इस संसार में पूजनीय हो गए।

तू कांयि गरबहि बावली।।

जैसे भादउ खूंब राजु तू तिस ते खरी उतावली।।१।।रहाउ।।

जैसे कुरंक नहीं पाइयो भेदु।।

तनि सुगंध ढूढै प्रदेसु।।

भाव - हे बावरी! तू झूठा अहंकार क्यों करती है। जिस प्रकार भादो के मास में खूंबों का जीवन कुछ समय के लिए ही होता है। तुम्हारा तो कोई भरोसा ही नहीं, तुम तो उससे भी शीघ्र समाप्त होने वाली हो।

मैले कपरे कहा लउ धोवउ।।

आवैगी नीद कहा लग सोवउ।।

भाव - संतों की संगत के बिना, जीव अंत: करण रूपी मैले कपड़े को, कहाँ जाकर धोयेगा? तथा अज्ञानता रूपी नींद में कब तक सोयेगा? गुरु जी ने अपने समाज के नित्य-प्रति कार्यों के साथ जोड़कर, निम्नलिखित पूरा शब्द ही लिख दिया:

चमरटा गांठि न जनयी॥

लोगु गठावै पनही॥१॥रहाउ॥

आर नही जिह तोपउ॥

नही रांबी ठाउ रोपउ॥१॥

लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥
हउ बिनु गांठे जायि पहूचा ॥२ ॥
रविदास जपै राम नामा ॥
मोहि जम सिउ नाही कामा ॥३ ॥७ ॥

यहाँ तक कि उन्होंने अपने समकालीन संतों का नाम भी अपनी अमृतवाणी में अंकित किया :

नामदेव 'कबीरु' तिलोचनु 'सधना' 'सैनु' तरै ।।

* * *

फल कारन फूली बनरायि ।।
फलु लागा तब फूलु बिलायि ।।

भाव – जिस प्रकार सारी सृष्टि की वनस्पति फल देने के लिए, प्रफुल्लित होती है और उसे फल लगते हैं, परन्तु जिस समय फल लग जाते हैं, उस समय फूल झड़ जाते हैं ।

घ्रित कारन दधि मथै सयान ।।
जीवन मुकत सदा निरबान ।।

भाव – जिस प्रकार समझदार स्त्री, घी की प्राप्त के लिए, दही को मथती है, जब उसमें से मक्खन निकल आता है, तब वह मथना बंद कर देती है । उसी प्रकार ब्रहम्ज्ञान की प्राप्ति के लिए, जिज्ञासु श्रेष्ठ कर्म करता है । जिस समय उसे ब्रहम ज्ञान प्राप्त हो जाता है, तो वह जीवन में ही, मुक्तावस्था प्राप्त कर, सदैव रहने वाले, निर्वाण–पद को प्राप्त कर लेता है ।)

उपरोक्त शब्द पर विचार करने के उपरांत, हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि गुरु जी ने कितने सुन्दर ढंग से, अपने जीवन के उदाहरणों को प्रस्तुत किया है । संभव है कि गुरु जी ने अपने शिष्य मुस्लिम राजाओं के, निवेदन को स्वीकार करते हुए, धर्म प्रचार हेतु इस प्रसिद्ध शहर 'आबादान' में चरण डाले हों । जिसका पूरा दृश्य उन्होंने अपनी अमृतवाणी में चित्रित किया है, जो उनकी उच्च स्तर की काव्य दृष्टि माना जा सकता है । जब कोई कवि कविता लिखता है, तब वह अपने इर्द–गिर्द एवं अपने जीवन में से संकल्प प्रस्तुत करता है । यही संकल्प गुरु रविदास जी की अमृतवाणी पर लागू होते हैं । आप

जी की उच्च कोटि की काव्य-दृष्टि का ही परिणाम है कि 'बेगमपुरा सहर को नाउ' जैसा मिलता जुलता शब्द, अन्य किसी महापुरुष की वाणी में उपस्थित नहीं है। गुरु जी ने अरब देशों की यात्रा करने के पश्चात्, वहाँ के सुन्दर शहर 'आबादान' को देखकर बेग़मपुरा के संकल्प वाला शब्द उच्चारण किया, आप जी ने बहुत सन्दर ढंग से फरमाया -

बेग़मपुरा सहर को नाउ ॥ दूख अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु ॥ खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१ ॥
अब मोहि खूब बतन गह पाई ॥ ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥१ ॥ रहाउ ॥
कायमु दायमु सदा पातिसाही ॥ दोम न सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥ ऊहां गनी बसहि मामूर ॥२ ॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥ महरम महल न को अटकावै ॥
कहि रविदास खलास चमारा ॥ जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३ ॥२ ॥

उपरोक्त शब्द को पढ़ने, सुनने, परखने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि आप जी ने दूर-दूर तक यात्राएं की थीं। 'आबादान' शहर के लोगों एवं उनके रहनसहन से संबंधित पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए, और खोज की आवश्यकता है। यहां तो इस शहर की सुंदरता का अनुमान, हम केवल गुरु रविदास जी के शब्द 'बेगमपुरा सहर को नाउ', से ही लगा सकते हैं।

फारसी के प्रसिद्ध लेखक शेख सायदी की रचनाओं में भी, इस शहर का वर्णन मिलता है। यह शहर ईरान में स्थित है, जो अफ़गानिस्तान के दूसरी ओर है। यह पर्शीयन जुबान वाले लोगों का, क्षेत्र माना जाता है, जिसमें फारसी भाषा का जन्म हुआ। यहीं से आर्य लोग जार्जीया से होते हुए, भारत में प्रविष्ट हुए थे।

जगत् गुरु रविदास जी महाराज धर्म प्रचार हेतु, अपने सेवकों को साथ लेकर, उनझरी भारत से धर्म प्रचार करते हुए ईरान पहुँचे। फिर आप कुवैत से साऊदी अरब, फिर मदीना और मुस्लानों के धार्मिक स्थान मक्का पहुँचे। यह नहीं हो सकता कि गुरु जी बनारस से इतनी अधिक दूर आबादान गए हों और फिर वहाँ से आगे मुस्लिम सेवकों को साथ लेकर मक्का न पहुँचे हों क्योंकि ऐसा करने के लिए उनके मुस्लिम सेवकों ने अवश्य उत्साहित किया होगा।

आबादान फारसी जुबान का एक साहिनियक केन्द्र भी था जिसके साथ फारस की खाड़ी के समुद्र का एक हिस्सा लगता है। फारसी भाषा के कारण ही, ईरान को फारस भी कहते हैं। (विश्व प्रस्द्धि यात्री 'इबन बतूता' ने संपूर्ण एशिया की यात्रा की। उसने 1,17,000 किलोमीटर की यात्रा में 40 देश घूमे। इसी दौरान इबन बतूता भी, आबादान में ठहरा हुआ था, जो यहाँ की चहल-पहल से बहुत प्रभावित हुआ। यह शहर ईरान में इराक की सीमा के साथ ही स्थित है। उस समय यह शहर एशिया का एक बहुत बड़ा व्यापारिक केन्द्र था। भारत, ईरान, इराक व अफगानिस्तान और मध्य एशिया से यात्री, आबादान के रास्ते से आवागमन करते थे। आबादान से आगे, इराक में बसरा स्थान आता है, जहां आकर पंजाबी सैना ने द्वितीय विश्व युद्ध (1938.45) अंग्रेजों की ओर से लड़ा था।)

गुरु रविदास जी की अरब के इन क्षत्रों में, मुस्लिम पीर-फकीरों के साथ ज्ञान-गोष्ठियां हुईं। गुरु जी के उच्च व सत्य आध्यात्मिक उपदेशों को सुनकर, यहां बहुसंख्या में लोग, आप जी के पक्के मुरीद बन गए।

गुरु रविदास जी ने अफगानिस्तान की भी यात्रा की। जो इसी दौरान ही की गई

होगी। आबादान शहर शाही शहर था, जिसकी सुन्दरता से, गुरु रविदास जी ने, प्रभावित होकर, इसे अपनी अमृतवाणी में अंकित कर लिया। संभव है कि आप जी के शिष्यों ने आप की स्मृति में, वहाँ कोई न कोई स्मृतिचिह्न भी बनाया हो, परन्तु बाद में गुरु रविदास समाज की पहुँच से बाहर होने के कारण, उसे संभाला न गया हो।

***

जगत् गुरु रविदास जी महाराज की हिमाचल पर्वत व सिरधार पर्वत यात्रा

यह दृष्टांत श्री गुरु नानक देव जी की साखी पन्ना नं. 182-186 अंकित है। जब श्री गुरु नानक देव जी अर्न्तध्यान होकर हिमाचल पर्वत पर पहुँच कर जा खड़े हुए तब भाई मरदाना ने पूछा कि गुरु जी यह कौन सी जगह है। तब श्री गुरु नानक देव जी ने बताया कि यह बहता हुआ बर्फ है। इसका नाम

हिमाचल है। इस में यदि कोई प्राणी पांव रखता है तो वह गल जाता है, यहां पर आदमी के आने के लिए कोई रास्ता नहीं है। तब मरदाना ने कहा कि हम यहां क्यों आये हैं? तब गुरु नानक देव जी ने बताया कि हम उस अकालपुरुष की आज्ञा के अनुसार यहाँ आये हैं। तब मरदाना ने पूछा कि इस से आगे भी कोई जगह है? तब श्री गुरु नानक देव जी ने बताया कि इस से आगे हेम पर्वत है तथा उन्होंने आगे प्रस्थान किया। जब श्री गुरु नानक देव जी सिरधार पर्वत पर पहुँचे और वहां खड़े हुए तो भाई बाला जी व मरदाना जी ने पूछा कि इस हेम पर्वत का नाम सिरधार क्यों है? तब श्री गुरु नानक देव जी ने बताया कि यह पर्वत सिर तलवाया है और सिरधार की जगह है। यहां आने का रास्ता कोई नहीं है। यहां पर वही मनुष्य/प्राणी पहुंचता है जो ऊपर स्वर/सहारे चलता है। यहां पर अब से पहले केवल भगत कबीर व रविदास भगत ही पहुंच पाये हैं। इस दृष्टांत से प्रमाण मिलता है कि श्री गुरु रविदास जी महाराज ने सारे भारत का भ्रमण किया है तथा इतने ऊंचे स्थान पर अपनी आत्मिक शक्ति के कारण पहुंचे है।

***

राजा पीपा का जगत् गुरु रविदास जी महाराज का शिष्य बनना

राजा पीपा एक वैभवशाली क्षत्रिय राजा था। किसी कारण उसके मन में परमात्मा के प्रति वैराग्य हुआ। तलाश करते-2 उसे जानकारी प्राप्त हुई कि गुरु रविदास जी एक पहुँचे हुए पूर्ण महापुरुष है। परन्तु क्षत्रिय होने के कारण उनमें जाति अभिमान भी था। इसी कारण सबके सामने गुरु रविदास जी के पास जाते हुए उसे शर्म महसूस होती थी। एक दिन अवसर पाकर चुपके से जगत् गुरु रविदास जी महाराज के पास जा पहुँचे और पहुँचते ही प्रणाम करके जगत् गुरु रविदास जी महाराज से नाम दान के लिए प्रार्थना की। श्री गुरु रविदास जी उस समय चमड़ा भिगोने वाले कुण्ड में से पानी निकाल रहे थे। बर्तन उनके हाथ में था। उसी पानी के भरे बर्तन को राजा की ओर बढ़ाते हुये गुरु जी ने कहा कि ''राजन! लो यह चरणामृत पी लो'' राजा के मन ग्लानि हुई कि क्षत्रीय होकर कुण्ड का पानी कैसे पीऊं परन्तु श्री गुरु रविदास जी के

सामने स्पष्ट इन्कार कर पाना भी कठिन था। उसने हाथ आगे करके पुल्लु में पानी ले तो लिया मगर श्री गुरु रविदस जी नज़र बचाकर अपने कुर्ते की खुली बाजू में से अमृत नीचे गिरा दिया। श्री गुरु रविदास जी इस बात को समझ तो गये परन्तु कुछ बोले नहीं।

जा जल्दी-जल्दी में घर लौटते समय सोच रहा था कि आज तो गुरू रविदास मुझे चमार बनाने पर तुला हुआ था। बड़ी मुश्किल से बचकर आया हूँ। महल में आकर धोबी को आदेश दिया कि उस कुरते की बाजू को दाग छुड़ाकर अच्छी तरह साफ करके लाओ। धोबी ने घर आकर अपनी लड़की कर्मा बाई से कहा कि बेटी मैं चूने का पानी तैयार करता हूं। इस दाग को चूस कर साफ कर दो। वह लड़की छोटी थी। वह उस दाग को मुँह में रख कर चूसते हुए उसको बाहर थूकने की अपेक्षा अन्दर ही निगलने लग गई। अैसा करने से उसके ज्ञान का पर्दा खुल गया तथा वह आध्यात्मिक ज्ञान की बातें करने लगी। धीरे-धीरे शहर में यह चर्चा फैल गई कि धोबी की लड़की कर्मा बाई बहुत बड़ी विदुषी है जो कि अगम्य का ज्ञान जानती है।

राजा पीपा को जब यह समाचार मिला तो एक रात चुपके से धोबी के घर पहुँच गया क्योंकि आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति खिचाव तो उसके मन में था ही। राजा को देखकर धोबी की लड़की खड़ी हो गई। राजा ने कहा कि बेटी मैं तेरे पास राजा के रूप में नहीं आया बल्कि भिखारी बनकर आया हूँ। उस लड़की ने कहा कि मुझे जो कुछ मिला है आप ही की कृपा से मिला है आप के कुरते में लगे दाग को चूसने से ही मुझे आन्तरिक ज्ञान की प्राप्ति हुई है। यह सुनकर राजा को समझ आई और अपने आप को कोसने लगा। धिक्कार है मेरे क्षत्रिय होने का, धिक्कार है मेरे राजा होने का, धिक्कार है मेरी लाज को, धिक्कार है इस जाति-पाति के भेद-भाव को जिसके कारण मैं परमार्थ से खाली रह गया हुँ। अब किसी बात की चिंता न करते हुए वह सीधे श्री गुरु रविदास जी के पास पहुँचा और विनती की कि हे गुरुदेव! मुझे अमृत पिलाओ। तो श्री गुरु रविदास जी ने अपनी लुटिया मांजकर ठण्डा पानी पिलाया। श्री गुरु रविदास जी ने कहा कि वह अमृत तो कर्माबाई के पास पहुंच गया। जो अमृत मैं रोज़ पीता हूँ, वही अमृत उस रोज़ तुम्हें प्राप्त हुआ था। परन्तु तुमने मुझे नीच जाति

का समझकर उस अमृत को नीचे गिरा दिया था। उसी अमृत के दाग को चूसकर कर्मा बाई महात्मा बन गई है। हे राजन! जातिपाति और ऊँच-नीच का भाव जब तक तुम्हारे मन से निकल नहीं जाता तब तक तुम्हारा कल्याण नहीं होगा। परमात्मा के भक्त की कोई जाति-पाति नहीं होती। नीच से नीच कही जाने वाली जाति में भी परमात्मा का भक्त पैदा हो जाये तो वह पुरुष ही नहीं बल्कि वह परिवार, वह जाति तथा वह गाँव सब पवित्र हो जाते हैं। भक्त का यशोगान सारे संसार में फैल जाता है। तब राजा पीपा को उपदेश देते हुए श्री गुरु रविदास जी शब्द उच्चारण करते हैं :

जिह कुल साधु बैसनो होइ॥
बरन अ बरन रंकु नही ईसुरु
बिमल बासु जानीए जगि सोइ॥१॥रहाउ॥
ब्रहमन बैस सूद अरु श्रयत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ॥
होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ॥१॥
धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ॥
जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस
होइ रस मगन डारे बिखु खोइ॥२॥
पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबर अ उरु न कोइ॥
जैसे पुरैन पात रहै जल समीप
भनि रविदास जनमे जगि ओइ॥३॥२॥

जिस अमृत की आशा लेकर अब तुम दोबारा आये हो अब वह तुम्हें नहीं मिलेगा। अब सेवा सिमरण में लगकर परमगति को प्राप्त करो। इस अवसर को आपने जाति अभिमान के कारण गंवा दिया है। नामदान प्राप्त कर उसी से कमाई करो और स्वंय अमृत प्राप्त करो। जाति-पाति का भाव और ऊँच-नीच की भावना को त्यागकर साधना करो तो तुम्हारा जीवन अवश्य सफल होगा। बोलो

श्री गुरु रविदास जी महाराज की जय॥

***

मकर संक्रांति पर चार युगों के जनेऊ दिखाना

जब जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने देखा कि समाज भेद-भाव का शिकार है और शूद्र समझे जाते समाज को सदियों से प्रभु-भक्ति के अधिकार से वंचित किया गया है और केवल कुछ लोगों को ही प्रभु-भक्ति और जनेऊ पहनने का अधिकार है। गुरू जी बहम-आडंबरों के विरोधी थे। ऐसे समय में शूद्र समझे जाते समाज में आकर गुरु जी द्वारा ब्राह्मणों द्वारा किए जाने वाले कर्म जैसे माथे पर तिलक लगाना, धोती पहनना और जनेऊ पहनना, इत्यादि कर्म करना एक क्रांतिकारी कार्य था। गुरु जी को ऐसा करते देख कर जाति अभिमानी लोग तड़प उठे और उन्होंने राजा नागर मल्ल के दरबार में जाकर गुरु जी के विरोध में शिकायत की कि एक शूद्र हम लोगों वाले कर्म करता है। ब्राह्मणों की शिकायत पर राजा नागर मल्ल ने गुरु जी को दरबार में बुलाया और कहा कि ब्राह्मणों की यह शिकायत है कि आप शूद्र होकर ब्राह्मणों वाले कर्म करते हो। गुरु जी ने उतर दिया किसंसार में सब प्राणी समान हैं और कोई भी जन्म के कारण छोटा एंव बड़ा नहीं है। सभी प्राणियों में प्रभु की ज्योति निवास करती है और सभी प्राणी चाहे वह शूद्र है और चाहे ब्राह्मण, पांच तत्वों से बने हुए हैं। इस लिए सभी प्राणीयों को अपनी इच्छा के अनुसार प्रभु की भक्ति करने का एक समान अधिकार है। राजा गुरु जी के वचन सुनकर बहुत हैरान हुआ पर पंडित गुरु जी से कहने लगे कि आप शूद्र होकर जनेऊ नहीं पहन सकते इस लिए आप जनेऊ उतार दीजिए। गुरु जी ने कहा कि मैंने यह जनेऊ अब नहीं पहना, मैं तो इसे चार युगों से पहनता आ रहा हूँ। उस समय ब्राह्मणों ने कहा कि देखो महाराज! यह कितना झूठ बोल रहा है। अगर ये चार युगों से जनेऊ पहनते आ रहा है तो ये चारों युगों के जनेऊ दिखाए। उस समय गुरु जी ने रम्बी के साथ अपना कांधा चीर कर चारों युगों के जनेऊ दिखाते हुए कहा कि सतयुग में मैं स्वर्ण का, त्रेते युग में चांदी का और द्वापर युग में कांसे का जनेऊ पहनता रहा हूँ और आज कल्युग में मैंने सूत का जनेऊ पहना है। गुरु जी का यह चमत्कार देखकर राजा नागर मल्ल और सभी ब्रह्मणों और उपस्थितगणों ने गुरु जी के चरणों में प्रणाम करके अपनी गलती के लिए क्षमा माँगी। गुरु जी ने सूत का जनेऊ उतार दिया और कहा कि मुझे

जनेऊ धारन करने की आवश्यकता नहीं थी। मुझे तो यह बताना था कि सब जीवों को सामन्य अधिकार है। सबको भेद-भाव से ऊपर उठकर सभी प्राणियों से प्रेम करने और प्रभु का सिमरन करने का उपदेश दिया।

***

मृत गाय को जीवित करना

जब जगत् गुरु रविदास जी महाराज की महिमा और आध्यात्मिकता विश्व विख्यात हुई तो उनके जहाँ संगत् का आना-जाना बहुत बढ़ गया। राजा-महाराजा गुरु जी के निवास पर अकसर आते-जाते रहते। एक दिन गुरु जी राजा नागर मल्ल उर्फ राजा हरदेव सिंह की विनती पर उनके जहाँ गए हुए थे और पुरोहित लोग किसी कार्य को सम्पन्न कर रहे थे। मंत्रोचारण हो रहा था और सभी लोग अपने-अपने स्थान पर बैठकर इस धार्मिक कार्य को देख रहे थे गुरु रविदास जी वहाँ समाधि लगाकर बैठे हुए थे। इतने में बादशाह आया और कहने लगा गुरुदेव जी! विधि-विधान के अनुसार जो सामग्री दान में देनी है उसको एक बार देख लें। जगत् गुरु रविदास जी महाराज कहने लगे बादशाह आप जानते हैं मैं केवल परम पिता परमात्मा का उपासक हूँ। इस लिए वह काम जिन पुरोहितों ने किया है उन्ही के निरीक्षण में सम्पन्न किया जाए तो ठीक रहेगा। बादशाह भी समझ गया कि आज कोई नई लीला होने जा रही है नहीं तो गुरुदेव कभी भी हमारे आग्रह को टाला नहीं करते। सोच-समझ कर बादशाह ने कहा मेरी विनम्र बिनती को स्वीकार करें और मेरे साथ चले तो हमारे परिवार के लिए बेहतर होगा।

जब गुरु रविदास जी उठने लगे तो सहसा उनके मुख से यह शब्द निकले कि हे राजन, जैसी आपकी इच्छा और देखते हैं कि मेरे मालिक को क्या मंजूर है? इतना कह कर गुरुदेव और राना हवन कक्ष में पहुँच गए। सारा कार्य सम्पन्न होने के बाद बादशाह ने अपने कार्य-सिद्धि के लिए सम्पन्नता पर पुरोहितों को सोने की गायें दान में दी। यह देखते हुए गुरु रविदास जी कहने लगे, राजन ठहरो! मैं नीति की बात करना चाहता हूँ यह सोने की गायें आप किस मनोरथ सिद्धि के लिए दे रहे हैं? तो राजन ने कहा पंडितों और पुरोहितो को सोने की गायें दान करने से स्वर्ग लोक प्राप्त होता है। गुरु जी कहने लगे हे

पंडित जी! आप ही बताएं दान जीवित गायें का किया जाता है अथवा मृत का। तो पंडितो ने जवाब दिया, सच कहो तो दान हमेशा जीवित गाय का किया जाता है। तो गुरु जी कहने लगे यदि जो आप कह रहें हैं यह सच है तो आप राजा के साथ छल करने जा रहें है। यह बात सुनते ही पुरोहित लोग और राजा झुंझला गए। गुरु रविदास जी कहने लगे कि पंडित जी! आपका विधि, विधान आपके शास्त्र, वेद, और स्मृतियाँ यह जानते हुए भी कि परमात्मा हर जीव में रहता है, जात-पात में विश्वास करते हैं। आप जानते है कि परमात्मा की रचना के आधार पर नहीं आप की नीति के आधार पर मैं चमार जाति से सम्बन्धित हूँ। आपकी नीति के अनुसार हर जीवित वस्तु और प्राणी आपका है और मरे हुए प्राणी हमारे क्योंकि मेरी जाति के लोग शहर के आस पास मरे हुए पशुओं को उठाने का कार्य करते है। मेरे मत के अनुसार मूर्ति और मरे हुए पशु में कोई अंतर नहीं है। निर्जीव वस्तु सोने की हो या चमड़े की उस पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं। क्योंकि यह सभी गायें निर्जीव है इसलिए इन पर मेरा पैदायशी हक है। स्वाभाविक तौर पर यह बात विवाद का विषय बन गई राजा तो पहले ही उनकी सच्चाई, ईमानदारी, पूजा, पद्धति और प्रभु-ज्ञान का कायल था। इस लिए उसने कहना शुरु कर दिया कि पंडित जी मैं बीच में तो नहीं आना चाहता परन्तु आपको गुरुदेव जी के इस प्रश्न का उतर अवश्य देना होगा तो फैसला यह हुआ किया तो पुरोहित लोग अपनी विद्या शक्ति से इन को जीवत करे और अपने साथ ले जाएँ। नहीं तो इन्हें गुरु जी ले जाएंगे। लालच के कारण पंडित हाथ में आया इतना सोना नहीं छोड़ना चाहते थे और उन्होनें कई प्रकार के मंत्रोंच्चारण किए पर काम न बनता देखकर कहने लगे, ''राजन! आप अपने गुरु से कहें कि वह कुछ ऐसा करे जिससे यह सोने की गायें स्वयं उनके पास चली जाएं।'' इतिहास में लिखा है कि गुरु रविदास जी ने उनके आग्रह को मंजूर किया और समाधि लगाकर बैठ गए। तत्पश्चात् उपस्थित लोगों ने देखा कि सोने की गयें गुरु रविदास जी की शरण में आकर विराजमान हो गई एसा चमत्कार देखकर गुरु जी की महिमा चारों और फैल गई।

***

केदार पाण्डेय और उसके साथियों द्वारा जगत् गुरु रविदास जी महाराज जी को समाप्त करने का षड्यन्त्र

राजा नागर मल्ल के दरबार में जब ब्राह्मणों को हार का सामना करना पड़ तो विवश होकर जगत् गुरु रविदास जी महाराज से उस समय हार तो मान ली, परन्तु उनके मन में प्रतिशोध की ज्वाला पहले से ज्यादा बढ़ गई। वे हर समय श्री गुरु रविदास जी से बदला लेने की योजनाए सोचने लगे। केदार पाण्डेय जो पाखण्डी पाण्डों का मुखिया था, वह इस बात को भूल नहीं सका। उसने श्री गुरु रविदास जी से बदला लेने की योजना बनाई कि गुरु रविदास को धोखे से किसी भी बहाने से बुलाकर समाप्त कर दिया जाए। यह बात उसने अपने साथियों को बता दी कि गुरु रविदास हमारे रास्ते में कांटा है। यदि उसको समाप्त कर दें तो यह कांटा हट जायेगा। यह कार्य उसने अपने ज़िम्मे ले लिया। श्री गुरु रविदास जी के पास आ कर कहा कि महाराज! हमारा एक मसला उलझ गया है आप सत् पुरुष होते हुये जो निर्णय देंगे हमें मान्य होगा। हमें विश्वास है आप गलत निर्णय नहीं देंगे। आप मेरे साथ चलिये। यद्यपि श्री गुरु रविदास जी इस चाल को समझ तो गये परन्तु ईश्वर को साक्षात् निर्णय देने वाला मानकर इन्कार नहीं किया। उनको पूर्ण विश्वास था कि प्रभु ही मेरी सहायता करने वाला है और केदार पाण्डेय के साथ चल दिये। लोहटा वींर ने जंगल में ले जाकर श्री गुरु रविदास जी को कहा कि आप प्रभु भक्ति छोड़ने पर रज़ामन्द है या नहीं? तो श्री गुरु रविदास जी ने कहा कि मैं प्रभु सुमिरन नहीं छोडूँगा। चाहे प्राण चले जायें। ज्यों ही पाखण्डी ब्राह्मण आक्रमण पर उतारू हुये उनकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया तो उन्होंने गलती से अपने साथी केदार पाण्डेय को ही मार दिया। ब्राह्मण गुरु रविदास जी को मरा हुआ समझकर राजा नागर मल्ल के दरबार में लाश को ले आये तथा राजा को सूचना दे दी कि गुरु रविदास को किसी ने मार दिया है। राजा को विश्वास नहीं हुआ। उसने लाश पर से परदा उठा कर देखा तथा ब्राह्मणों को कहा कि पहचानों कौन है? तब उनको अपनी भूल को स्वीकार करना पड़ा।

* * *

अलावदी बादशाह के साथ गोष्ठी

यह गोष्ठी एक हस्तलिखित ग्रन्थ जो सिक्ख रेफरेन्स लाईब्ररी अमृतसर में मौजूद है जो कि सम्मत् 1786 में लिखा है उसके पृष्ठ नं. 463-466, 487 पर अंकित है। पृष्ठ 71 'भगत रविदास' जसवीर सिंह साबर (गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी अमृतसर)।

काशी में काज़ियों ने सुल्तान अलावदी बादशाह से कहा कि गुरु रविदास एक चमार है। इस संसार के लोग (हिन्दु-मुसलमान) उसको पूज्य मानते हैं। वह अपने आप को पीर कहता है और सब लोग उसके पास मुरीद बन कर जाते हैं। आप उसको बुलाकर पूछो कि उसने यह क्या ढोंग चलाया हुआ है? तब सुल्तान अलावदी ने गुरु रविदास जी को अपने दरबार में बुलाया। उसी समय गुरु रविदास जी के भाई बन्धू सिर पर चमड़ा उठाकर गुरु रविदास जी के पक्ष में कहने के लिये सुल्तान के दरबार में आये। जब गुरु रविदास जी बादशाह के निकट गये तब अलवदी बादशाह ने गुरु रविदास जी को आदर के साथ निकट बैठाया। उस समय बादशाह को कच्चे चमड़े की बदबू आई क्योंकि गुरु रविदास जी के साथी सिर पर चमड़ा उठाये हुए थे। तब बादशाह ने गुरु रविदास जी के भाई बन्धूओं को बाहर भेज दिया तब सुल्तान अलाबदी ने गुरु रविदास जी को कहा कि तू लोगों को मुरीद करता है, कुछ करामात तो दिखा। तब रविदास जी ने कहा कि मैं करामात तो दिखा चुका हूँ, आप समझे नहीं। तब बादशाह कहने लगा कि क्या करामात दिखाई है? तब गुरु रविदास जी ने अपनी वाणी में उच्चारण किया :

नागर जना मेरी जाति विख्यात चमारं ॥

रिदै राम गोबिन्द गुण सारं ॥ रहाउ ॥

बादशाह ने कहा कि इसका अर्थ? तब गुरु रविदास जी समझाते हैं कि मेरी जाति विख्याति चमार है जिसमें मैं पैदा हुआ हूं। मेरे भाई बन्धओं को आपने बाहर भेज दिया है क्योंकि उनसे आपको बदबू आती थी परन्तु मेरे हृदय में प्रभु के गुण बसे हैं इस लिए आप ने मुझे आदर के साथ निकट बैठाया। नहीं तो मैं अछूत (चमार) आपके पास कैसे आ सकता था।

सुरसरी सलिल क्रित वारुणी रे सन्त जन करत नहीं पानं।

सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहीं होई आनं॥

बादशाह ने पूछा कि इसका अर्थ? तब गुरु रविदास जी ने कहा कि बादशाह! गंगा में से यदि जल लेकर कोई मदिरा (शराब) बनाता है तो उसको सब कोई अपवित्र कहता है और यदि कोई कूएं का जल लेकर उस से शराब बचा कर गंगा में प्रवाहित कर दें तो वह गंगा से मिलकर गंगा रूप हो जाती है। इसी प्रकार मैं भी मदिरा (शराब) की भांति अछूत जाति समझा जाता था परन्तु जब से मैं परमेश्वर की शरण में आया हूं तब से मैं भी पवित्र हो गया हं।

तर तार अपवित्र कर मानिये रे
जैसे कागरा करत विचारं।
भगति भगवत लेखीये तिह उपरि,
पूजीये करि नमस्कारं।

बादशाह ने कहा इस का अर्थ? तब गुरु रविदास जी ने कहा कि बादशाह! कागज सिनी का होता है और सण को अपवित्र लिखा गया है और जब परमेश्वर की भक्ति का विचार उस कागज पर लिखा जाता है तब वह कागज की पूज्य हो जाता है। वैसे ही कागज की भांति मैं भी अपवित्र था पर प्रभु के नाम के कारण मैं पवित्र हो गया हूं।

मेरी जाति कटुबांढ़ला ढोर ढोवंता नितहि बनारसी आस पासा॥
अब विप्र प्रधान तिह करे डंडौत
तेरे नाम शरणाई रविदास दासा॥

बादशाह ने पूछा इस का अर्थ? तब गुरु रविदास जी ने कहा कि बादशाह जी मेरी जाति चमड़े को काटने कूटने वाली है और मरे हुये पशुओं के बनारस के पास ढोने वाली है और अब प्रभु नाम के प्रताप से बड़े से बड़ा बादशाह, प्रधान ब्रह्मण और क्षत्रीय भी डंडौत वन्दना करते हैं। बादशाह गुरु जी की परमार्थ भरी बातें सुनकर बहुत प्रभावित हुआ। उसने श्री गुरु रविदास जी को बहुत दौलत भेंट की साथ ही सोने से जड़ी हुई सेज भी दान में दी। श्री गुरु रविदास जी ने परमेश्वर के नाम पर सारी दौलत जरूरतमंदों में बाँट दी और सोने जड़ी हुई सेज गंगा जी में डाल दी। तब काजियों ने बादशाह से फिर

शिकायत की कि गुरु रविदास ने सारी दौलत लुटा दी साथ ही आपकी दी हुई सेज भी गंगा में प्रवाहित कर दी। अब उस पर तो मलेच्छ बैठेंगे या हमारे जैसे लोग ही बैठेंगे यह तो उसने ठीक नहीं किया। यदि किसी कंगाल को दे देता तो भला होता तथा बादशाह का भी भला होता। तब सुल्तान ने श्री गुरु रविदास जी को पास बुलाकर कहा कि हमारी दी हुई सेज वापिस कर दें। मैं आप को दूसरी सेज दूँगा। तब, गुरु रविदास जी ने पूछा कि आप वही सेज लेगें? बादशाह ने कहा कि मैं वहीं अपनी दी हुई सेज लूंगा। श्री गुरु रविदास जी ने बादशाह से कहा कि आप मेरे साथ वहां चले जहाँ मैंने वह सेज रखी है वहां से मैं आपको निकाल कर दे दूंगा। तब तत्काल सुलतान गुरु जी के साथ गंगा के किनारे आया। गुरु रविदास जी ने कहा कि हे गंगा मेरी वही अमानत वापिस कर दो। तब गंगा ने अपनी लहर के साथ सात सेजें उसी प्रकार बाहर निकाल दी। श्री गुरु रविदास जी ने बादशाह से कहा कि अपनी सेज पहचान लो? बादशाह ने कहा कि मेरी तो एक ही सेज थी, ये सात सेजें कैसे बन गई। श्री गुरु रविदास जी ने कहा कि बादशाह! ये एक दिन में ही एक से सात हो गई हैं। यदि और रहने देते तो बहुत बढ़ जाती और तेरे ही काम आती। अब ये सात सेजें तेरी ही हैं आप ले लो। बादशाह ने कहा कि गंगा में वापिस डाल दें ताकि और बढ़ जाए। तब जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने कहा कि ये तो अब बढ़ेगी नहीं। इनका तो बीज नष्ट हो गया है। यह लीला देखकर बादशाह अलावदी को विश्वास हो गया तथा उठकर चरणों में गिर कर दंडवत् प्रणाम किया।

जगत् गुरु रविदास जी महाराज की जय॥

***

श्री गुरु रविदास जी की गुरु कबीर जी और गुरु नानक देव जी से ज्ञान गोष्ठियां

ऐसा संकेत मिलता है कि श्री गुरु रविदास जी महाराज 'मण्डूर नगर', जिसे आजकल 'सीर गोवर्धनपुर' कहा जाता है, वहाँ अपना सत्संग किया करते थे। उस समय गुरु जी की आयु लगभग 73 वर्ष की थी। सतगुरु कबीर

जी बनारस (आजकल कबीर चौरा) में सत्संग किया करते थे। प्राय: दोनों महात्मा इक्ट्ठे बैठ कर ज्ञान गोष्ठि करते थे।

डा: लेख राज परवाना अपनी पुस्तक "श्री गुरु रविदास जीवन एंव किरतें" में गुरु रविदास जी की गुरु नानक देव जी के साथ गोष्ठियों के संबंध में लिखते हैं:

यह तथ्य ऐतिहासिक तौर पर साबित हो चुका है कि "गुरु रविदास जी (संवत् 1433-1584) 151 वर्षों के हो कर ज्योति ज्योत समाए थे।" "गुरु नानक देव जी 70 वर्ष 5 महीने एवं तीन दिनों की (संवत् 1526-1596) आयु व्यतीत करके अकाल पुरुष के संग स्थाई तौर पर जा मिले थे।" इस समय में गुरु नानक साहिब की गुरु रविदास जी के साथ तीन मुलाकातें हुई बताई जाती हैं। पहली गोष्ठी चूहड़काणे (ननकाणा साहिब) में उस समय हुई, जब गुरु नानक साहिब अभी किशोर अवस्था में थे। पांच संत कबीर, रविदास, सेन, पीपा जी और धन्ना धर्म सत्य के प्रचार हित पंजाब आए थे। गुरु नानक साहिब ने जब बीस रुपयों, जो बीस रुपए अपने पिता महिता कालू जी से व्यापार के लिए प्राप्त किए थे, उन्होंने सब संतों की सेवा में लगा कर ही सच्चा सौदा किया था और संतों का आर्शीवाद प्राप्त किया था। बाबा जी जानी-जान थे। उन्होंने संतों के भीतर ज़रूर कोई सात्विक एंव आध्यात्मिक शक्ति देखी होगी, जिस से प्रभावित हो कर उन्होंने संतों की सेवा की। पिता महिता कालू जी को जब पता लगा कि इन संतों में नीच जाति के साथ संबंधित संत भी थे तो लोक-लज्जा के मारे उन्होंने गुरु साहिब के थप्पड़ मारा और डांटा कि "रविदास-कबीर नीच जाति के हैं, तुम उनके साथ शिष्टाचार क्यों बढ़ा रहे हो?" गुरु जी ने अपने पिता को बेझिझक हो कर स्पष्ट उत्तर दिया था और जाति पाति का खंडन करते हुए निर्भीक होकर कहा था :

नीचा अंदर नीच, जाति नीची हूं अति नीच॥
नानक तिन के संग साथि वडिआ सो किआ रीस॥

दूसरी गोष्ठी बाबा जी के साथ संत रविदास जी की उस समय हुई जब संत रविदास जी अपने और संत साथियों के साथ उतरी भारत का दौरा करते-करते बारह वर्ष बाद दोवारा पंजाब आए थे। अपने मित्रों, श्रद्धालुओं, संतो,

भक्तों से मिलते मिलते वह सुल्तान पहुंचे। संतघाट गुरुद्वारे वाले स्थान पर संत समागम होना नियत था।

गुरु नानक देव जी के जीजा जै राम जी और बहन बेबे नानकी उनका बहुत ध्यान रखते थे कि वह घर बार छोड़ कर कहीं संन्यासी न हो जाए। सुल्तानपुर का बेर साहिब गुरुद्वारा उस समय अस्तित्व में नहीं था, पर बेंई नदी बहती थी। गुरु नानक साहिब के इस नदी में डुबकी लगाने से इस नदी की शोभा बढ़ गई। इस स्थान से तीन मील उतर दिशा की तरफ कपूरथला-सुल्तानपुर सड़क पर संत घाट गुरुद्वारे वाले स्थान पर, जो बेंईं नदी के बिल्कुल किनारे पर स्थित है और जिस की इमारत अब भी अधूरी पड़ी है। (जहां भाई उधम सिंह तीस साल पहले छोड गए थे, उसी हालत में है) जहां पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी सुशोभित हैं, डुबकी लगाने के बाद गुरु नानक देव जी प्रकट हुए थे। यहां पहले गुरुद्वारा नहीं था, समाधियाँ बताई गई हैं। समाधियां अभी भी हैं, पर वे थोड़ी दूर सुल्तानपुर शहर की तरफ हैं। बाबा जी को अकेले बाहर कम भेज जाता था। भाई भागीरथ, जो उनके सहायक थे, हर वक्त गुरु जी के साथ रहते थे। संत समागम वाले दिन बातें करते-करते बहाने से बेर साहिब गुरुद्वारे वाली जगह पर बेंई के तट पर आ गए। कपड़े उतार कर भाई भागीरथ जी को पकड़ा दिए और खुद लंगोटी के साथ बेंई में स्नान करने के बहाने कूद पड़े और अन्धेरे में विलीन हो गए। गुरुद्वारा बेर साहिब से तीन किलोमीटर दूर संत घाट गुरुद्वारा है, जहाँ सत्संग होना तय था, सत्संग के लिए पहुँच गए थे। यह पहले वाले ही संत थे, जो पंजाब में सत्य का प्रचार करने आए थे। इन पांचो संतो में गुरु रविदास जी भी थे। इस संत समागम में, मालूम होता है, सर्वशक्तिमान्, निराकार, सर्व-व्याप्त परमात्मा का संकल्प लिया गया हो। इसी गुरुद्वारे की दीवार पर लगे इन शब्दों ''गुरुद्वारा श्री संत घाट साहिब जी। वहां श्री गुरु नानक देव जी महाराज श्री बेर साहब से बेंईं नदी में डुबकी लगा कर तीसरे दिन प्रकट हुए और यहीं मूल मंत्र का उच्चारण किया।'' जिस से स्पष्ट है कि निरंकार रूपी परमात्मा की प्रशंसा में 'पट्टी' नामक रचना गुरु नानक साहिब ने इसी समय की थी और सार-तत्व के रूप में इस के बाद मूलमंत्र की सृजना की होगी। मूल मंत्र के साथ-साथ उनका निम्न

लिखित शब्द मुक्ति जाप की ओर भी
संकेत करते हैं :

झाड़ मिट्टी आतम दरसाना ॥
प्रगटै गिआन जोत तब भाना ॥
लिव लीन भहै माधउ आतम अैसे ॥
जल तरंग भेद कु कैसे ॥
नानक उअंग सोहंग आतम सोऊ ॥

तीन दिनों के संत समागम में लिये गए निर्णयनुसार गुरुनानक देव जी ने अपनी उदासियों की तैयारी की शुरुआत भी इसी 'संतघाट' गुरुद्वारा वाली जगह से ही आरम्भ हुई बताई जाती है। इस तथ्य की पूर्ति संत करतार सिंह जी ने, जो गुरुद्वारों के निर्माण और उनकी मुरम्मत करवाने और सिक्ख इतिहास और वाणी के कुशल वक्ता और तर्जमान माने जाते हैं, ने ही इस संत समागम की संभावना के होने की पुष्टि गुरुद्वारा बेर साहिब सुल्तानपुर तिथि 31-3-1988 मेरे साथ एक विचार गोष्ठी में की थी। गुरु नानक साहिब की संतो के साथ यह दूसरी मुलाकात थी। सच खंड के संकल्प के विकास इसी समय मिला था। और मूलमंत्र की रचना भी इसी स्थान पर हुई बताई जाती है।

गुरु नानक देव जी भी भारतीय समाज की दुर्भाग्य व ग्लानि से पूरी तरह परिचित हो चुके थे। जाति-पाति के बंधनों और वर्ग समस्या द्वारा पैदा हुई और कड़वा रूप धारण कर चुकी समस्याओं से भी चेतन हो चुके थे। ब्राह्मणवाद की प्रभुसता और इज़ारेदारी भी अच्छी तरह जागरूक हो चुके थे। स्त्रियों पर जुल्म और राजाओं के अनुचित व्यवहार से भी वह पूरी तरह वाकिफ़ थे। इस लिए गुरु नानक साहिब ने उतरी भारत में अपने दो साथियों भाई बाला और मरदाना समेत उपर्युक्त समस्यायों के विरुद्ध संघर्ष किया। गुरु साहिबान का उदे्श्य भी वही था, जो गुजरात, राजस्थान, यू.पी. और दक्षिणी भारत में संतो का थी। ब्राह्मणवाद की धार्मिक व सामाजिक अन्यायों भरे व्यवहारों के विरुद्ध गुरु नानक साहिब ने संकल्प लिया था। क्षत्री, वैश्य, शूद्र और नारी चारों को दोहरी मार पड़ रही थी। एक ओर सताधारी इन को दबा रहे थे और दूसरी तरफ ब्राह्मण अपनो आजारदारी एंव बौद्धिक राज्य कायम

रखने के लिए जाति-पाति, वर्ग-भेद और ऊँच-नीच प्रणालियों के हथकांटे अपनाकर भारतीय समाज को विभाजित कर बैठे थे। उन्होने संतो के आर्दशों का विवेचन कर यह उचित समझा कि उतरी भारत में इन सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध आवाज़ उठाई जाए। वह यह समझ चुके थे कि आवाज पूरे भारत में उठनी चाहिए। यह आवाज़ उठाना गुरु नानक साहिब का प्रमुख निशाना था।

इस प्रयोजन के लिए गुरु जी ने तीसरी गोष्ठी ''काशी में गोपालदास की बग़ीची में जहां अब गुरु का बाग गुरुद्वारा है, संत कबीर जी और संत रविदास जी के साथ'' की और भक्ति आंदोलन को मानवीय हित के लिए और सही मार्ग पर लगाने के लिए योजना भी तैयार की। इस यात्रा के समय गुरु नानक साहिब ने स्वामी रामानंद और स्वामी शंकराचार्य के साथ भी आध्यात्मिक संबधी गोष्ठियाँ की और निरंकार रुपी परमपिता परमात्मा के अस्तित्व, शक्ति, लीला, और सर्व-व्याप्त पासार जैसे कोमल और नाजुक मामलों पर वाद-विवाद किया। इसके बाद संत गोष्ठि हुई। संत महापुरुषों की गोष्ठी के मुख्य संत जी से धार्मिक और आध्यात्मिक मामलों पर विचार-विमर्श हुआ और आगामी धार्मिक एंव सामाजिक सरगर्मियों की रूप-रेखा इस तीसरे संत समागम, में प्रारूपित की गई। हज़ारों लोगों को वहम-भ्रमों में से निकाल कर सच्चे निरंकार अकाल पुरुष का ज्ञान दिया गया। उनका मिश्न समाजिक असमानता के विरुद्ध प्रचार करना और 'एक पिता एकस के हम बारक' नामक महा-वाक्य के सत्य को साकार करना था और ''सरबत का भला'' सिद्धांत को प्रयोग में लाकर सीमत सगुण की सीमाओं को विशाल करना था। यह गोष्ठियां बेहद भाव-मूलक थीं। गुरु रविदास जी का आदर्श पाखंड में फसे हुए विद्वानों, संतों, सिद्धों, महात्माओं और ब्राह्मणों को सही सात्विक मार्ग दिखाना था। इसी मनोरथ की सहभागत और समर्थन की पुष्टि के लिए गुरु नानक साहिब बनारस में तत्कालीन सामाजिक बंधनों को तोड़ कर संत महापुरुषों से मिले और गुरु रविदास जी से ''सर्व-सांझे'' मसलों पर विचार किया। इस समागम में धार्मिक समाजिक और राजसी मसलों पर भी विचार विमर्श हुआ। जिस में शूद्रों और स्त्रीवर्ग की आज़ादी, उच्चता और समाज में समान स्थान देना, सामाजिक असमानता और बेइन्साफी विरुद्ध अंदोलन

करने और तत्कालीन राजसता के अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष करने का निर्णय लिया गया था।

***

अयोध्या में जगत् गुरू रविदास महाराज जी

अयोध्या में एक बार महान् संत संमेलन का आयोजन किया गया। इस गोष्टी में पूरे भारतवर्श से संत महापुरूशों ने शिरकत की। इस समय सतिगुरू रविदास महाराज जी की महिमा दूर-दूर तक पहुँच गई थी, परन्तु कांशी की तरह ही यहाँ के कई ब्राह्मण सतिगुरू रविदास महाराज जी से बहुत ईर्षा करते थे। आयोजकों के फैसले के अनुसार जो प्रसाद संत सम्मेलन के बाद सतिगुरू रविदास महाराज जी के हाथों वितरित होना था उसमें ईर्ष्यालु ब्राह्मणों ने पत्थर और कंकड़ डाल दिए।

सभी आए संत महापुरुष की तरह जब सतिगुरू रविदास महाराज जी ने अपने प्रवचनों से संगतों को निहाल किया, उपरांत आरती गायन कर प्रसाद बाँटा तो यह देखकर ईर्ष्यालु ब्राह्मण बहुत ही शर्मिंदा हो गए कि जिस प्रसाद में उन्होंने पत्थर-कंकड़ डाल दिए थे, वह तो सोने की मोहरें बन गई हैं। संगत प्रसाद में मोहरें पा कर सतिगुरू रविदास महाराज जी की जय-जयकार कर रही थी और दोषपूर्ण ब्राह्मण किसी भी तरह के प्रकोप से घबराकर सतिगुरू रविदास महाराज जी के चरणों में क्षमा के लिए निवेदन कर रहे थे। महाराज जी से अपनी भूल का प्राश्चित कर उन सभी ने सतिगुरू रविदास जी के दास होकर संगत की सेवा करने का प्रण लिया।

यहीं अयोध्या में भी सतिगुरू रविदास जी और गुरू नानक देव जी की मुलाकात हुई बताई जाती है। सोढी मेहरबान जी, जो कि गुरू अर्जुन देव जी के भतीजे थे। उनकी सतारवीं शताब्दी में लिखी पुस्तक ''पोथी सच्चखंड'' (जन्म साखी श्री गुरू नानक जी) में ''गोष्टी गुरु बाबे जी की भगतों के साथ'' में लिखा है कि गुरू नानक देव जी अयोध्या में से जगत कल्याण करते जा रहे थे, उस समय उनकी मुलाकात सतिगुरू रविदास जी, सतिगुरू कबीर जी, सतिगुरू धंना जी, सतिगुरू सैन जी और अन्य संतों के साथ हुई थी।

* * *

राजा चन्द्र प्रताप

उदयपुर महाराणा सांगा के एक भंडारे में गाज़ीपुर का राजा चन्द्र प्रताप भी आया हुआ था। गाजीपुर का राजा चन्द्र प्रताप गुरु जी की महान् शोभा सुनकर दर्शनों के लिए आया। राजा चन्द्रप्रताप जी ने पवित्र चरणों पर अपना सिर झुका कर दोनों हाथ जोड़कर भंडारा कराने के लिए विनती (निवेदन) की। जगत् गुरु रविदास जी महाराजी ने राजा चन्द्र प्रताप की विनती को प्रवान कर लिया। राणा सांगा ने गाज़ीपुर तक जाने की सेवा करने का वचन लिया। मीरांबाई और कर्माबाई भी साथ ही गाज़ीपुर आईं।

गुरु जी के गाजीपुर नगरी में चरण पड़ने से पाप की जो आँधी चल रही थी, बन्द हो गई। आप जी की सच्ची ज्योति ने दुनिया में चारों ओर रोशनी कर दी। चन्द्र प्रताप उनकी रानी और प्रजा ने मीरा बाई और कर्माबाई सहित गुरु जी महाराज के गले में फूलों के हार डालकर नमस्कार की। शाही ढंग से स्वागत् करके उन्होंने गुरू जी का शाही किले में निवास कराया। गुरु जी के आगमन एक बहुत बड़ा भंडारा किया गया। राजे, महाराजे एंव रिश्तेदारों को बुलाया गया।

***

बीबी भानवती का शिष्य होना

बीबी भानमती मुल्तान शहर के एक हिन्दू परिवार की ठाकुर पूजा में मग्न रहने वाली एक बहादुर स्त्री थी, पर फिर भी उसके मन को कहीं चैन न मिलता। एक बार जगत् गुरु रविदास जी महाराज के शिष्य ने उसे यह बात सुनाई कि अगर वह आत्म संतुष्टि चाहती है और जीवन मुक्ति का अनुभव करती है तो वो काशी में जगत् गुरु रविदास जी महाराज के पास पहुँच जाए। बीबी भानमती अपने पति को साथ लेकर काशी पहुँची और जगत् गुरु रविदास जी महाराज के दर्शन किए। ऐसा बताया जाता है कि जब बीबी भानमती जी काशी पहुँची तो वहां गोरख नाथ जी गोष्ठी के लिए गुरु जी के पास आए हुए थे। संत गोरख नाथ जी ने अपनी सिद्धि द्वारा श्री गुरु रविदास जी की आध्यात्मिक शक्ति अपनी ओर खींचनी चाही पर वह ऐसा न कर सका। बीबी भानमती जी ने जब अपनी मानसिक और आत्मिक अवस्था श्री गुरु

रविदास जी को बताई तो गुरु जी ने निम्न लिखित शब्द पढ़ कर बात स्पष्ट की कि हरि-संगत के बिना मनुष्य आवागम से नहीं बच सकता।

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥१ ॥ रहाउ ॥
हरि के नाम कबीर उजागर ॥
जनम जनम के काटे कागर ॥१ ॥
निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ॥
तउ जग जनम संकट नही आइआ ॥२ ॥
जन रविदास राम रंगि राता ॥
इउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥३ ॥५ ॥ (राग आसा)

इस शब्द को सुनकर और इसके अर्थों को जानकर बीबी भानमती जी बहुत प्रभावित हुई और गुरु जी की शिष्य बन गई। उसका चंचल चित निश्छल हो गया।

***

मुल्तान में बीबी धर्मो के बेटे को जीवित करना

प्रिय साध-संगति जी बीबी धर्मो श्री भोज और बीबी भानमती के गृह सत्संग की उपमा और जगतगुरू रविदास महाराज जी की अपार शोभा सुनकर सत्संग में पहुँच गई और गुरू जी की महिमा श्रवण की। अमृतवाणी सत्संग के कीर्तन में आंनद विभोर होने के पश्चात् बीबी धर्मो गुरू जी के प्रेम में लीन होकर भानमती से बोली कि यदि तुम्हारे गुरू अंतर्यामी है तो सुबह अमृत समय आयें, तो मैं उन्हें प्रेमसहित भोजन कराऊंगी।

भोज और बीबी भानमती बीबी धर्मो को कहते है कि यह तुम्हारे बारे में है कि तुम अपने प्रेम से गुरू जी को अपनी ओर खींच सको। धर्मो कहती है कि मैंने सत्गुरू रविदास महाराज जी जैसा परोपकारी गुरू अन्य कोई नहीं देखा, जो मेरे जीवन में नई सुबह लेकर आयेगा। मैं उन्हीं की सेविका बनूंगी और उन्हीं के पावन चरणों में सिर झुकाउंगी व प्रेम से भोजन खिलाउंगी। इतनी बात कहकर धर्मो अपने घर आ गई और कहने लगी कि मैं अपना पूर्ण जीवन गुरू जी के चरणों में सेवा निभाते व्यतीत करूंगी।

गुरू जी का स्मरण करते हुए धर्मो को नींद आ गई, तो सत्गुरू रविदास महाराज जी धर्मो के स्वपन में आकर प्रभु का पावन नाम उच्चारण करते है। धर्मो एकदम से हड़बड़ाहट से उठती है और बड़बड़ाते हुए अपनी पति का नाम लेकर कहती है कि आओ गोपाल घर आओ, भोजन तैयार है, आप आकर भोजन क्यों नहीं करते? धर्मो का पति गोपाल जाग रहा था। उसने धर्मो को आवाज़ देकर कहा कि तुम्हें सपने डरा रहे है।

गोपाल धर्मो को कहता है कि तुम नींद में मुझे आवाज़े दे रही थी और भोजन करने को कह रही थी और मुझे यह तो बताओ कि कल रात तुमने सपने में क्या देखा? धर्मो ने कहा कि मैंने आपको नहीं बुला रही थी। कल मैं भानमती के गृह में सत्संग श्रवण कर रही थी। वहां मैंने सच्चे गुरू के बारे में जाना था। मैं सपने में उन्हें पुकार रही थी, भोजन छकने के लिए पुकार रही थी। यदि तुम्हें भी जानना है तो आज तुम भी मेरे साथ चलो।

काशी शहर में मेरे गुरू समाधी लगाकर बैठे हुए है। वह मेरा भगवान् है, मेरा सत्गुरू है। मैंने उन्हें भोजन छकाने का वचन दिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे मेरे गृह में ज़रूर पधारेंगे। वहां सभी संत महापुरूशों का ध्यान प्रभु संग जुड़ा हुआ है। गोपाल कहता है कि इतनी शक्ति और सामर्थ रखने वाले गुरू के पास मेरे गृह में आकर भोजन ग्रहण करना आसान नहीं होगा।

प्रातः अमृत समय को गुरू जी मुल्तान शहर में पहुँच गए। वहां संत-महापुरुषों के रात्रि विश्राम के लिए कुटिया बनी हुई थी। वहां पानी का तालाब था और बरगद का विशाल वृक्ष लगा हुआ था। संत-महापुरुषों के ठहरने के लिए उचित प्रबंध बना हुआ था। शहर के लोग यहां ठहरने वाले संत-महापुरुषों की सेवा करते थे और दान-पुण्य करते थे। जिस वस्तु की संत-महापुरुषों को आवश्यकता होती, उन्हें पहुँचाते थे। उन साधुजनों की महिमा घर-घर में होती थी।

धर्मो जो अपने गुरू की प्रतिक्षा में बैठी हुई थी, वह सुनती है कि एक साक्षात् भगवान् रूपी साधू आया हुआ है, जो तालाब के किनारे बैठा हुआ है। धर्मो जल्दी-जल्दी उठकर भानमती के पास जाती है और कहती है कि चलो उन साधूओं के दर्शन करने चलें। भानमती कहती है कि कौन है वह साधू!

जिसकी इतनी महिमा हो रही है? वह अपनी पड़ोसनों को साथ लेकर जाती है, उनके संग गोपाल, भानमती और भोज भी संतजनों के दर्शन करने जाते है।

धर्मो कहती है कि हमारे धन्य भाग्य है, हमारे गुरू जी आये हुए है, कीर्तन हो रहा है, संगतों का कोई अंत दिखाई नहीं देता। फिर धर्मो के ग्रह में गुरू जी पधारते है। धर्मो ने अति सुंदर बिस्तर बिछाकर खूबसूरत पलंग सजाया और गुरू जी को सम्मान सहित बिठाया। धर्मो का एक पुत्र मन्ना जो बहुत आज्ञाकारी था, उसने जल्दी-जल्दी पूरे घर में सफ़ाई की और घर को सुंदर ढंग से सजाया। अचानक एक नाग ने मन्ना को डस लिया और वह चिखने-चिल्लाने लगा। गोपाल उसे देखने के लिए भागा।

गोपाल और धर्मो अपने पुत्र को इस हालत में देखकर बहुत दुःखी हुए और पुत्र के वियोग में बहुत रोने लगे। एक बार हाथ से खोया हुआ पुत्र पुनः प्राप्त नहीं हो सकता। यह सोचते हुए कि गुरू जी हमारे प्रेम से खींचे पहली बार हमारे घर आये है, हमें तन-मन से उनकी सेवा करनी चाहिए, क्योंकि गुरू जी अंतर्यामी है। हमें साहस करके इस समय को बिताना चाहिए। बेटे की जुदाई को दिल पर पत्थर रखकर सहन करना चाहिए।

गुरू जी के दर्शनों के लिए आस-पास से सभी पड़ोसनें भी धर्मो के घर आने लगीं। वे भीतर जाकर चारों ओर देखती है और मन्ना को आवाज़ देती है परन्तु मन्ना बोलता ही नहीं, सभी हैरान हो जाते है कि मन्ना को क्या हो गया, मन्ना तो अब इस दूनिया से उठ गया है।

गोपाल पुत्र की ओर देखकर रोता है और पुत्र के वियोग में धर्मो को अपशब्द बोलता है कि हमारा इस दूनिया से निशान मिट गया है। तुम नीच चमार की शरण् में गई थी, उसे घर बुलाया और हमारा क्या भला हुआ अपितु हमारा तो इकलौता पुत्र ही इस संसार से उठ गया। यदि तुम्हारा यह गुरू, जो हमारे घर सजकर बैठा है, श्रेष्ठ और पूर्ण है, तो वह मेरे पुत्र को जीवित करे और हमारा दुःख दूर करे।

धर्मो गोपाल को कहती है कि दिल में प्रभु के प्रति सच्चा प्रेम होना चाहिए और उससे ही आशा करनी चाहिए। हमारा गुरू पूर्ण है और संत-महापुरुषों का किसी से भी कोई वैर विरोध नहीं होता, इस लिए हमारा गुरू ही हमारा

भला करेगा। हमें इस विषय में कोई चिंत्ता नहीं करनी चाहिए और अपने गुरू पर पूरा विश्वास रखना चाहिए। गुरू जी की सेवा में अपना तन-मन लगा देना चाहिए।

धर्मो के घर भारी सत्संग हो रहा था और सभी सतगुरू रविदास महाराज जी के जयघोश लगा रहे है। धर्मो के घर के अंदर उसका बेटा मृत पड़ा हुआ है और बाहर सत्संग हो रहा है, प्रभु का गुणगान हो रहा है। अधिक माया भी चढ़ाई जा रही है।

धर्मो घर आये गुरू जी की सेवा में लीन है। उसके घर में एक ओर लंगर तैयार हो रहा था और दूसरी ओर मन्ना का पार्थिक शरीर पड़ा हुआ है और अधिक संगत देखकर धर्मो गुरू जी के पास जाकर कहती है कि मन्ना मुझसे रूठा हुआ है और आप तो अंतर्यामी हो, कृपया उसे आवाज़ देकर बुला लें।

गुरू महाराज जी ने लड़के का नाम पुकार कर आवाज़ लगाई तो भीतर से लड़का भागता हुआ आया, सत्गुरू जी को शी झुकाया और थाली उठाका प्रसाद बांटने लगा। लड़के ने पहले गुरू जी को प्रसाद का भोग लगाया और फिर सभी संगतों को प्रसाद बांटने लगा। मन्ना को देखकर सभी संगत गुरू जी के जयघोश लगाने लगीं और कहने लगी कि हम सभी गुरू के दरबार के भिखारी है और प्रभु हमें हर सुख देने वाला दानी है।

सत्गुरू जी का आदेश मानते हुए मन्ना संगतों की पंक्तियां बनाकर प्रसाद बांटने लगा। मन्ना के माता-पिता ने गुरू जी के चरणों में झुकाया और सभी उन्हें बधाई दे रहे थे। यह अद्भुत कौतक देखकर सभी हैरान हो रहे थे।

सभी संगतें गुरू जी के दरबार में बैठी हुई थी और 'सतिनाम सोहं जो जपै सो उतरे पार' के जयघोश गूंज रहे थे। गुरू जी संगतों को उपदेश दे रहे थे कि संसार में रहकर जीव को जादू-मंत्रों, भ्रम-आडम्बरों और नशों आदि से दूर रहना चाहिए और सभी को अपने परिश्रम से कमाई रोटी खानी चाहिए। जीव को अपने मन पर नियंत्रण करके हरि का जाप करना चाहिए और प्रभु के संग साची प्रीति करनी चाहिए।

गोपाल को गुरू जी कहते है कि तुम्हारा मन माया के जंजाल में फंसकर भ्रमित हो गया था। यह संसार माया नगरी है। केवल प्रभु संग जुड़कर ही इस

मायानगरी को पार किया जा सकता है। इस संसार में बाप-बेटा कोई नहीं है अपितु इस संसार में जीव अकेला ही आता है और अकेला ही इस संसार को छोड़कर चला जाता है।

धर्मो गुरू जी से अपना तन-मन न्यौछावर करती है और कहती है कि सत्गुरू रविदास महाराज जी स्वंय प्रभु की ज्योति है और हम पिछड़े, दलितों के दु:ख दूर करते है और हमारे जीवन की डूबी हुई नैया पार करते है। हमें हरि प्रभु की सच्ची भक्ति करनी चाहिए। वे कहते है कि यह चमार क्या कर सकता है, परन्तु यही सत्य गुरू है और हमारा उद्धार कर सकते है। गुरू जी ने गुरमुखी भाषा में अमृतवाणी लिखी। सभी अमृतवाणी पढ़कर निहाल होते है।

धर्मो और गोपाल गुरू जी के दर्शन करके अति आंनदित होते है, प्रभु के प्रेम में मगन होते है और अपने मन की सभी इच्छाओं को समाप्त कर गुरू जी के दरबार में समर्पित हो जाते है। वे संसार में नाम-दीक्षा की तलाश करते रहे और अब उन्हें सच्चा गुरू और नाम-दीक्षा मिल गई, जिसके कारण दोनों भवसागर से पार हो जाते है। बीबी भानमती धर्मो को धन्य मानते हुए कहती है कि तेरी प्रेम-भक्ति ने ही तुम्हें गुरू जी से मिलाया है और हम भी भाग्यशाली है, हमारा भी उद्धार हुआ है। तुम्हारे मृत बेटे को ज़िंदा करने के लिए ही गुरू जी आए थे और सच्चे गुरू ने तुम्हारे घर चरण् डाले है। तेरे संग ही हमें भी सत्संग श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस प्रकार जगत्गुरू रविदास महाराज जी ने इस संसार के अनेक जीवों का उद्धार किया।

* * *

बाज़ीगरों की बाजी

जब जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने मंदिर की मूर्तियों को शाही दरबार में बुलाकर वापिस कर दिया तो शिकायती पंडितों के मन में गुरु जी के लिए मानस मान बढ़ने की बजाए घृणा बढ़ गई, पर राजा नागर मल्ल पर गुरु रविदास जी की भक्ति का बहुत प्रभाव पड़ा। राजा नागर मल्ल जगत् गुरु रविदास जी महाराज का मुरीद बन गया। उसने गुरु जी के सम्मान में एक ब्रह्मभोज किया जिसमें अनेक लोगों को बुलाया गया। गुरु जी को भी परिवार सहित आंमत्रित किया गया। पंडितों ने षड़यन्त्र रचा। बाजीगरों से विचार-

विमर्श कर काफी पैसा देने का वायदा किया। बाजीगरों ने वहां खेल खेलना था और अच्छे पैसे न मिलने की स्थिति में जगत् गुरु रविदास जी महाराज की उपस्थिति में उनकी बुराई करनी थी। ब्रह्मभोज सफल रहा। बाजीगरों ने बाजी शुरु की और प्रशंसा के तौर पर सबसे पहले गुरु जी ने दस मोहरें थाल में रख दी। जगत् गुरु रविदास जी महाराज के सेवकों और श्रद्धालुओं ने मोहरों से थाल भर दिया। जितने पैसे ब्राह्मणों ने देने थे उससे कई गुणा ज्यादा पैसे बाजीगरों को मिल गए। बुराई करने की बजाए बाजीगरों ने श्री गुरु रविदास जी की प्रशंसा और महिमा करनी शुरु कर दी। जहां भी वह बाजी डालते जगत् गुरु रविदास जी महाराज की प्रशंसा करते। गुरुजी की प्रशंसा ने बाजीगरों को धनी कर दिया।

***

गोष्ठी संत गोरख नाथ जी

जब संत गोरख नाथ जी ने जगत् गुरु रविदास जी महाराज की उपमा सुनी कि वह एक चमार होकर प्रभु की भक्ति करते हैं और प्रभु की उन पर अपार कृपा है। तब संत गोरख नाथ जी ने अपने मन में ही विचार किया कि ऐसा चमार कौन है? उसको देखना चाहिए और उसके आचार, विचार और कर्म को समझना चाहिए।

संत गोरख नाथ जी ने बनारस आकर लोगों से पूछा कि गुरू रविदास कौन है? और किस स्थान पर रहता है? लोगों ने गोरख नाथ जी को बताया कि वह जो झोंपड़ी है, वह वहीं रहते है। जब गोरख नाथ जी ने गुरु जी के द्वार पर आकर अल्ख जगाई तो गुरु जी ने उनको अंदर बुलाकर बैठने के लिए आसन दिया और कहा कि आप जी ने बड़ी कृपा की जो दर्शन दिए। बैठिए और सेवा बताइए। तब गोरख नाथ जी ने कहा कि मेरा जोड़ा टूट गया है। मैंने आपकी बड़ी उपमा सुनी है कि आप परमेश्वर के स्वरूप हैं, इस लिए मैं आपके दर्शन करने आया हूँ।

जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने कहा कि आप जैसे संतों के दर्शन ईश्वर के दर्शन के समान हैं। जैसे परमात्मा के दर्शन करने से चौरासी लाख योनियों से छुटकारा मिलता है वैसे ही आप संतों के चरण अठसठ तीर्थों से भी

ज्यादा फल देने वाले हैं। संतों के चरणों में शीश झुकाने से पापों का नाश होता है। संतों के वचन तीन तापों का नाश करते हैं। संतों के चरणों में अज्ञानता दूर होती है और ज्ञान का प्रकाश होता है और चारों पदार्थ- काम, अर्थ, धर्म और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इस तरह गुरु जी ने संतों की महिमा की। गोरख नाथ जी ने गुरु जी की बातें सुनकर गुरु जी से कहा कि चमार जाति तो मलीन है और आप बड़े प्रवीण संत हो, आप पर परमात्मा की बड़ी कृपा है पर मैं एक बात कहता हूं कि आप टूटे हुए जोड़े क्यों गांठते हो? यह काम तो मलीन है, आप आजीविका के लिए ऐसा कर्म न करें। मैं आपको उपजीविका के लिए कुछ देता हूं। गोरख नाथ जी ने एक जड़ी-बूटी निकाली और गुरु जी से कहा कि यह बहुत मूल्यवान है। इसके भेद को जान लो, अगर इस को गर्म करकर किसी धातु से स्पर्श करोगे वह सोना बन जाएगी। इसे किसी को दिखाना मत और झोंपड़ी की जगह एक सुंदर मंदिर बना लेना। अपने पुराने कपड़े उतार कर नए पहन लेना। अब मैं चलता हूँ, मेरा जोड़ा गाँठ दो। श्री गुरु रविदास जी ने कहा हे नाथ जी! मैंने तो टूटे हुए गांठने के लिए ही जन्म लिया है मेरा कार्य तो जो भी प्राणी प्रभु से टूटा हुआ है उसके मन को शुद्ध कर उसे प्रभु से गांठना है (जोड़ना है)। कुचम्म जो है, उसमें कठोरता लोभ और क्रोध की है इसको सील संतोष की रंबी से सुरूप देकर शुद्ध कर परमेश्वर से जोड़ना है। ऐसा उपदेश देकर सभी प्राणियों को जन्म-मरण रूप भवसागर से पार करना है अर्थात परमेश्वर से मिलाना है। गुरु रविदास जी फरमान करते हैं कि हे नाथ जी! परमात्मा से जोड़ना और गांठना एक ही बात है, इस लिए मेरा और आपका विचार एक है। ऐसे वचनों का उच्चारण करते हुए गुरु जी ने टाकी काट कर जोड़े पर लगाने के लिए तैयार की और धागे को लगाने के लिए मुँह में डाला और जैसे ही धागे का मुंह से स्पर्श हुआ वह धागा सोने का बन गया। गुरु जी उस टूटे हुए जोड़े को सोने के धागे से जोड़ने (गांठने) लगे। गोरख नाथ जी यह चमत्कार देखकर बहुत हैरान हुए। गोरख नाथ जी ने सोचा कि अगर मैं इसको कोई सिद्धि दिखाऊँगा तो यह मेरी शक्ति को देखकर मेरा शिष्य बन जाएगा। गोरख नाथ जी के पास एक छोटी सी तूंबी थी। गोरख नाथ

जी ने कहा हे गुरू रविदास जी! मेरी तूंबी में देखो कितना जल है, जो भी देखोगे सच कहना। जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने ध्यान लगाकर देखा तो उस तूंबी में हीरे, रत्न, जवाहरात, मणियां और सोने का सुमेर पर्वत दिखाई दिया। यह देखकर गुरु जी ने कहा कि आप धन्य हो, मैं आप पर कुर्बान जाता हूँ, आप महान् सिद्ध हो। फिर गुरु रविदास जी ने गोरख नाथ जी से कहा कि अब आप इस कुठाली में ध्यान लगाकर देखो। जब गोरख नाथ जी ने देखा तो उस कुठाली के पानी में विराट रूप दिखाई दिया, जड़, चेतन, अस्थावर, जंगम, जीव-पाँच तत्व (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथवी) खण्ड ब्राह्मण्ड दिखाई दिए। यह सारा चमत्कार देखकर गोरख नाथ जी अचक्भित रह गए और उनका अहंकार टूट गया। वह गुरु जी के चरणों में गिर पड़े और कहने लगे कि आप तो धन्य हो, आप की महिमा अनन्त है जिसका कोई अन्त नहीं। तब श्री गुरु रविदास जी ने कहा कि हे नाथ! यह रिद्धियाँ और सिद्धियां प्रभु के नाम के आगे कुछ भी नहीं है। परमात्मा का नाम तो सुखों का सागर है, जिसमें सुर्तर कल्प वृक्ष, चिंता मणि, कामधेनु गाय, चार पदार्थ, अठारह सिद्धियां और नौ रिद्धियाँ हैं। जो भी जीव उस प्रभु से एक रूप हो जाता है यह सब उसकी हथेली पर आ जाता है। ऐसा सत्य उपदेश जगत् गुरु रविदास जी महाराज ने गोरख नाथ जी को दिया।

***

जगत् गुरु रविदास जी महाराज की सदना से भेंट तथा गुरु जी को सिकन्दर लोधी द्वारा जेल में बन्द करना

सदना पीर मुसलमान था। वह जीवों का वध कर उनको बेचता था। जगत् गुरु रविदास जी महाराज संगत् को जीव हत्या के विरोध में उपदेश देते थे। सदना जी को गुरु जी द्वारा ऐसा उपदेश देना अच्छा न लगा। एक दिन सदना जी गुरु जी के पास गए और कहा कि सभी धर्म एक ही परमात्मा की देन है इस लिए आप मुसलमान धर्म ग्रहण कर लो क्योंकि हमारे धर्म में जाति-पाति नहीं है। हमारा धर्म पाक धर्म है। आप इसे अपना कर लाभ में रहोगे। गुरु जी ने सदना जी को उपदेश देते हुए कहा:

रविदास जीव कूं मारि कर कैसो मिलंहि खुदाय।

पीर पैगंबर औलिया कोउ न कहइ समुझाय ॥

गुरु जी ने फिर कहा कि मनुष्य की जाति-धर्म के अभिमान को त्याग कर परमात्मा के नाम का सिमिरन करना चाहिए ताकि मनुष्य जीवन सफल हो सके। मैं और मेरी की भावना का त्याग करना चाहिए। ऐसा उपदेश सुनकर सदना जी गुरु जी के शिष्य बन गए। सदना जी ने सिकन्दर लोधी के दरबार में जाकर गुरु जी की प्रशंसा की तथा कहा कि मैंने गुरू रविदास जी को गुरु धारण कर लिया है। ऐसा करने पर सिकन्दर लोधी बहुत क्रोधित हुआ। बादशाह सिकन्दर लोधी गुरु रविदास जी को दरबार में पेश होने के लिए सदना को चिट्ठी दे दी। सदना जी चिट्ठी लेकर गुरु जी के पास पहुँच गए और राजा का सन्देश दिया। सिकन्दर लोधी एक अत्याचारी राजा था। गुरु जी जब सिकन्दर लोधी के दरबार में उपस्थित हुए तब सिकन्दर लोधी ने कहा कि आप इस्लाम धर्म ग्रहण कर लो, परन्तु गुरु जी ने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया। सिकन्दर लोधी ने गुरु जी को कैद कर लिया। गुरु जी जेल में प्रभु भक्ति में लीन हो गए। जब सिकन्दर लोधी जेल में आया तो गुरू रविदास के रूप में तेज प्रकाश दिखाई दिया। बादशाह यह देखकर बहुत हैरान हुआ। गुरु जी उस समय प्रभु भक्ति में लीन थे। बादशाह ने गुरु जी से अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी और आगे के लिए यह प्रतिज्ञा की कि वह आगे से कभी भी किसी प्राणी को नहीं सताएगा।

यहां राजा सिकंदर लोधी की स्वै-जीवनी में वर्णनयोग है कि 9 अप्रैल 1509 में राजा सिकंदर लोधी जी गुरू जी के पास आए थे।

सिकंदर लोधी के पास अनमोल कोहेनूर का हीरा था। उसने कोहेनूर का हीरा गुरु जी को भेंट करना चाहा। उसने सोचा कि जगत् गुरु रविदास महाराज जी मेरी यह भेटा ज़रूर स्वीकार कर लेंगे लेकिन गुरु जी ने इस हीरे को लेने से इन्कार कर दिया और कहा हम 'हरि सो हीरे' के उपासक हैं। गुरु जी ने उसको फरमाया :

हरि सो हीरा छाडि के करहि आन की आस।
ते नर दोजखि जहिंगै सति भाखै रविदास।।

***

बाबर पर जगत् गुरु रविदास जी महाराज की शिक्षाओं का प्रभाव

बाबर एक कट्टड़, सुन्नी मुस्लमान था। वह काफिरों का नाश करना, मूर्ति पूजा को खत्म करना और तलवार की ताकत से, इस्लाम का प्रचार करना, अपना धार्मिक कर्त्तव्य समझता था। वह इस्लाम जगत् में अपना नाम चमकाना चाहता था। बाबर ने सर्वप्रथम 1519 ई० में, भारत पर, आक्रमण किया। दूसरी बार फिर 1519 ई० में ही, उसने पुनः भारत पर, आक्रमण किया। तीसरी बार 1520 ई० में और चौथा आक्रमण 1524 ई० में किया।

बाबर का पाँचवा आक्रमण 1525 ई० के अंत में हुआ। उसने पंजाब के नवाब दौलत खां लोधी को करारी हार दी। परिणामस्वरूप, उसने सारा पंजाब अपने अधीन कर लिया। पंजाब में किए गए कत्लेआम का वर्णन, श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित "बाबर वाणी" में स्पष्ट रूप से मिलता है। पंजाब में रहकर ही उसने दिल्ली पर आक्रमण करने का निर्णय किया और इब्राहिम लोधी के साथ दो हाथ करने के लिए चल पड़ा। यह लड़ाई 1526 ई., पानीपत के युद्ध के नाम से, भारतीय इतिहास में ही नहीं, बल्कि विश्व के इतिहास में अंकित है। इस युद्ध की तुलना, बिजली की चमक के साथ की जाती है। जिस प्रकार आकाश में बिजली चमक पैदा करती है और अचानक लुप्त हो जाती है, बिल्कुल उसी प्रकार यह युद्ध भी कुछ ही घंटों में, समाप्त हो गया। परन्तु इस युद्ध के परिणाम बहुत निर्णायक थे। परिणामतः दिल्ली सल्तनत और सुल्तान का अंत हो गया। बाबर दिल्ली का शासक बन गया।

1526 ई. पानीपत के युद्ध में इब्राहिम लोधी पराजित हुआ। इस विजय के संबंध में बाबर ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि सर्वशक्तिमान् परमात्मा की कृपा व दया से, दिल्ली की शक्तिशाली सेनायें, आधे दिन में ही धूल में मिल गईं।

अब बाबर, पंजाब और दिल्ली का शासक बन चुका था परन्तु अभी संपूर्ण भारत पर उसका नियंत्रण नहीं हुआ था। भारत में उसके मार्ग में, सबसे बड़ी रूकावट मेवाड़ का राजा राणा सांगा था। वह प्रसिद्ध राजा कुंभा के वंश

में से था। राजा सांगा अपनी वीरता के कारण, एक विश्व प्रसिद्ध शासक था। उसके शरीर पर, युद्धों के कारण 80 जख्मों के निशान थे। जिसमें वह अपनी एक आँख और एक टांग, युद्धों में गंवा चुका था। उसने दो बार इब्राहिम लोधी, को भी परास्त किया था। इस बात को सभी शासक भली भांति जानते थे कि यदि कोई भारत को विजय करने का यत्न करेगा, तो उसे पहले, मेवाड़ के इस शक्तिशाली युद्ध प्रेमी राजा के साथ टक्कर लेनी पड़ेगी।

15 मार्च 1527 ई० की सुबह, ठीक 9 बजे, मुगल और राजपूत सेनायें, आपस में भिड़ गईं। इस युद्ध में, बाबर की विजय निश्चत् थी क्योंकि उसकी सेना के पीछे उस्ताद अली खां का तोपखाना था। हुमायूं और मेंहदी ख्वाज़ा जैसे माहिर सेनापति उसके बाईं ओर थे। दाईं ओर सेना की विशाल टुकड़ियां खड़ी थीं। युद्ध का आरंभ, राजपूतों ने किया। उन्होंने बाबर के बाईं ओर आक्रमण किया। कुछ समय के लिए ऐसा लगा कि राणा सांगा की विजय होगी, परन्तु उह्यताद अली खां के तोपखाने के लगातार बरसते गोलों ने, उसकी सेना में हफड़ा-दफड़ी मचा दी। गोलों से बचने के लिए राणा सांगा की सेना चारों ओर दौड़ गई। राणा सांगा युद्ध क्षेत्र में बुरी तरह ज़ख्मी हो गया और वहाँ से भाग निकला। इस प्रकार बाबर विजयी रहा। युद्धों के दौरान ही, बाबर को भारत के जलवायु और यहाँ की उर्वर भूमि, धन-दौलत के साथ भरे भण्डारों के साथ-साथ, यहाँ के पीर-पैगम्बरों के बारे में भी जानकारी मिलती रही, फिर वह जगत् गुरु रविदास जी महाराज जैसे अवतारी व्यक्तित्व से अपरिचित कैसे रह सकता था। जगत् गुरु रविदास जी उस समय, अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर थे। चाहे बाबर पंजाब, दिल्ली, मेवाड़ आदि महाशक्तिशाली शासन को विजय कर चुका था, परन्तु अपनी सफलताओं का श्रेय स्वयं लेने के स्थान पर, उसने सदैव इन्हें ईश्वरीय देन कहा। बाबर का कथन था कि अल्लाह की इच्छा के बिना, कुछ नहीं होता। हमें उसका आश्रय लेकर, आगे बढ़ना चाहिए। बाबर ईश्वरीय नूर गुरु रविदास जी, जैसे महान् संतपुरुष के दर्शन किए बिना रह न सका। जब उसे पता चला कि जगत् गुरु रदिवास जी, बहुत वृद्ध हो चुके हैं, तो वह हुमायूं को साथ लेकर, जगत् गुरु रविदास जी के पास, उनके दर्शनों के लिए पहुँचा। तब गुरु जी अपने सिंघासन

पर बिराजित थे। उन्होंने बाबर को देखकर, उस द्वारा किए गए निर्दोषों के खून-खराबे के लिए उसे डांटा और समझाया:

बाबर हुआ बावरा, मन में अधिक गुमान।
करोड़ों प्राणी मार कर, तूने कीया पाप महान्।। (गुरु रविदास जी)

धीरे-धीरे जब बाबर को, जगत् गुरु रविदास जी की शिक्षओं एवं समाज पर किए गए, परोपकारों के बारे में ज्ञान होता गया, तो उसने अकारण खून-खराबा करना बंद कर दिया। यहाँ तक कि सब बाबर के स्वभाव की दयालुता से दंग रह गए। उसने अपनी उदारता के कारण ही, दिल्ली व आगरा का शाही खज़ाना, लोगों में बाँट दिया। उसकी इतनी उदारता देखकर, लोग बाबर को, प्यार से कलंदर अथवा मस्त फकीर कहकर बुलाते थे। वर्णनीय है कि मीरा द्वारा गुरु रदिवास जी की शिक्षओं का प्रभाव अकबर पर पड़ा था। संभव है कि जगत् गुरु रविदास जी का कोई परम शिष्य, बाबर को भी गुरु रविदास जी की शिक्षाओं से अवगत करवाता रहा हो। बाबर का साम्राज्य काबुल से लेकर बिहार तक और हिमालय से लेकर ग्वालियर एवं चंदेरी तक फैला हुआ था।

***

जगत् गुरु रविदास जी महाराज का सच्च खण्ड पधारना

सतगुरु कबीर जी, सतगुरु नामदेव जी, सतगुरु त्रिलोचन जी तथा सतगुरु धन्ना जी इन सब महापुरुषों को पारमब्रह्म अकालपुरुष जी की आज्ञा हुई तथा आदेश दिया कि सब सतगुरु रविदास जी के पास जाओ। उनको कहो कि आपके जगत में आने का उदेश्य सम्पूर्ण हुआ तथा आपके लिए पारमब्रह्म ने सच्चखण्ड से बुलावा भेजा है। सब महापुरुषों को बुलाकर कहा कि इक्कीस दिन का समय बाकी है। ततपश्चात गुरु रविदास जी को यहां ले आएं। ये सब महापुरुष गुरु रविदास जी महाराज के पास पहुँच गये और श्री गुरु रविदास जी को सन्देश दिया कि हम आपको लेने आये हैं और इक्कीस दिन का समय दिया है। इस से पहले ही सतगुरु रविदास जी को खबर हो गई थी कि सतगुरु कबीर जी, सतगुरु त्रिलोचन जी, सतगुरु नामदेव जी, सतगुरु सधना जी, सतगुरु धन्ना जी, मेरे घर आ रहे हैं तो अति प्रसन्न हुये। लीप-पोत कर

धर्मशाला में साफ सुथरी सेजें लगाकर सावधान होकर खड़े हो गये तथा कहा कि मैं आपका दास हूँ, आप मेरे घर आये मैं आपके दर्शन करके अ ति प्रसन्न हूँ उन सन्तों से ऐसे मिले जैसे हरि प्रभु मिल गये हों। चरण वन्दना करके कहते हैं कि त्राहि-त्राहि कर मैं आप की शरण में आया हूँ। मैं बार बार बलिहार जाता हूँ। आप के दर्शन से मेरी दुर्मति दूर हुई और अब मेरी परम गति हुई है। साधुओं का मिलना ऐसे होता है जैसे दीन होकर मिलता है। सन्तों का मिलना ऐसे होता है जैसे एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हों ऐसे मिलते हैं- वह उसको परमेश्वर समझे दूसरा उसको ठाकुर समझे। दोनों पक्षों में ऐसी विनम्रता होती है जिस से परमेश्वर खुश होता है। जो अपने अन्दर बड़प्पन को रखकर दूसरों को दिखाता है वह अपने गुण और सेवा समाप्त कर देता है। परन्तु प्रभु के सेवक वही होते हैं जिन की वृति शुद्ध हो। दूसरी ओर जो अहंकार पूर्वक अपने आप को ऐसे जानता है कि मेरे समान का और कोई साधू नहीं है, वह अपनी भक्ति रूपी कमाई को खो देता है। जैसे रेशम जल कर भस्म हो जाती है ऐसे ही गुणों से भरा हुआ शरीर भी जलकर भक्तिहीन हो जाता है। साधू को साधू नम्रता सहित ऐसे मिलता है जिस प्रकार अपने नाती सम्बन्धी को ही मिलता है। उनमें नम्रता का भाव ऐसा होता है जैसे गरीब के घर में होता है। ऐसा साधू का मिलना समझे। भक्त बनना सहज है, साधू होना कठिन है। साधू भाव को वही प्राप्त करता है जो गरीबों में मिलता है। यही बात विचार कर उपरोयक्त महापुरुष श्री गुरु रविदास जी को रिझाने आये कि गुरू रविदास जी को परमात्मा का वर्णन करेंगे, जिस से गुरू रविदास जी खुश होंगे। तो उन्होंने परमात्मा के महल के प्रति बताया तो गुरु रविदास अति निहाल हुये। जब जगत् गुरु रविदास जी के पास गये तो उनको परमात्मा का वही स्वरुप वहां नजर आया जो उन्होंने सच्च खंड मे प्रभु का देखा था। तो कहने लगे कि इसी परमात्मा को हम बैकुण्ठ में देख कर आये हैं। यह गुरू रविदास जी के यहां ही है। सम्भवत: गुरू रविदास इनको वहीं से लाये हैं। तो श्री गुरु रविदास जी ने सेज लगा दी। सन्तों ने समझा कि गुरू रविदास जी का तो बैकुण्ठ में ही निवास है। उपरोयक्त सन्त हैरान होकर कहते हैं कि बैकुण्ठ यहीं है। यहीं भगवान है। तब उन्होंने परमब्रह्म की आज्ञा के बारे में बताया कि

इक्कीसवें दिन पहुँचना है। इस सन्देश को पाकर रविदास जी ने अपने सेवकों को बता दिया कि हम बैकुण्ठ को जा रहे हैं। तथा उनको हरि जपने का सन्देश दिया। अकाल पुरुष की आज्ञा गुरू रविदास जी को बताकर कबीर जी, नामदेव जी, सभी सन्त विदा हुये। तब रविदास जी ने अपने सम्बन्धी तथा सेवकों को सच्चखण्ड को जाने का बुलावा बता दिया तथा संगत् को उपदेश देते रहे। सब सेवक उनके चरण स्पर्श करके आर्शीवाद लेकर विदा होते रहे। जब इक्कीसवां दिन आया, प्रभात समय में तैयार होकर प्रभु ध्यान लगाया। अनहद शब्द बजंत्र बजाते हुये गुरू रविदास जी ब्रह्म में समा गये। तब विश्व नाथ सुखासन पर विराजमान विमान लेकर गुरु रविदास को साथ लेकर गये। सावधान होकर जब ठाकुर वहां आये तो गुरू रविदास जी को सुखासन पर बैठा कर सच्चखण्ड बैकुण्ठ में सिधार गये। निर्गुण ब्रह्म में लीन होकर ब्रह्म में समा गये। सभी संगत् जगत्गुरु रविदास जी को प्रेम-सहित याद कर रही थी और सबी तरफ गुरु रविदास जी की जै-जै कार हो रही थी। इस प्रकार जगत् गुरु रविदास जी महाराज बनारस में आसाढ़ की सक्रांति 1584 विक्रमी सम्मत् सन् 1528 को सनदेही (देह सहित) सचखण्ड को पधारें।

***

श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी की तरफ से लिखित और अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग धार्मिक संस्थाओं की तरफ से प्रकाशित पुस्तकें :

हिन्दी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें

* जगतगुरू रविदास अमृतबाणी (स्टीक तथा संक्षिप्त जीवन हिन्दी और मराठी)
* नितनेम अमृतबाणी जगतगुरू रविदास जी (स्टीक)
* जगतगुरू रविदास महाराज जी का संक्षिप्त जीवन
* जगतगुरू रविदास महाराज जी की कथाएं (हिन्दी और मराठी में)
* अमृतबाणी जगतगुरू रविदास महाराज जी (स्टीक)

* * *

Books Published in English

* Amritbani Jagatguru Ravidass Maharaj Ji (Steek)
* Amritbani Jagatguru Ravidass Maharaj Ji 40 Pade (Steek)

Books Published in Dutch

* Amritbani Jagatguru Ravidass Maharaj Ji (Steek)

* * *

पंजाबी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें

* अमृतबाणी सतिगुरू रविदास महाराज जी (40 शब्द स्टीक) भाग-1
* अमृतबाणी सतिगुरू रविदास महाराज जी (सम्पूर्ण स्टीक) भाग-2
* श्री गुरू रविदास अमृतबाणी (स्टीक और संक्षेप जीवन)
* नितनेम अमृतबाणी जगतगुरू रविदास जी (स्टीक)
* सुखसागर स्टीक
* जगतगुरू रविदास महाराज जी का संक्षेप जीवन
* धरती उत्ते रब सतिगुरू सरवण दास जी (जीवन साखी)
* गुरू रविदास मिले मोहि पूरे (संत मीरां बाई जी)

अर्न्तराष्ट्रीय जगतगुरू रविदास साहित्य संस्था (रजि.) की ओर से प्रकाशित पुस्तक

* चमार जाति इतिहास धर्म पर सभ्याचार : राजेश कैंथ भबियाणवी

रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर की ओर से प्रकाशित पुस्त्कें

* रविदासीया धर्म का अनमोल हीरा श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी: कांशी राम कलेर
* रविदासीया कौम के अमर शहीद संत रामानंद जी : कांशी राम कलेर जंडूसिंघा

* * *

धन्यवाद सहित प्रकाशित पुस्तकें

* The Chamars	– G.W. Brigs
* श्री गुरु रविदास प्रकाश	– संत जसवंत सिंह जी
* साखी श्री गुरु रविदास मिसन	– बाबू मंगूराम बाहड़ोवाल
* श्री गुरु रविदास (जीवन और किरतां)	– डा. लेख राज 'परवाना'
* बाणी गुरु रविदास	– डा. रतन सिंह जग्गी
* गुरुयां दे गुरु श्री गुरु रविदास जी	– श्री रतन रीहल
* पावन गाथा श्री गुरु रविदास जी	– डा. जसबीर सिंह साबर
* भगत रविदास	– डा. जसबीर सिंह साबर
* गुरु रविदास दर्पण	– डा. धरम पाल सिंगल
* गुरु रविदास	– अचार्य पृथवी सिंह आज़ाद
* कथा गुसाई रविदास जी की समाने की	– श्रीमती ऊषा खन्ना
* सगल भवन के नायका	– डा. कृष्ना कलसीया
* गुरु रविदास परची	– डा. बलदेव सिंह 'बद्दन'
* गुरु रविदास जीवन के शलोक	– श्री मदन जलंधरी
* सगल भवन के नायका श्री गुरु रविदास जी	– श्री राम अरश
* जन्म साखी – गुरु रविदास जी	– कवि तोता राम
* जगत् गुरु संत रविदास	– 'मतवाला' शहज़ादपुरी
* श्री गुरु रविदास अमृतवाणी और पवित्र–अनमोल रूहानी रचनाएँ	– संत बीबी कृष्णा जी
* बारां पूरबणां	– ज्ञानी ज्ञान सिंह

* * *

Email: ravidassiadharam@gmail.com

Website: www.ravidassiadharam.org

facebook : ravidassiadharamparcharasthan

Youtube : Ravidassia Dharam Parchar Asthan, Kahanpur Jalandhar

सबकै अचरज भया तमासा॥ जिते विप्र तिते रविदासा॥

जगतगुरू रविदास जी महाराज बैसाखी के ऐतिहासिक
पर्व पर गंगा घाट पर शिला तैराते हुए।

जगतगुरू रविदास महाराज जी

सतिगुरू सरवण दास महाराज जी

30 जनवरी 2010 को श्री गुरू रविदास जन्म अस्थान मंदिर सीर गोवर्धनपुर वारानसी में जगतगुरू रविदास महाराज जी, सतिगुरू सरवण दास जी और संत समाज की कृपा से 'रविदासीया धर्म' का ऐलान करते हुऐ श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी

Ravidassia Dharam Parchar Asthan

Sant Surinder Dass Bawa Ji

Vill. Kahanpur, P.O. Raipur Rasulpur
Distt. Jalandhar
e-mail : ravidassiadharam@gmail.com
Website : www.ravidassiadharam.org
Facebook : ravidassiadharamparcharasthan
Youtube : Ravidassia Dharam Parchar Asthan, Kahanpur Jalandhar